राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

ऑक्टोबर - 2023

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

महिला आरक्षण बिल 2023

राष्ट्रपति की मंजूरी, बना कानून

भारत-कनाडा के खराब रिश्ते

कनाडा का सियासी एंगल ?

नवरात्रि का शुभारंभ

माँ आदिशक्ति के नौ रूपों को समर्पित

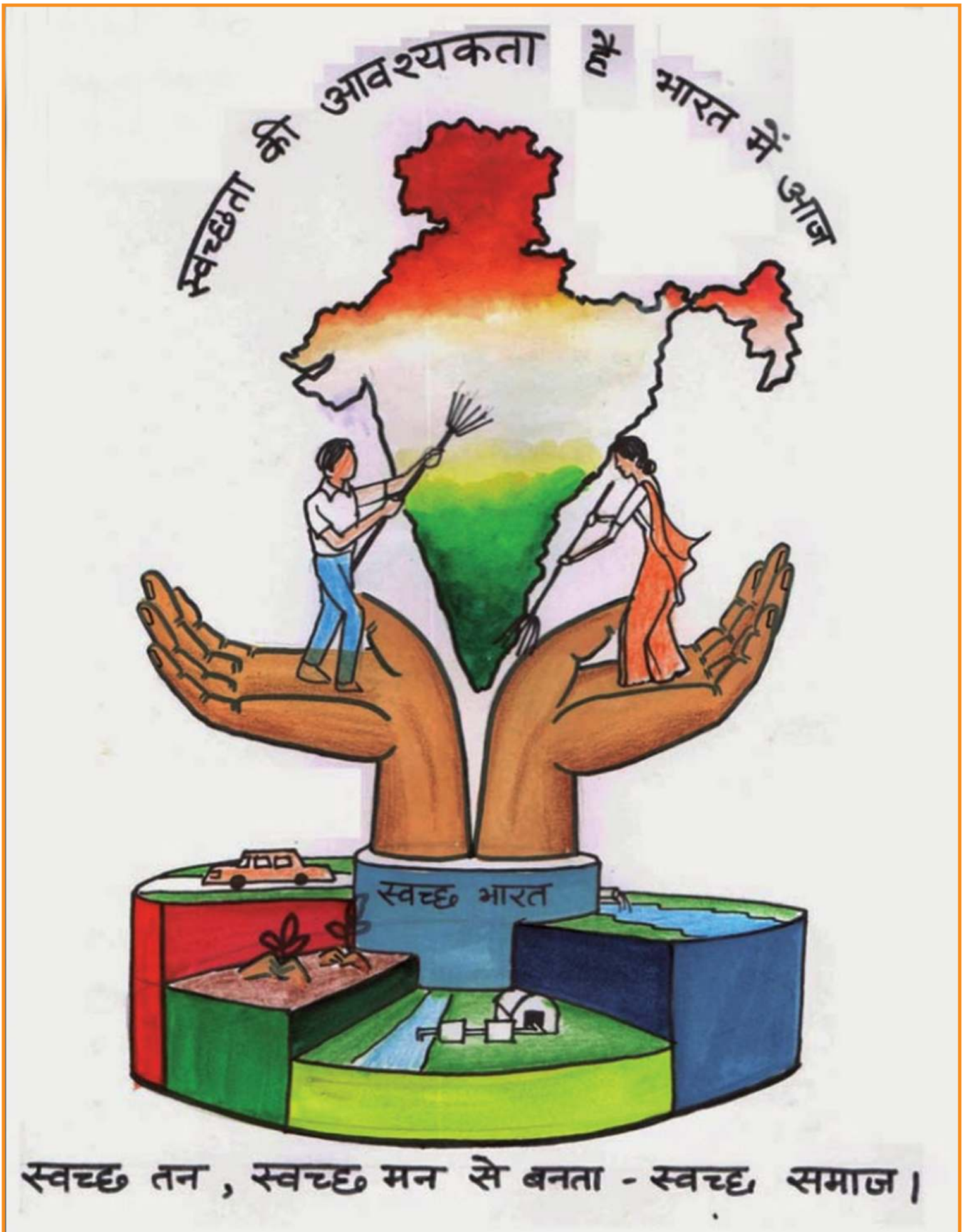
स्वच्छता की आवश्यकता है भारत में आज
स्वच्छ भारत
स्वच्छ तन , स्वच्छ मन से बनता - स्वच्छ समाज।

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

•वर्ष : 8 •अंक: 07 •मुंबई •ऑक्टोबर-2023

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक

नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक

मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक

भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला,
संतोष मिश्रा, जेदवी आनंद

ब्यूरो चीफ

ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा

ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट

राजेश अय्यर,शैफाली,

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in, mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimmumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

ऐतिहासिक महिला आरक्षण बिल २०२३ पास...	05
शारदीय नवरात्रि २०२३ का शुभारंभ...	10
भारत और कनाडा के रिश्ते	16
पकवान	20
सड़कों से कमाई के लिए सरकार ने बनाया २ लाख करोड़ का प्लान!	22
सैलानियों से परेशान हो गया है यूरोप	24
कृष्ण जन्मभूमि में जन्माष्टमी पर दिखेगी चन्द्रयान की	26
दिल्ली आबकारी नीति में अब आप सांसद संजय सिंह गिरफ्तार	27
सिनेमा	28
कीट-कीस-कीम्स में तो ५० प्रतिशत महिला आरक्षण अभिनंदन ...	30
ओडिशा हलचल.	32
मूल से ब्याज मीठा	40
अपना घर (कथा सागर)	44
कारीगरी	47
फ्रेंचबीन की खेती...	56

सुविचारः

मनुष्य के सभी कार्य इन सातों में से किसी एक या अधिक वजहों से होते हैंः मौका, प्रकृति, मजबूरी, आदत, कारण, जुनून, इच्छा.

संपादकीय

ट्रूडो के आरोपों की हकीकत

संयुक्त राष्ट्र महासभा के ७८वें सत्र में शामिल होने गये विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने इस दौरे में जहां राजनय की गरिमा को बनाये रखा, वहीं मौका मिलने पर प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कनाडा की भारत विरोधी नीति को बेनकाब करने का सार्थक प्रयास किया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने संबोधन में कनाडा का नाम न लेकर निज्जर प्रकरण से उपजे विवाद में परोक्ष रूप से अपनी बात कही। ल`किन न्यूयार्क में भारत में अमेरिकी राजदूत रहे केनेथ जस्टर के संचालन में आयोजित कार्यक्रम में एस. जयशंकर ने वैश्विक जगत को कनाडा के आरोपों के बाबत बताया कि ऐसा काम करना हमारी सरकार की नीति नहीं है। साथ ही साफ कह दिया कि कनाडा अलगाववादियों के लिये उर्वरा भूमि बना हुआ है। उन्होंने बताया कि हमने कनाडा से स्पष्ट कहा कि अगर आपके पास अपने आरोपों से जुड़ी कोई खास जानकारी है तो हमें उपलब्ध कराएं। इस अवसर का उपयोग करते हुए जयशंकर ने जस्टिन ट्रूडो के मंसूबों को बेनकाब करते हुए कहा कि कनाडा में पृथकतावादी तत्वों से जुड़े संगठित अपराधों के तमाम मामले प्रकाश में आए हैं। जिन पर कई बार कार्रवाई के बाबत कनाडा सरकार को कहा गया है। इस बात के पुख्ता प्रमाण उपलब्ध कराये गये थे कि कनाडा की धरती से तमाम संगठित अपराध संचालित किये जा रहे हैं।

जाहिर तौर पर जयशंकर ने दुनिया को यह अहसास कराने का प्रयास किया कि कनाडा सरकार की नाक के नीचे सुनियोजित ढंग से अलगाववादी कार्रवाइयां चल रही हैं। ऐसे तत्वों के हौसले इतने बुलंद हैं कि उन्होंने भारतीय वाणिज्य दूतावास पर हमला तक किया है। इतना ही नहीं भारतीय राजनयिकों को धमकियां दी गईं। विदेश मंत्री ने कनाडा के प्रधानमंत्री के बयानों के आलोक में कहा कि लोकतंत्र की दुहाई देकर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप किया जा रहा है। सही मायनों में भारत-कनाडा के रिश्तों में आई कड़वाहट की हकीकत बताने में एस.जयशंकर सफल रहे।

वहीं, यूएन सम्मेलन में भी विदेश मंत्री ने कहा कि वे दिन चले गये हैं जब दुनिया के कुछ बड़े राष्ट्र अपनी सुविधा के लिये एजेंडा तय करते थे और फिर शेष दुनिया को उस पर चलने के लिये बाध्य करते थे। दरअसल, ट्रूडो के आरोपों के बाद कनाडा भी अलग-थलग पड़ता नजर आ रहा है। दरअसल, दुनिया की दूसरी बड़ी शक्तियों को भी उभरते भारत के महत्व का अहसास है। जैसे कनाडा अमेरिका का निकट का सहयोगी है, उस हिसाब से अमेरिका भी उसके आरोपों के समर्थन में खुलकर सामने नहीं आया। दरअसल, जिस खुफिया साझेदारी के संगठन फाइव आइज की सूचना को ट्रूडो आधार बना रहे थे, उस इंटेलिजेंस अलायंस के सहयोगी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन व न्यूजीलैंड का मुखर समर्थन कनाडा को नहीं मिल पाया। यह भारत की मौजूदा वैश्विक छवि के चलते ही हुआ। यह भी कहा जाता रहा है कि अमेरिका की खुफिया एजेंसी एफबीआई ने भी इस बाबत जानकारी साझा की थी। बहुत संभव था कि यदि जानकारी पुख्ता होती तो अमेरिका के तेवर तीखे होते।

इस बाबत पूछे जाने पर एस.जयशंकर ने दो-टूक जवाब दिया कि हम न फाइव आइज का हिस्सा हैं और न ही एफबीआई का, जो इस बाबत जवाब दे सकें। विदेश मंत्री ने कहा कि निज्जर प्रकरण में कनाडा की तरफ से कोई तथ्य उपलब्ध नहीं कराए गये हैं। दरअसल, इससे पहले राजनयिक क्षेत्रों में कहा जा रहा था कि विदेश मंत्री को संयुक्त राष्ट्र महासभा के मंच से कनाडा को संदेश देना चाहिए था। लेकिन हकीकत यह है कि तीसरे विश्व का नेतृत्व करने वाला भारत हमेशा से ही इस मंच का उपयोग वैश्विक मुद्दों को उठाने के लिये करता रहा है। जयशंकर ने महासभा के जरिये साफ कह दिया कि दुनिया की बड़ी राजनीतिक ताकतें हिंसा, उग्रवाद व आतंकवाद पर प्रतिक्रिया अपनी राजनीतिक सुविधा से तय करती हैं। वैश्विक मंच से विदेश मंत्री ने हाल की भारत की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि नई दिल्ली के जी-२० सम्मेलन से हासिल की गूंज आने वाले दशकों में सुनाई देगी। हम विश्व मित्र के रूप में उभरे हैं। ■

'नारी शक्ति वंदन विधेयक'
ऐतिहासिक महिला आरक्षण बिल २०२३ पास...

१. महिला आरक्षण बिल को राष्ट्रपति की मंजूरी,
२. बना कानून
३. महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी एक तिहाई सीटें

लोकसभा ने बुधवार को दिन भर चली चर्चा के बाद महिला आरक्षण से जुड़े संविधान (१२८ वां संशोधन) विधेयक- २०२३ को पारित कर दिया. लोकसभा और देश की विधानसभाओं में महिलाओं को ३३ प्रतिशत आरक्षण देने वाले विधेयक 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम -२०२३' (१२८ वां संविधान संशोधन) के पक्ष में लोकसभा के ४५४ सांसदों ने वोट दिया. वहीं, दो सांसदों ने बिल के खिलाफ अपना वोट दिया. महिला आरक्षण से जुड़े 'नारी शक्ति वंदन विधेयक' को मंगलवार को लोकसभा में केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल द्वापा पेश किया गया था.

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से भी इस बिल को हरी झंडी मिल गई, जिसके बाद भारत सरकार ने एक गजट अधिसूचना जारी की है। इस बिल के कानून की शक्ल लेने की वजह सेएक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए रिजर्व होंगी। संसद के विशेष सत्र में लोकसभा और राज्यसभा से पारित करवाया गया ऐतिहासिक महिला आरक्षण बिल अब कानून बन गया है।

शुक्रवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मूसेभी इस बिल को हरी झंडी मिल गई, जिसके बाद भारत सरकार नेएक गजट अधिसूचना जारी की है। इस बिल के कानून की शक्ल लेने की वजह से विधानसभा और लोकसभा चुनावों में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी। लोकसभा से पारित होनेके बाद बिल को राज्यसभा में पेश किया गया और दिनभर की चर्चा के बाद वहां से भी पास हो गया। एआईएमआईएम के सांसदों को छोड़कर, बाकी सभी सांसदों ने महिला आरक्षण बिल का समर्थन किया है। हालांकि, कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्ष की मांग इसमें ओबीसी महिलाओं के लिए आरक्षण देने की भी है। उल्लेखनीय हैकि कोई भी कानून बनानेके लिए पहले बहुमत से विधेयक को लोकसभा और राज्यसभा मेंपारित करवाना होता है।

इसके बाद बिल राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए भेजा जाता है। प्रेसिडेंट के साइन होते ही यह कानून की शक्ल ले लेता है। अब महिला आरक्षण बिल पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मूकी हरी झंडी मिलनेके बाद यह कानून बन गया है। पहली बार इस बिल को साल १९९६ में तत्कालीन प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा की ओर से पेश किया गया था, लेकिन तब पारित नहीं हो सका। अटल बिहारी वाजपेयी के दौर में भी बिल को लाया गया, लेकिन तब भी पास नहीं हुआ। बाद में साल २००८ में यूपीए-१ की सरकार के दौरान यह राज्यसभा में पेश हुआ और फिर २०१० में वहां से पारित हो गया। हालांकि, बिल को लोकसभा में नहीं पारित करवाया जा सका और फिर २०१४ में सरकार जाने के साथ ही यह विधेयक भी खत्म हो गया था।

बिल के कानून बनने के बाद भी यह तुरंत लागू नहीं हो सकेगा। यानी कि इस साल होनेवाले पांच राज्यों के विधानसभा और अगले साल के लोकसभा

समेत तमाम चुनावों में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित नहीं होंगी। दरअसल, इसके लिए पहले जनगणना और और परिसीमन करवाया जाएगा। कोरोनाकाल होने की वजह से साल २०२१ में तय जनगणना अब तक नहीं हो सकी है। २०१४ के लोकसभा चुनाव के बाद इसे करवाने की तैयारी है। वहीं, जनगणना के बाद लोकसभा और विधानसभा सीटों का परिसीमन होगा, जोकि साल २०२६ के बाद ही होना है। ऐसे में माना जा रहा है कि अभी महिला आरक्षण बिल को लागू होने में थोड़ा और वक्त जरूर लग सकता है।

वो २ लोग जिन्होंने महिला आरक्षण बिल के विरोध में डाला वोट?

संसद की लोकसभा से महिला आरक्षण बिल पास हो गया है. इसके पक्ष में ४५४ वोट पड़े, जबकि इसके विरोध में सिर्फ २ वोट ही पड़े हैं. अब ये जान लेना जरूरी है कि आखिर ये दोनों लोग कौन हैं. आखिरकार महिला आरक्षण बिल लोकसभा से बुधवार शाम को पास हो गया. महिला आरक्षण विधेयक के

पक्ष में ४५४ वोट पड़े. इसके विरोध में सिर्फ २ वोट ही पड़े हैं. लोकसभा में ये बिल दो तिहाई बहुमत से पास हो गया है. इसके विरोध में जिन दोनों लोगों ने मतदान किया है वे दोनों AIMIM के सांसद हैं. इनमें से एक असदुद्दीन ओवैसी हैं जबकि दूसरे शख्स उन्हीं की पार्टी के अन्य सांसद सैयद इम्तियाज जमील हैं.

दरअसल, लोकसभा में महिला आरक्षण विधेयक के पक्ष में ४५४ वोट पड़े. जबकि २ वोट इसके खिलाफ पड़े. लोकसभा में ये बिल दो तिहाई बहुमत से पास हुआ. लोकसभा में पर्ची के जरिए वोटिंग हुई है. ऑल इंडिया मजलिस इत्तेहदुल मुस्लिमीन के चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने पहले ही इस बिल का विरोध किया था. उन्होंने कहा कि इसमें ओबीसी और मुस्लिम महिलाओं के लिए प्रावधान क्यों नहीं किया गया है. इनका प्रतिनिधित्व संसद में काफी कम है. ओवैसी ने कहा कि देश में सात फिसदी मुस्लिम महिलाएं हैं, लेकिन इस सदन में उनका प्रतिनिधित्व सिर्फ ०.७ फीसदी ही है.

पहले से ही विरोध में थे ओवैसी

ओवैसी ने यह भी कहा कि मुस्लिम लड़कियों का ड्रॉप आउट १९ फीसदी है, जबकि अन्य समुदाय में यह केवल १२ फीसदी है. वहीं, आधी मुस्लिम महिलाएं अशिक्षित हैं. ओवैसी ने सिलसिलेवार आरोप लगाते हुए कहा कि वे इस बिल का विरोध करते हैं. उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि ये मुस्लिम और ओबीसी महिलाओं का प्रतिनिधित्व नहीं बढ़ाना चाहते हैं.

ओवैसी की पार्टी से २ सांसद

बता दें कि ऑल इंडिया मजलिस इत्तेहदुल मुस्लिमीन के दो सांसद हैं. एक खुद इस पार्टी के चीफ असदुद्दीन ओवैसी हैं जो कि हैदराबाद से सांसद हैं. जबकि दूसरे सांसद सैयद इम्तियाज जमील हैं जो महाराष्ट्र के औरंगाबाद से चुनकर आते हैं. फिल हाल इधर लोकसभा में महिला आरक्षण बिल दो तिहाई बहुमत से पास हुआ. लोकसभा में पर्ची के जरिए वोटिंग हुई. अब लोकसभा और राज्य की विधानसभाओं में एक तिहाई सीट महिलाओं के लिए आरक्षित हो जाएंगी.

सारांश

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा है कि बीजेपी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए राजनीतिक मुद्दा नहीं है.

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा है कि ओबीसी रिज़र्वेशन के बिना महिला आरक्षण बिल अधूरा है.

कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने महिला आरक्षण के लिए लाए गए नारी शक्ति वंदन बिल का समर्थन किया. उन्होंने कहा कि ये राजीव गांधी का सपना था.

१९३१ में ब्रिटिश प्रधान मंत्री को लिखे अपने पत्र में (नए संविधान में महिलाओं की स्थिति पर तीन महिला संगठनों द्वारा संयुक्त रूप से जारी एक आधिकारिक ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए), महिला नेता बेगम शाह नवाज़ और सरोजिनी नायडू ने महिलाओं को प्राथमिकता देने का आह्वान किया। यह भारतीय महिलाओं की राजनीतिक स्थिति में पूर्ण समानता की सार्वभौमिक मांग की अखंडता का उल्लंघन है।

१९८८ में महिलाओं के लिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना ने पंचायत स्तर से संसद तक महिलाओं के लिए आरक्षण की सिफारिश की।

इन सिफारिशों ने ७३वें और ७४वें संवैधानिक संशोधनों के ऐतिहासिक अधिनियमन का मार्ग प्रशस्त किया, जिसके तहत सभी राज्य सरकारों को पंचायत राज संस्थानों और शहरी स्थानीय निकायों में सभी स्तरों पर महिलाओं और प्रमुखों के लिए पंचायत राज संस्थानों में एक तिहाई सीटें आरक्षित करने की आवश्यकता थी।

मुख्यमंत्री के एक तिहाई पद आरक्षित करने का आदेश जारी किया गया। महिलाओं के लिए आरक्षित इन सीटों में से एक तिहाई सीटें SC/ST महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।

महिला सशक्तिकरण पर राष्ट्रीय नीति, २००१ में कहा गया है कि उच्च विधायी निकायों में सीटों के आरक्षण पर भी विचार किया जाएगा।

२७ साल से क्यों लटका है महिला आरक्षण बिल, क्या दूर हो गईं अड़चनें?

महिला आरक्षण बिल को संसद से पारित कराने के लिए आखिरी बार ठोस प्रयास यूपीए सरकार मेंसाल २०१० में हुआ था, जब राज्यसभा ने लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए ३३ प्रतिशत सीटें आरक्षित करने के कदम का विरोध करने वालेकुछ सांसदों को मार्शलों द्वारा बाहर निकाले जाने के बीच विधेयक पारित कर दिया था, लेकिन लोकसभा में जाकर यह विधेयक लटक गया। निचले सदन ने इसे पारित नहीं किया।

बड़े दलों खासकर बीजेपी और कांग्रेस ने हमेशा इस विधेयक का समर्थन किया है, जबकि अन्य छोटे दल इसका विरोध इस मांग के साथ करते रहेहैं कि महिलाओं के लिए ३३ फीसदी आरक्षण के भीतर भी पिछड़े वर्गों का महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था की जाए। फिलहाल, लोकसभा में ७८ महिला सांसद हैं, जो कुल संख्या ५४३ का १५ प्रतिशत से भी कम है। सरकार द्वारा पिछले दिसंबर मेंसंसद के साथ साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार, राज्यसभा मेंभी महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग १४ फीसदी है।

आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, गोवा, गुजगु रात, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, ओडिशा, सिक्कि म, तमिलनाडु, तेलंगाना, त्रिपुरा और पुडुचेरी सहित कई राज्य विधानसभाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व १० प्रतिशत सेकम है। दिसंबर २०२२ के सरकारी आंकड़ों के अनुसार, बिहार, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में १०-१२ फीसदी ही महिला विधायक थीं। छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल और झारखंड में यह आंकड़ा क्रमशः १४.४४ प्रतिशत, १३.७ प्रतिशत और १२.३५ प्रतिशत है। इन्हीं आंकड़ों के साथ ये राज्य चार्ट में सबसे आगे हैं। पिछले कुछ हफ्तों में, बीजद और बीआरएस सहित कई दलों ने विधेयक को फिर से पेश करने की मांग की है, जबकि कांग्रेस ने भी रविवार को अपनी हैदराबाद कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में इस पर एक प्रस्ताव पारित किया।

हालांकि, अभी तक यह नहीं पता चल सका हैकि नए विधेयक में महिलाओं के लिए कितने प्रतिशत आरक्षण का प्रस्ताव किया जा रहा है और उसमें भी ओबीसी कैटगरी की महिलाओं के लिए अलग से कोटा निर्धारित किया गया है या नहीं। बता दें कि २००८ के बिल में, जिसे लोकसभा के विघटन से पहले २०१० मेंराज्यसभा में पारित किया गया था, लोकसभा और विधानसभा की सभी सीटों में से एक तिहाई सीट महिलाओं के लिए आरक्षित करनेका प्रस्ताव किया गया था। महिला आरक्षण बिल को पास कराने की आखिरी कोशिश मनमोहन सिंह की सरकार मेंहुई थी। पीआरएस लेजिस्लेटिव पर उपलब्ध एक लेख के अनुसार, उस बिल में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और एंग्लो-इंडियन के लिए कोटा-के भीतर कोटा का प्रस्ताव रखा गया था। इसके अलावा आरक्षित सीटों को प्रत्येक आम चुनाव के बाद रोटेट किया जाना था। इसका मतलब था कि तीन चुनावों के चक्र के बाद, सभी निर्वाचन क्षेत्र एक बार महिलाओं के लिए आरक्षित हो जाएंगे । उस प्रस्ताव के मुताबिक, आरक्षण १५ वर्षों के लिए लागू होना था।

यूपीए शासनकाल में साल २००८ और २०१० के असफल प्रयास से पहलेभी इस मुद्दे का इतिहास उतार-चढ़ाव भरा रहा है क्योंकि इसी तरह का बिल १९९६, १९९८ और १९९९ में पेश किया गया था। गीता मुखर्जी की अध्यक्षता में एक संयुक्त संसदीय समिति ने १९९६ के विधेयक की जांच की थी और सात सिफारिशें की थीं। इनमें से पांच को २००८ के विधेयक मेंशामिल किया गया था, जिसमें एंग्लो इंडियंस के लिए १५ साल की आरक्षण अवधि और उप-आरक्षण शामिल था। गीता मुखर्जी समिति की दो सिफारिशें शामिल नहीं इनमें ऐसे मामलों में आरक्षण भी शामिल हैं, जहां किसी राज्य में लोकसभा की तीन से कम सीटें हैं (या एससी/एसटी के लिए तीन सेकम सीटें); दिल्ली विधानसभा के लिए भी आरक्षण की सिफारिश की गई थी; और 'एक-तिहाई सेकम नहीं' को 'जितना संभव हो सके, एक-तिहाई' सीट मेंबदलनेकी सिफारिश रखी गई थी। समिति की दो सिफ़ारिशों को २००८ के विधेयक में शामिल नहीं किया गया था; पहला राज्यसभा और विधान परिषदों में सीटें आरक्षित करना और दूसरा ओबीसी महिलाओं के लिए उप-आरक्षण की व्यवस्था करना।

*२००८ के विधेयक का सपा, राजद और जद (यू) नेकड़ा विरोध किया था। इन दलों ने बिल मेंओबीसी महिलाओं के लिए भी क्षैतिज आरक्षण की मांग की थी। संसद में हंगामे को देखतेहुए २००८ के विधेयक को संसद की कानून और न्याय संबंधी स्थायी समिति (**Standing Committee on Law and Justice,**) को भेजा गया था, लेकिन समिति आम सहमति तक पहुंचने में विफल रही।*

ओबीसी महिलाओं को आरक्षण के मुद्दे पर समिति नेकहा कि 'विधेयक के पारित होनेके मौजूदा समय मेंअन्य सभी मुद्दों पर सरकार बिना किसी देरी के उचित समय पर विचार कर सकती है।' बता दें कि महिला आरक्षण विधेयक पारित कराने के लिए सरकार को संसद के प्रत्येक सदन में दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता होगी।

कौन थीं गीता मुखर्जी, जिन्हें महिला आरक्षण आंदोलन की योद्धा बताया जा रहा है...

क्या है महिला आरक्षण का इतिहास

महिला आरक्षण बिल पर लोकसभा में चर्चा के दौरान कांग्रेस और बीजेपी के बीच न सिर्फ इसका श्रेय लेने की होड़ देखने को मिली बल्कि तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा ने ममता बनर्जी को महिला आरक्षण की माता करार दे दिया। इसी बीच गीता मुखर्जी का भी नाम गूंजा। इससे पहले सोनिया गांधी ने कहा कि यह बिल उनके जीवनसाथी राजीव गांधी का सपना और उनकी जिंदगी का मार्मिक क्षण है। इसकी काट में बीजेपी के निशिकांत दुबे ने गीता मुखर्जी और सुषमा स्वराज का नाम लिया।

दरअसल, पूर्वप्रधान मंत्री राजीव गांधी ने ही मई १९८९ में सबसे पहले ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए एक तिहाई आरक्षण देन के लिए संविधान संशोधन विधेयक पेश किया था और इसके जरिए पहली बार उन्होंने निर्वाचित निकायों में महिला आरक्षण का बीज बोया था। हालांकि, विधेयक लोकसभा में पारित हो गया लेकिन सितंबर १९८९ में राज्यसभा में पारित नहीं हो सका।

पीवी नरसिम्हा राव के काल में बिल हुआ पास

१९९२ और १९९३ में तत्कालीन प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव ने संविधान संशोधन विधेयक ७२ और ७३ को फिर से पेश किया। इसके जरिए ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकायों मेंमहिलाओं के लिए सभी पदों पर एक तिहाई (३३इ) आरक्षण लागू किया गया। इसका असर यह हुआ कि अब देश भर में पंचायतों और नगर पालिकाओं में लगभग १५ लाख निर्वाचित महिला प्रतिनिधि हैं।

देवगौड़ा का क्या योगदान

१२ सितंबर, १९९६ को तत्कालीन प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के नेतृत्व वाली संयुक्त मोर्चासरकार ने पहली बार महिला आरक्षण बिल ८१वें संविधान संशोधन विधेयक के रूप में लोकसभा में पेश किया। विधेयक को लोकसभा में मंजूरी नहीं मिली। लालू-मुलायम और शरद यादव जैसे नेताओं ने इसका जबर्दस्त विरोध किया। बीजेपी के भी कुछ सांसदों ने विरोध किया। इसके बाद बिल को गीता मुखर्जी की अध्यक्षता वाली संयुक्त संसदीय समिति के पास भेज दिया गया। गीता मुखर्जी समिति ने दिसंबर १९९६ में अपनी रिपोर्ट पेश की जिसमें कुल सात सिफारिशें

वाजपेयी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने १९९८ में १२वीं लोकसभा में महिला आरक्षण विधेयक को आगे बढ़ाया। हालांकि, इस बार भी विधेयक संसद से पारित नहीं हो सका। इसे १९९९, २००२ और २००३ में भी वाजपेयी सरकार के कार्यकाल में पेश किया गया, लेकिन सफलता नहीं मिल सकी।

गीता मुखर्जी महिलाओं के अधिकार के लिए लड़नेवाली एक संकल्पित महिला थीं। वह १९८० से २००० तक पश्चिम बंगाल की पंसकुरा सीट से सात बार सीपीआई की सांसद चुनी गई थीं। इससे पहले वह १९६७ से १९७७ तक पश्चिम बंगाल विधानसभा की सदस्य भी रह चुकी थीं। महिला आरक्षण विधेयक का मसौदा तैयार करने में गीता मुखर्जी की अहम भूमिका थी। उन्हें इस बिल का मुख्य सूत्रधार माना जाता है। गीता मुखर्जी की अध्यक्षता में संयुक्त संसदीय समिति ने १९९६ के महिला आरक्षण विधेयक की जांच की और उससे जुड़ी सात सिफारिशें पेश की थीं। इनमें से पांच को २००८ के महिला आरक्षण बिल में शामिल किया गया था। ये सिफारिशें हैं (i) १५ वर्ष की अवधि के लिए आरक्षण; (ii) एंग्लो इंडियंस

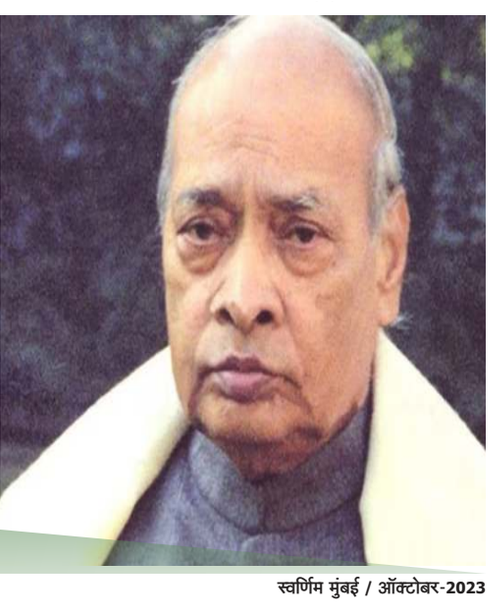

के लिए उप-आरक्षण; (iii) उन मामलों मेंभी आरक्षण का प्रावधान जिस राज्य में लोकसभा में तीन से कम सीटें हैं (या एससी/एसटी के लिए तीन से कम सीटें हैं); (iv) दिल्ली विधानसभा के लिए आरक्षण; और (v) 'एक तिहाई से कम नहीं' शब्दावली को 'जितना संभव हो सके, एक तिहाई' आरक्षण शब्दावली के रूप में बदलना।

ये दो सिफारिशेंनहीं अपनाई गई

सरकार ने दो सिफ़ारिशों को २००८ के विधेयक में शामिल नहीं किया था। उनमें- पहला राज्यसभा और विधान परिषदों में सीटें आरक्षित करना है और दूसरा, संविधान द्वारा ओबीसी को आरक्षण देने के बाद ओबीसी महिलाओं के लिए भी कोटा देना शामिल है। हालांकि, कानून और न्याय संबंधी स्थायी समिति

अपनी अंतिम रिपोर्ट में आम सहमति तक पहुंचने में विफल रही थी। समिति ने अनुशंसा की थी कि विधेयक को संसद में पारित किया जाए और बिना किसी देरी के अमल में लाया जाए। तब समिति के दो सदस्यों, वीरेंद्र भाटिया और शैलेन्द्र कुमार (दोनों समाजवादी पार्टी से संबंधित) ने यह कहते हुए असहमति जताई थी कि वे महिलाओं को आरक्षण देनेके खिलाफ नहीं हैं, लेकिन जिस तरह से इस विधेयक का मसौदा तैयार किया गया है, उससे वे सहमत नहीं हैं। उनकी तीन सिफारिशें थीं: (i) प्रत्येक राजनीतिक दल को अपना २०% टिकट महिलाओं को देने चाहिए; (ii) वर्तमान स्वरूप में भी आरक्षण २०% सीटों से अधिक नहीं होना चाहिए; और (iii) ओबीसी और अल्पसंख्यक महिलाओं के लिए उसी प्रस्तावित आरक्षण में कोटा होना चाहिए

करीब ४० देशों में महिलाओं के लिए आरक्षण

राजनीति में महिलाओं के लिए आरक्षण की बात करें तो अन्य देशों में कई में भी यह लागू है. स्वीडन स्थित इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर डेमोक्रेसी एंड इलेक्टोरल असिस्टेंस (आईडीईए) के अनुसार, लगभग ४० देशों में या तो संवैधानिक संशोधन के माध्यम से या चुनावी कानूनों में बदलाव करके संसद में महिलाओं के लिए कोटा है.

जिन देशों में महिलाओं के लिए कोटा अनिवार्य है, उनके अलावा ५० से अधिक देशों में प्रमुख राजनीतिक दलों ने स्वेच्छा से अपने स्वयं के कानून में कोटा प्रावधान निर्धारित किए हैं. पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में महिलाओं के लिए ६० सीटें आरक्षित हैं. बांग्लादेश की संसद में महिलाओं के लिए ५० सीटें आरक्षित हैं. नेपाल की संसद में महिलाओं के लिए ३३ फीसदी सीटें आरक्षित हैं.

तालिबान के शासन से पहले अफगानिस्तान की संसद में महिलाओं के लिए २७ फीसदी सीटें आरक्षित थीं. यूएई की फेडरल नेशनल काउंसिल (एफएनसी) में महिलाओं के लिए ५० फीसदी सीटें आरक्षित हैं. इंडोनेशिया में उम्मीदवारों में कम से कम ३० फीसदी महिलाओं का प्रतिनिधित्व होना चाहिए. कई अफ्रीकी, यूरोपीय, दक्षिण अमेरिकी देशों में भी राजनीति में महिलाओं के लिए आरक्षण है.

राजनीति में महिलाएं (निचला सदन) - जनवरी २०२३ तक

रवांडा - ६१.३ %
क्यूबा - ५३.४ %
निकारागुआ - ५१.७ %
मेक्सिको - ५० %
न्यूजीलैंड - ५०%
संयुक्त अरब अमीरात - ५०%
दक्षिण अफ्रीका - ४६.३ %
ऑस्ट्रेलिया - ३८.४ %
फ्रांस - ३७.८ %

अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां...

-महिला राष्ट्रप्रमुखों वाले देश - १७/१५१ = ११.३% (राजशाही आधारित व्यवस्था वाले देशों को छोड़कर)

-सरकार की महिला प्रमुख वाले देश - १९/१९३= ९.८%

-संसद की महिला अध्यक्ष वाले देश - ६२/२७३ = २२.७%

-संसद की महिला उपाध्यक्ष वाले देश -१५३/५२९ = २८.९%

-मंत्रालयों का नेतृत्व करने वाले महिला कैबिनेट सदस्य - २२.८ %

-ऐसे देश जहां कैबिनेट मंत्रियों के ५० % या उससे अधिक पदों पर महिलाएं काबिज हैं - केवल १३

-महिला कैबिनेट मंत्रियों द्वारा रखे गए पांच सबसे आम विभाग - महिला और लैंगिक समानता, परिवार और बच्चों के मामले, सामाजिक समावेश और विकास, सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा, और स्वदेशी और अल्पसंख्यक मामले हैं.

-वर्तमान दर पर, अगले १३० वर्षों तक सत्ता के सर्वोच्च पदों पर जेंडर इक्वलिटी हासिल नहीं की जा सकेगी

२०१९ के लोकसभा में किस पार्टी से जीतीं कितनी महिला उम्मीदवार?

लोकसभा चुनाव २०१९ में बीजेपी ने ५५ महिला उम्मीदवारों को टिकट दी थी, जिनमें से ४१ प्रत्याशियों ने जीत हासिल की थी. बीजेपी की महिला उम्मीदवारों की जीत का आंकड़ा ७५ फीसदी रहा. वहीं, कांग्रेस ने ५४ महिला उम्मीदवारों को चुनावी मैदान में उतारा, जिनमें से केवल ६ ही चुनाव जीत सकी. कांग्रेस की महिला उम्मीदवारों की जीत का आंकड़ा ११ फीसदी रहा.

बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) ने २०१९ के लोकसभा चुनाव में २४ महिला प्रत्याशी बनाए, लेकिन इनमें से केवल १ को ही जीत हासिल हो सकी. इस तरह बीएसपी की महिला उम्मीदवारों की जीत का प्रतिशत महज ४ फीसदी रहा. महिला उम्मीदवारों को जिताने के मामले में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने अन्य दलों से बाजी मारी. टीएमसी ने २३ महिला उम्मीदवारों को टिकट दिया, जिनमें से ३९ फीसदी यानी ९ ने जीत हासिल की.

शारदीय नवरात्रि २०२३ का शुभारंभ...

नवरात्रि नौ दिनों तक चलने वाला व्रत, पूजा एवं मेलों का उत्सव है, सभी नौ दिन माँ आदिशक्ति के भिन्न-भिन्न रूपों को समर्पित हैं। देवी का प्रत्येक रूप, एक नवग्रह(चंद्रमा, मंगल, शुक्र, सूर्य, बुद्ध, गुरु, शनि, राहू, केतु) की स्वामिनी तथा उनसे जुड़ी बाधाओं को दूर व उन्हें प्रवल करने हेतु भी पूजा जाता है। शारदीय नवरात्रि आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तिथि को कलश स्थापना के साथ प्रारंभ होती है. आश्विन शुक्ल नवमी तिथि को महानवमी के दिन नवदुर्गा के नौवें स्वरूप की पूजा और हवन के साथ नवरात्रि का समापन होता है. ९ दिनों की नवरात्रि शुभ मानी जाती है, जबकि ८ दिनों की नवरात्रि को शुभ नहीं मानते हैं, १० दिनों की नवरात्रि विशेष होती है. इस साल शारदीय नवरात्रि का शुभारंभ १५ अक्टूबर को हो रहा है और इसका समापन २३ सितंबर को नवमी हवन के साथ होगा. इस आधार पर देखा जाए तो इस साल शारदीय नवरात्रि ९ दिन की है. जब तिथियों का लोप होता है या तिथियों के समय कम या ज्यादा होते हैं तो नवरात्रि ८ से १० दिनों की हो जाती है. इस साल तिथियों का लोप नहीं है.

वैदिक पंचांग के अनुसार, १४ अक्टूबर रात ११:२४ पीएम से आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तिथि शुरू हो रही है और इसका समापन १६ अक्टूबर को १२:३२ एएम पर होगा. उदयातिथि के आधार पर शारदीय नवरात्रि का शुभारंभ १५ अक्टूबर को होगा.

शारदीय नवरात्रि २०२३ कलश स्थापना मुहूर्त कब है?

शारदीय नवरात्रि की कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त ११:४४ एएम से लेकर १२:३० पीएम तक है. इस समय में आपको घटस्थापना करके मां दुर्गा के प्रथम स्वरूप मां शैलपुत्री की पूजा करनी चाहिए.

शारदीय नवरात्रि २०२३ कैलेंडरः

घटस्थापना से महानवमी तक

१५ अक्टूबरः घटस्थापना, मां शैलपुत्री की पूजा
१६ अक्टूबरः मां ब्रह्मचारिणी की पूजा
१७ अक्टूबरः मां चंद्रघंटा की पूजा
१८ अक्टूबरः मां कूष्माण्डा की पूजा
१९ अक्टूबरः मां स्कंदमाता की पूजा
२० अक्टूबरः मां कात्यायनी की पूजा
२१ अक्टूबरः मां कालरात्रि की पूजा
२२ अक्टूबरः दुर्गा अष्टमी, मां महागौरी की पूजा, कन्या पूजन
२३ अक्टूबरः महानवमी, मां सिद्धिदात्री की पूजा, नवरात्रि हवन

कब है विजयादशमी २०२३?

इस साल विजयादशमी २४ अक्टूबर दिन मंगल वार को है. इस दिन दशहरा मनाया जाएगा और नवरात्रि का पारण होगा. दशहरा की शस्त्र पूजा भी २४ अक्टूबर को होगी.

दुर्गा विसर्जन २०२३

इस साल दुर्गा विसर्जन विजयादशमी के दिन नहीं होगा. जो लोग मां दुर्गा की मूर्तियां रखेंगे, वे दुर्गा विसर्जन २३ अक्टूबर को महानवमी के दिन या फिर दशहरा के अगले दिन २४ अक्टूबर बुधवार को करेंगे.

घट स्थापना एवं दुर्गा पूजन की सामग्रीः

१. जौ बोने के लिए मिट्टी का पात्र। यह वेदी कहलाती है।
२. जौ बोने के लिए शुद्ध साफ़ की हुई मिटटी जिसमे कंकर आदि ना हो।
३. पात्र में बोने के लिए जौ (गेहूं भी ले सकते है)
४. घट स्थापना के लिए मिट्टी का कलश (सोने, चांदी या तांबे का कलश भी ले सकते है)

५. कलश में भरने के लिए शुद्ध जल
६. नर्मदा या गंगाजल या फिर अन्य साफ जल
७. रोली, मौली
८. इत्र, पूजा में काम आने वाली साबुत सुपारी, दूर्वा, कलश में रखने के लिए सिक्का (किसी भी प्रकार का कुछ लोग चांदी या सोने का सिक्का भी रखते है)
९. पंचरत्न (हीरा , नीलम , पन्ना , माणक और मोती)
१०. पीपल , बरगद , जामुन , अशोक और आम के पत्ते (सभी ना मिल पायें तो कोई भी दो प्रकार के पत्ते ले सकते है)
११. कलश ढकने के लिए ढक्कन (मिट्टी का या तांबे का)
१२. ढक्कन में रखने के लिए साबुत चावल
१३. नारियल, लाल कपडा, फूल माला
१४. फल तथा मिठाई, दीपक , धूप , अगरबत्ती

दुर्गा पूजन सामग्रीः

पंचमेवा पंचमिठाई रूई कलावा, रोली, सिंदूर, अक्षत, लाल वस्त्र, फूल, ५ सुपारी, लौंग, पान के पत्ते ५, घी, कलश, कलश हेतु आम का पल्लव, चौकी, समिधा, हवन कुण्ड, हवन सामग्री, कमल गट्टे, पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, शर्करा), फल, बताशे, मिठाईयां, पूजा में बैठने हेतु आसन, हल्दी की गांठ, अगरबत्ती, कुमकुम, इत्र, दीपक, आरती की थाली, कुशा, रक्त चंदन, श्रीखंड चंदन, जौ, तिल, माँ की प्रतिमा, आभूषण व श्रृंगार का सामान, फूल माला।

माँ शैलपुत्री
माँ सिद्धिदात्री
माँ ब्रह्मचारिणी
माँ महागौरी
माँ चंद्रघंटा
माँ दुर्गा के नौ रुप
माँ कालरात्रि
@ruby_creation
माँ कूष्माण्डा
माँ स्कंदमाता
माँ कात्यायनी

नवरात्रि में कन्या पूजन की विधि...

नवरात्रि में विधि-विधान से मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। इसके साथ ही अष्टमी और नवमी तिथि को बहुत ही खास माना जाता है, क्योंकि इन दिनों कन्या पूजन का भी विधान है। ऐसा माना जाता है कि नवरात्रि में कन्या की पूजा करने से सुख-समृद्धि आती है। इससे मां दुर्गा शीघ्र प्रसन्न होती हैं। पूजन के लिए आमंत्रित छोटी लड़कियों (कन्याओं) को कंजक / कंजकें भी कहा जाता है, अतः यह पूजा कंजक पूजन के नाम से भी प्रसिद्ध है।

कन्या पूजन की विधिः

१. अष्टमी के दिन कन्या की पूजा करने के लिए सबसे पहले सुबह उठकर स्नान कर लें।
२. स्नान करने के बाद सबसे पहले विधि अनुसार भगवान गणेश और महागौरी की पूजा करें।
३. कन्या पूजा के लिए दो साल से लेकर १० साल तक की ९ लड़कियों और एक लड़के को घर पर बुलाएं।
४. कन्याओं के पैर धोने के बाद उनके हाथों में रोली, कुमकुम और अक्षत का टीका लगाकर मौली बांधें।
५. अब कन्या और बालक को दीप दिखाकर आरती उतारकर यथासम्भव उन्हें अर्पित करें। आमतौर पर कन्या पूजन के दिन लड़कियों को पुरी, चना और हलवा खाने के लिए दिया जाता है।
६. भोजन के बाद लड़कियों को यथासंभव उपहार दिए जाते हैं।
७. इसके बाद पैर छूकर उन्हें आशीर्वाद दें और मां की स्तुति करते हुए गलती के लिए माफी मांगें। उसके बाद, उन्हें आतिथ्य सत्कार के साथ विदा करें।

कन्या पूजन का महत्व

देवी पुराण के अनुसार कन्या की पूजा करने से देवी दुर्गा प्रसन्न होती हैं और व्रत की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। इतना ही नहीं कन्याओं को भोजन कराने से कुंडली में ग्रहों की स्थिति भी ठीक हो जाती है। ज्योतिष विशेषज्ञों के अनुसार कन्या पूजन में आपको हमेशा एक लड़के को आमंत्रित करना चाहिए। यह माना जाता है कि भगवान शिव ने आदि शक्ति या मां दुर्गा की सुरक्षा के लिए भैरव को नियुक्त किया था। इसलिए मां दुर्गा के साथ भगवान भैरव के रूप में कम से कम एक लड़के की पूजा करना जरूरी है।

नवरात्रि छः महिने के अंतराल के साथ वर्ष में दो बार मनाई जाती है, जिसे चैत्र नवरात्रि तथा शारदीय नवरात्रि के नाम से जाना जाता है। नवरात्रि को नवदुर्गा अथवा नौदुर्गा के नाम से भी जाना जाता है।

माँ शैलपुत्री

या देवी सर्वभूतेषु माँ शैलपुत्री रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

इन्हें हेमावती तथा पार्वती के नाम से भी जाना जाता है।

तिथिः चैत्र /अश्विन शुक्ल प्रतिपदा

सवारीः वृष, सवारी वृष होने के कारण इनको वृषारूढ़ा भी कहा जाता है।

अत्र-शस्त्रः दो हाथ- दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल का फूल धारण किए हुए हैं।

मुद्राः माँ का यह रूप सुखद मुस्कान और आनंदित दिखाई पड़ता है।

ग्रहः चंद्रमा - माँ का यह देवी शैलपुत्री रूप सभी भाग्य का प्रदाता है, चंद्रमा के पड़ने वाल ` किसी भी बुरे प्रभाव को नियंत्रित करती हैं।

शुभ रंगः चैत्र - स्लेटी / अश्विन - सफ़ेद

माँ ब्रह्मचारिणी

या देवी सर्वभूतेषु माँ ब्रह्मचारिणी रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

माता ने इस रूप में फल-फूल के आहार से १००० साल व्यतीत किए, और धरती पर सोते समय पत्तेदार सब्जियों के आहार में अगल ` १०० साल और बिताए। जब माँ ने भगवान शिव की उपासना की तब उन्होने ३००० वर्षों तक केवल बिल्व के पत्तों का आहार किया। अपनी तपस्या को और कठिन करते हुए, माँ ने बिल्व पत्र खाना भी छोड़ दिया और बिना किसी भोजन और जल के अपनी तपस्या जारी रखी, माता के इस रूप को अपर्णा के नाम से जाना गया।

तिथिः चैत्र /अश्विन शुक्ल द्वितीया

अन्य नामः देवी अपर्णा

सवारीः नंगे पैर चलते हुए।

अत्र-शस्त्रः दो हाथ- माँ दाहिने हाथ में जप माल ा और बाएं हाथ में कमंडल धारण किए हुए हैं।

ग्रहः मंगल - सभी भाग्य का प्रदाता मंगल ग्रह।

शुभ रंगः चैत्र - नारंगी /अश्विन - लाल

माँ चंद्रघंटा

या देवी सर्वभूतेषु माँ चंद्रघंटा रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

यह देवी पार्वती का विवाहित रूप है। भगवान शिव से शादी करने के बाद देवी महागौरी ने अर्ध चंद्र से अपने माथे को सजाना प्रारंभ कर दिया और जिसके कारण देवी पार्वती को देवी चंद्रघंटा के रूप में जाना जाता है। वह अपने माथे पर अर्ध-गोलाकार चंद्रमा धारण किए हुए हैं। उनके माथे पर यह अर्ध चाँद घंटा के समान प्रतीत होता है, अतः माता के इस रूप को माता चंद्रघंटा के नाम से जाना जाता है।

तिथिः चैत्र /अश्विन शुक्ल तृतीया

सवारीः बाघिन

अत्र-शस्त्रः दस हाथ - चार दाहिने हाथों में त्रिशूल, गदा, तलवार और कमंडल तथा वरण मुद्रा में पाँचवां दाहिना हाथ। चार बाएं हाथों में कमल का फूल, तीर, धनुष और जप माला तथा पांचवें बाएं हाथ अभय मुद्रा में।

मुद्राः शांतिपूर्ण और अपने भक्तों के कल्याण हेतु।

ग्रहः शुक्र

शुभ रंगः चैत्र - सफेद /अश्विन - गहरा नीला

माँ कूष्माण्डा

या देवी सर्वभूतेषु माँ कूष्माण्डा रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

कु का अर्थ है कुछ, ऊष्मा का अर्थ है ताप, और अंडा का अर्थ यहां ब्रह्मांड अथवा सृष्टि, जिसकी ऊष्मा के अंश से यह सृष्टि उत्पन्न हुई वे देवी कूष्माण्डा हैं। देवी कूष्माण्डा, सूर्य के अंदर रहने की शक्ति और क्षमता रखती हैं। उसके शरीर की चमक सूर्य के समान चमकदार है। माँ के इस रूप को अष्टभुजा देवी के नाम से भी जाना जाता है।

तिथिः चैत्र /अश्विन शुक्ल चतुर्थी

अन्य नामः अष्टभुजा देवी

सवारीः शेरनी

अत्र-शस्त्रः आठ हाथ - उसके दाहिने हाथों में कमंडल, धनुष, बाड़ा और कमल हैं और बाएं हाथों में अमृत कलश, जप माला, गदा और चक्र है।

मुद्राः कम मुस्कुराहट के साथ।

ग्रहः सूर्य - सूर्य को दिशा और ऊर्जा प्रदाता।

शुभ रंगः चैत्र - लाल / अश्विन - पीला

माँ स्कन्दमाता

या देवी सर्वभूतेषु माँ स्कन्दमाता रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

जब देवी पार्वती भगवान स्कंद की माता बनीं, तब माता पार्वती को देवी स्कंदमाता के रूप में जाना गया। वह कमल के फूल पर विराजमान हैं, और इसी वजह से स्कंदमाता को देवी पद्मासना के नाम से भी जाना जाता है। देवी स्कंदमाता का रंग शुभ्र है, जो उनके श्वेत रंग का वर्णन करता है। जो भक्त देवी के इस रूप की पूजा करते हैं, उन्हें भगवान कार्तिकेय की पूजा करने का लाभ भी मिलता है। भगवान स्कंद को कार्तिकेय के नाम से भी जाना जाता है।

तिथिः चैत्र /अश्विन शुक्ल पञ्चमी

अन्य नामः देवी पद्मासना

सवारीः उग्र शेर

अत्र-शस्त्रः चार हाथ - माँ अपने ऊपरी दो हाथों में कमल के फूल रखती हैं है। वह अपने एक दाहिने हाथ में बाल मुरुगन को और अभय मुद्रा में है। भगवान मुरुगन को कार्तिकेय और भगवान गणेश के भाई के रूप में भी जाना जाता है।

मुद्राः मातृत्व रूप

ग्रहः बुद्ध

शुभ रंगः चैत्र - गहरा नीला / अश्विन - हरा

माँ कात्यायनी

या देवी सर्वभूतेषु माँ कात्यायनी रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

माँ पार्वती ने राक्षस महिषासुर का वध करने के लिए देवी कात्यायनी का रूप धारण किया। यह देवी पार्वती का सबसे हिंसक रूप है, इस रूप में देवी पार्वती को योद्धा देवी के रूप में भी जाना जाता है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार देवी

पार्वती का जन्म ऋषि कात्या के घर पर हुआ था और जिसके कारण देवी पार्वती के इस रूप को कात्यायनी के नाम से जाना जाता है।

तिथिः चैत्र /अश्विन शुक्ल षष्ठी

सवारीः शोभायमान शेर

अत्र-शस्त्रः चार हाथ - बाएं हाथों में कमल का फूल और तलवार धारण किए हुए है और अपने दाहिने हाथ को अभय और वरद मुद्रा में रखती है।

मुद्राः सबसे हिंसक रूप

ग्रहः गुरु

शुभ रंगः चैत्र - पीला /अश्विन - स्लेटी

माँ कालरात्रि

या देवी सर्वभूतेषु माँ कालरात्रि रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

जब देवी पार्वती ने शुंभ और निशुंभ नाम के राक्षसों का वध लिए तब माता ने अपनी बाहरी सुनहरी त्वचा को हटा कर देवी कालरात्रि का रूप धारण किया। कालरात्रि देवी पार्वती का उग्र और अति-उग्र रूप है। देवी कालरात्रि का रंग गहरा काला है। अपने क्रूर रूप में शुभ या मंगल कारी शक्ति के कारण देवी कालरात्रि को देवी शुभंकरी के रूप में भी जाना जाता है।

तिथिः चैत्र /अश्विन शुक्ल सप्तमी

अन्य नामः देवी शुभंकरी

सवारीः गधा

अत्र-शस्त्रः चार हाथ - दाहिने हाथ अभय और वरद मुद्रा में हैं, और बाएं हाथों में तलवार और घातक लोहे का हुक धारण किए हैं।

मुद्राः देवी पार्वती का सबसे क्रूर रूप

ग्रहः शनि

शुभ रंगः चैत्र - हरा / अश्विन - नारंगी

अष्टमीः माँ महागौरी

या देवी सर्वभूतेषु माँ महागौरी रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, सोल ह साल की उम्र में देवी शैलपुत्री अत्यंत सुंदर थीं। अपने अत्यधिक गौर रंग के कारण देवी महागौरी की तुलना शंख, चंद्रमा और कुंद के सफेद फूल से की जाती है। अपने इन गौर आभा के कारण उन्हें देवी महागौरी के नाम से जाना जाता है। माँ महागौरी केवल सफेद वस्त्र धारण करतीं हैं उसी के कारण उन्हें श्वेताम्बरधरा के नाम से भी जाना जाता है।

तिथिः चैत्र /अश्विन शुक्ल अष्टमी

अन्य नामः श्वेताम्बरधरा

सवारीः वृष

अत्र-शस्त्रः चार हाथ - माँ दाहिने हाथ में त्रिशूल और अभय मुद्रा में रखती हैं। वह एक बाएं हाथ में डमरू और वरदा मुद्रा में रखती हैं।

ग्रहः राहू

मंदिरः हरिद्वार के कनखल में माँ महागौरी को समर्पित मंदिर है।

शुभ रंगः चैत्र - मोर हरा /अश्विन - मोर वाला हरा

माँ सिद्धिदात्री

या देवी सर्वभूतेषु माँ सिद्धिदात्री रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

शक्ति की सर्वोच्च देवी माँ आदि-पराशक्ति, भगवान शिव के बाएं आधे भाग से सिद्धिदात्री के रूप में प्रकट हुईं। माँ सिद्धिदात्री अपने भक्तों को सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करती हैं। यहां तक कि भगवान शिव ने भी देवी सिद्धिदात्री की सहयता से अपनी सभी सिद्धियां प्राप्त की थीं। माँ सिद्धिदात्री केवल मनुष्यों द्वारा ही नहीं बल्कि देव, गंधर्व, असुर, यक्ष और सिद्धों द्वारा भी पूजी जाती हैं। जब माँ सिद्धिदात्री शिव के बाएं आधे भाग से प्रकट हुईं, तब भगवान शिव को र्ध-नारीश्वर का नाम दिया गया। माँ सिद्धिदात्री कमल आसन पर विराजमान हैं।

अष्ट(८) सिद्धियांः अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व।

तिथिः चैत्र /अश्विन शुक्ल नवमी

आसनः कमल

अत्र-शस्त्रः चार हाथ - दाहिने हाथ में गदा तथा चक्र, बाएं हाथ में कमल का फूल व शंख शोभायमान है।

ग्रहः केतु

शुभ रंगः चैत्र - बैंगनी / अश्विन - गुलाबी

शारदीय नवरात्रि

शरद ऋतु में आने वाली नवरात्रि अधिक ल ोकप्रिय हैं इसलिए इसे महा नवरात्रि भी कहा गया है।

चैत्र नवरात्रि

चैत्र नवरात्रि हिंदू कैलेंडर के पहले महीने चैत्र की प्रतिपदा तिथि से शुरू होती है जिसके कारण यह नवरात्रि चैत्र नवरात्रि के नाम से जानी जाती है। भगवान राम का अवतरण दिवस राम नवमी आमतौर पर नवरात्रि के दौरान नौवें दिन पड़ता है, इसलिए राम नवरात्रि भी कहा जाता है। चैत्र नवरात्रि को वसंत नवरात्रि के नाम से भी जाना जाता है।

चैत्र नवरात्रि उत्तरी भारत में अपेच्छा कृत अधिक लोकप्रिय है। महाराष्ट्र में चैत्र नवरात्रि गुड़ी पाडवा से शुरू होते हैं और आंध्र प्रदेश में यह उगादी से शुरू होता है। इस नवरात्रि का दूसरा दिन भी चेटी चंड या झुलेलाल जयंती के रूप में मनाया जाता है। दिल्ली एनसीआर में झुलेलाल मंदिरों की सूची।

दुर्गा पूजा

पाँच दिन चलने वाला ये उत्सव षष्ठी से प्रारंभ होकर दशहरा / विजया दशमी को समाप्त होता है। भारतीय पूर्वी राज्यों में इस त्यौहार को दुर्गा पूजा के रूप में मनाया जाता है। दुर्गा पूजा के बारे में जाने..

नवरात्रि में यह अवश्य करें!

१) नौ दिन माताराणी का ध्यान!

२) अपने प्रतिकूल ग्रह वाले दिन, उपवास!

३) मंदिर में माता के अथवा मंदिर के बाहर ध्वज के दर्शन!

संबंधित जानकारियाँ

आवृत्ति

अर्ध वार्षिक

समय

९ दिन

सुरुआत तिथि

चैत्र /अश्विन शुक्ल प्रतिपद

समाप्ति तिथि

चैत्र /अश्विन शुक्ल नवमी

महीना

मार्च - अप्रैल; सितंबर - अक्टूबर

प्रकार

चैत्र नवरात्रि, शारदीय नवरात्रि

उत्सव विधि

व्रत, हवन, जागरण, जागराता, माता की चौकी, मेला।

महत्वपूर्ण जगह

शक्ति पीठ, श्री दुर्गा मंदिर, माता मंदिर, माँ काली मंदिर, कालीबाड़ी।

खराब स्थिति में पहुंच गए

भारत और कनाडा के रिश्ते

ऐसा लगता है कि भारत और कनाडा के रिश्ते काफी खराब स्थिति में पहुंच गए हैं. हाल ही में कनाडा ने भारतीय दूतावास से एक अधिकारी को निष्कासित कर दिया. इसके बाद जवाबी कार्रवाई में भारत ने भी कनाडा दूतावास के एक अधिकारी को निष्कासित कर दिया. कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने कहा कि सिख नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत सरकार का हाथ है. वहीं अक्टूबर में दोनों देशों के बीच होने वाली व्यापार वार्ता को दो दिन पहले ही कनाडा ने स्थगित कर दिया.

दरअसल भारत पिछले कुछ समय से कनाडा में खालिस्तान संबंधी गतिविधियों को प्रश्रय मिलने से चिंता जताता रहा था. कनाडा में कई ऐसे सिखों को भी पनाह मिली हुई है, जिन्हें भारत आतंकवादी मानता है. जब पिछले दिनों कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रूडो दिल्ली आए तो मोदी के साथ उनकी बातचीत में इस बारे में चिंता जाहिर की गई. कहा ये भी गया कि ये बातचीत तनाव वाली रही. बात तब और अजीब हो गई जबकि कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो अपने विमान में आई खराबी के कारण दो दिनों तक यहां होटल में फंसे रहे. फिर कनाडा के विमान से वह रवाना हुए. पर्यवेक्षकों का कहना है कि दोनों देशों के सख्त बयान ये जाहिर करते हैं कि भारत-कनाडा संबंध कितने निचले स्तर पर आ गए हैं.

भारत पिछले कुछ समय से कनाडा में खालिस्तान संबंधी गतिविधियों को प्रश्रय मिलने से चिंता जताता रहा था. कनाडा में कई ऐसे सिखों को भी पनाह मिली हुई है, जिन्हें भारत आतंकवादी मानता है. जब पिछले दिनों कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रूडो दिल्ली आए तो मोदी के साथ उनकी बातचीत में इस बारे में चिंता जाहिर की गई. कहा ये भी गया कि ये बातचीत तनाव वाली रही. बात तब और अजीब हो गई जबकि कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो अपने विमान में आई खराबी के कारण दो दिनों तक यहां होटल में फंसे रहे. फिर कनाडा के विमान से वह रवाना हुए. पर्यवेक्षकों का कहना है कि दोनों देशों के सख्त बयान ये जाहिर करते हैं कि भारत-कनाडा संबंध कितने निचले स्तर पर आ गए हैं.

१. भारत सरकार पर लगाया सिख नेता की हत्या का आरोप .
२. जी२० के दौरान भा मुलाकात के तनावपूर्ण होने की थी चर्चाएं .
३. कनाडा से चल रहे 'खालिस्तानी आंदोलन' का मुद्दा भी उठाया .
४. इसे लेकर भारत की चिंताओं से अवगत कराया था.
५. ट्रूडो के टर्म में रिश्ते बिगड़े हैं.
६. क्या ठंडे रिश्तों का असर अप्रवासी भारतीयों पर भी.
७. सिख समुदाय बड़ी सियासी ताकत भी बनकर उभरा है.
८. भारत का मानना है कनाडा खालिस्तानियों के प्रति नरम.
९. क्या ये सिखों के वोट के खातिर है.
१०. इंदिरा को झांकी में गलत तरीके से दिखाया था.

के सख्त बयान ये जाहिर करते हैं कि भारत-कनाडा संबंध कितने निचले स्तर पर आ गए हैं.

भारत का दावा है कि कनाडा खालिस्तानी समर्थकों के प्रति नरम है. उधर, कनाडा ने भारत पर घरेलू राजनीति में दखल देने का आरोप लगाया. उससे भी ज्यादा गंभीर आरोप ये कि भारत ने ही उसके देश में एक सिख नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या करा दी. ट्रूडो के कार्यकाल में यूं भी भारत के संबंध कनाडा से काफी ठंडे रहे हैं.

हालांकि भारत और कनाडा के बीच बड़े पैमाने पर व्यापार होता है. काफी संख्या में भारतीय वहां रहकर व्यापार या नौकरियां करते हैं. बहुत से भारतीय छात्र वहां पढ़ने के लिए जाते हैं. ये भी कहा जाता है कि कनाडा ऐसा देश भी है जहां भारतीय खासकर पंजाबी

अगर भारत और कनाडा के बीच संबंध और बिगड़े तो निश्चित तौर पर वहां रहने वाले भारतीयों पर तो असर पड़ेगा ही. साथ ही वहां जाने वाले भारतीयों के वीसा पर खासा प्रभाव पड़ सकता है.पिछले दिनों कनाडा में भारतीय विरोधी प्रदर्शन भी खूब देखे गए. भारतीय अप्रवासियों पर खालिस्तान समर्थकों द्वारा हमले की भी खबरें आईं.

भारत लगातार कनाडा से कहता रहा है कि ' कनाडा में रहने वाले खालिस्तान परस्त सिख अल गाववाद को बढ़ावा दे रहे हैं. भारतीय राजनयिकों के खिलाफ हिंसा भड़का रहे हैं, राजनयिक परिसरों को नुकसान पहुंचा रहे हैं. कनाडा में भारतीय समुदाय और उनके पूजा स्थलों को धमकी दे रहे हैं. संगठित अपराध, ड्रग सिंडिकेट और मानव तस्करी के साथ ऐसी ताकतों का गठजोड़ कनाडा के लिए भी चिंता का विषय होना चाहिए. ऐसे खतरों से भारत पिछले कुछ समय से कनाडा को आगाह करता रहा है. हालांकि ये भी माना जाता रहा है कि कनाडा इस दिशा में ज्यादा कुछ कर नहीं रहा.

जी२० के बाद जब एक संवाददाता सम्मेलन में ट्रूडो से पूछा गया कि मोदी के साथ उनकी सार्वजनिक बातचीत 'अजीब और अव्यवस्थित' क्यों थी, तो उन्होंने कहा कि हमने गंभीरता से स्पष्ट बातचीत की. इस बात के मायने भी अलग तरह से निकाले गए. अब साफ जाहिर है कि कनाडा लौटते ही जिस तरह की कार्रवाई भारतीय राजनयिक के खिलाफ कनाडा ने की, वह भारत के साथ उसके तल्ख हो गए रिश्तों का संकेत है. कई थिंक टैंक और विदेशी मामलों के एक्सपर्ट कह चुके हैं कि ऐसा महसूस हो रहा है कि दोनों देशों के बीच सबकुछ ठीक नहीं चल रहा. उनके रिश्ते खराब स्थिति में हैं. दोनों सरकारें काफी तनावपूर्ण संबंधों से गुजर रही हैं. हालांकि बड़ी संख्या में भारतीयों का कनाडा में होना ऐसी तनाव वाली स्थितियों के बीच बेहतर नहीं होगा.

हाल के वर्षों में भारत-कनाडा संबंध तनावपूर्ण

साल २०१४ में प्रधानमंत्री बनने से पहले जस्टिन ट्रूडो (GETTY IMAGES)

क्यों रहे हैं. हालांकि ये आज से नहीं है बल्कि पिछले कुछ दशकों में रिश्तों में तनाव घुलता गया है. शुरुआत तब हुई जबकि कनाडा स्थित खालिस्तानी अलगाववादी समूह द्वारा १९८५ में एयर इंडिया विमान पर बम विस्फोट किया गया. ०-३२ साल पहले एयर इंडिया बम धमाके की जांच अब तक नतीजे पर नहीं पहुंच पायी.

२०१५ में ट्रूडो के कनाडा के प्रधानमंत्री बनने के बाद दोनों देशों के संबंधों में रिश्ते बिगड़े और ठंडे हुए हैं और फिलहाल सबसे निचले स्तर पर पहुंच गए लगते हैं. भारत सरकार मानती रही है कनाडा सरकार कनाडा में खालिस्तानी समर्थकों के प्रति नरम है और भारतीय हितों के खिलाफ काम कर रही है. कनाडा को ये बात भी चुभती रही है कि भारत कथित तौर पर हिंदू मंदिरों में तोड़फोड़ की बात करके उसके आंतरिक मामलों में दखल देने की कोशिश करता रहा है.

भारत ने इस बात पर सख्त विरोध भी जताया था कि कनाडा में भारतीय सिखों के लिए एक स्वतंत्र राज्य की मांग पर तथाकथित जनमत संग्रह आयोजित करने की अनुमति क्यों दी गई. ये उसी दिन आयोजित हुआ था जब दिल्ली में मोदी और ट्रूडो की मुलाकात हुई थी.

राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि वोट बैंक की खातिर ट्रूडो की लिबरल पार्टी कनाडाई सिखों और कनाडाई सिख राजनेता जगमीत सिंह की न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी के समर्थन पर निर्भर है. सिंह ने एक बार खालिस्तानी अलगाववादी रैली में भाग लिया था.

भारत ने तब कूटनीतिक विरोध जताया था जब कनाडा के ब्रैम्पटन में एक परेड में एक झांकी दिखाई गई, जिसमें पूर्व भारतीय प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी को खून से सनी साड़ी में दिखाया गया, पगड़ी पहने लोग उन पर बंदूकें ताने हुए थे. झांकी में एक तख्ती पर लिखा थाः 'श्री दरबार साहिब पर हमले का बदला.' तब विरोध जताने पर कनाडाई अधिकारियों ने कहा कि यह झांकी घृणा अपराध नहीं है.

जिस तरह कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रूडो ने सीधे तौर पर सिख नेता की हत्या के लिए भारत को दोषी बताया है, वो बयान वाकई दुस्साहिक और अपरिपक्व सा है. ऐसा सीधा आरोप तो भारत के दुश्मन देश कहे जाने वाले चीन या पाकिस्तान ने कभी इस तरह नहीं लगाए. ये कहकर ट्रूडो इस तरह पेश आए मानो वह भारत के साथ खुद रिश्ते खराब करना चाहते हैं और दुश्मनी के रवैये पर उतारू हैं. एक नेता के तौर पर ट्रूडो ने इस पूरे मामले में खुद को जैसे पेश किया है, वो आमतौर पर किसी बडे देश के राष्ट्रप्रमुखों में कम नजर आता है.

अच्छे संबंधों से दोनों देशों का भला

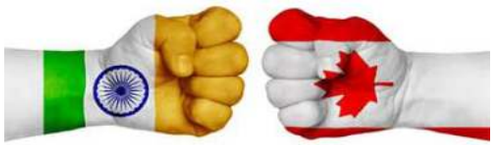

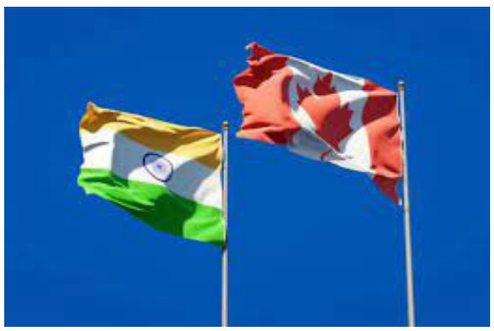

अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों के भारत से भी अच्छे संबंध हैं और कनाडा से भी. वे ऐसी स्थिति नहीं चाहेंगे कि अंततः उन्हें भारत और कनाड़ा में से किसी एक को चुनना पड़े.

खालिस्तानी आतंकवादी हरजीत सिंह की हत्या होने के कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के आरोप के बाद दोनों देशों के संबंधों में तनाव बढ़ता ही जा रहा है. दोनों पक्षों द्वारा एक-दूसरे के वरिष्ठ राजनयिकों को देश से निकालने के फरमान के बाद गुरुवार को भारत ने कनाडा के लोगों के लिए बीजा सेवाएं सस्पेंड कर संकेत दिए हैं कि वह इस मामले को लेकर बेहद गंभीर है. ट्रूडो ने इस मसले पर बेहद राजनीतिक अपरिपक्वता का परिचय दिया है. भारत लगातार खासकर खालिस्तान समर्थकों की भारत विरोधी गतिविधियों को लेकर कनाडा सरकार को अल्टीमेटम देते आया है. लेकिन ट्रूडो ने कार्रवाई करना तो दूर, उलटा भारत पर ही आरोप मढ़ दिया.

जस्टिन ट्रूडो के इस रुख की एक बड़ी वजह राजनीतिक भी है. कनाडा की ३३८ सदस्यीय संसद में ट्रूडो की लिबरल पार्टी (१५८ सीटें) को बहुमत हासिल नहीं है. उनकी सरकार न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी (२५) के समर्थन से चल रही है, जिसका प्रमुख जगमीत सिंह खालिस्तान समर्थक माना जाता है. देश में ट्रूडो की लोकप्रियता की रेटिंग भी बहुत कम हैं. अगर आज चुनाव होते हैं तो वे किसी भी स्थिति में चुनाव जीत नहीं सकते. ऐसे में उन्हें अगले चुनाव के लिए भी न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी की समर्थन की दरकार रहेगी. लिहाजा, ट्रूडो का यही स्टैंड बना रहेगा और इसलिए कनाडा में सरकार बदलने तक दोनों देशों के रिश्तों में विशेष सुधार की कोई गुंजाइश नजर नहीं आती. वहां अगले चुनाव २०२५ में होने हैं.

इस समस्या का समाधान पूरी तरह से ट्रूडो के पाले में है. हालांकि इससे पहले भी उन्होंने कोई परिपक्वता नहीं दिखाई और न ही उनसे अब किसी समझदारी की उम्मीद की जा सकती है. हालांकि इस बात की संभावना हो सकती है कि पश्चिमी देशों में उनके शुभचिंतक जैसे अमेरिका के बाइडेन और ब्रिटेन के ऋषि सुनक उन्हें अपने रुख को नरम करने की सलाह दें, क्योंकि अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों के भारत से भी अच्छे संबंध हैं और कनाडा से भी. वे ऐसी स्थिति नहीं चाहेंगे कि अंततः उन्हें भारत और कनाड़ा में से किसी एक को चुनना पड़े.

कनाडा और भारत में एक-दूसरे के प्रति तल्खी इससे पहले भी रही है, लेकिन इसके बावजूद दोनों देश मुक्त व्यापार समझौता (ट्रेड डील) करने को उत्सुक थे. इससे दोनों को फायदा होता. लेकिन दुर्भाग्य से इसे अब दोनों ही पक्षों ने ताक पर रख दिया है. कनाडा में काफी तादाद मैं भारतीय रहते हैं. इनमें सिख भी काफी हैं और उनमें से अधिकांश का अतिवादी गतिविधियों या विचारों से कोई लेना-देना नहीं है. बहुत सारे भारतीय वहां कार्यरत हैं और लाखों भारतीय छात्र वहां पढ़ते हैं. ऐसे में दोनों देशों के तनाव का अनावश्यक खामियाजा ट्रेडर्स, कामगारों और छात्रों को भुगतना पड़ सकता है.

२०२२ में कनाडा में ५.५ लाख विदेशी छात्र पढ़ने पहुंचे थे. इनमें २.२६ लाख छात्र भारत के थे. विदेशी छात्रों के कनाडा में अध्ययन करने का फायदा वहां की अर्थव्यवस्था को भी होता है. विदेशी छात्र कुल मिलाकर हर साल ३० अरब डॉलर कनाडा

की अर्थव्यवस्था में डालते हैं, जिसमें एक बड़ा हिस्सा भारत से जाता है.

कनाडा पेंशन प्लान इन्वेस्टमेंट बोर्ड कनाडा का सबसे बडा फंड मैनेजर है. वहां के पेंशन फंडों का भारत के शेयर बाजार में काफी पैसा लगा हुआ है. बोर्ड के अनुसार भारत के ७० लिस्टेड स्टॉक्स में पेंशन फंडों का कुल मिलाकर २१ अरब डॉलर (१.७४ लाख करोड़ रुपए) लगे हुए हैं.

हाई कमीशन ऑफ इंडिया वेबसाइट के अनुसार कनाडा में करीब १६ लाख भारतवंशी और करीब ७ लाख प्रवासी भारतीय हैं. यानी २३ लाख लोगों का वहां इंडियन डायोस्परा है. वर्ल्ड बैंक के अनुसार २०२२ में वहां से भारतीयों ने पर्सनल रेमिटेंस के रूप में ८६ करोड़ डॉलर (७,१५० करोड़ रु.) भारत भेजे.

एक मशीन के कारण भारत-कनाडा रिश्तों में ५० साल पहले कैसे शुरू हुई कड़वाहट...

पूर्व पीएम इंदिरा गांधी के समय में ही दोनों देशों के रिश्तों में तब तल्खी आ गई, जब तब के कनाडाई पीएम पियरे ट्रूडो ने एक मशीन को लेकर भारत पर कई आरोप लगा दिए थे.

भारत और कनाडा के रिश्तों की तल्खी लगातार बढ़ती जा रही है. दोनों देशों की ओर से राजनयिक निष्कासन के बाद भारत लगातार कनाडा पर दबाव बनाने की नीति पर चल रहा है. भारत ने २१ सितंबर २०२३ को कनाडा के वीजा आवेदन प्रक्रिया पर रोक लगा दी है. ये पहली बार नहीं है, जब भारत और कनाडा के बीच तनातनी का माहौल बना है. दोनों देशों के बीच कड़वाहट की शुरुआत का इतिहास करीब ५० साल पुराना है. कनाडा में खालिस्तान आंदोलन को समर्थन मिलना भी कोई नई बात नहीं है. कनाडा मौजूदा पीएम जस्टिन ट्रूडो के पिता और पूर्व प्रधानमंत्री पियरे ट्रूडो के समय से ही खालिस्तान आंदोलन का समर्थन करता आ रहा है.

भारत और कनाडा के बीच कड़वाहट की शुरुआत साल १९७४ में तब हुई थी, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कनाडा से मिली एक अहम मशीन का इस्तेमाल अपने तरीके से किया. मशीन का इस्तेमाल बदलने पर पूर्व प्रधानमंत्री पियरे ट्रूडो नाराज हो गए थे. उन्होंने सार्वजनिक तौर पर अपनी नाराजगी का इजहार भी किया था. सवाल ये उठता है कि आखिर दोनों देशों के रिश्ते एक मशीन के कारण इतने तल्ख कैसे हुए कि कनाडा ने भारत के अलगाववादी संगठन को अपने देश में समर्थन देना शुरू कर दिया? जानते हैं कि ये मशीन इतनी अहम क्यों थी और ये कड़वाहट का कारण कैसे बनी?

सिखों ने ६० के दशक में भारत से धीरे-धीरे कनाडा का रुख करना शुरू कर दिया था. वहीं, ७० के दशक में भारत में अलग खालिस्तान देश की मांग को लेकर आंदोलन शुरू हो चुका था. वहीं, धीरे-धीरे साल १९७० तक सिखों की बड़ी आबादी कनाडा में बस चुकी थी. सिखों की तादाद बढ़ने के साथ कनाडा में भी खालिस्तान आंदोलन की जमीन तैयार होने लगी थी. इसी दौरान भारत सरकार ने कनाडा से कनाडा ड्यूटेरियम यूरेनियम रिएक्टर यानी CANDU Reactor मंगाया. ये रिएक्टर शांतिपूर्ण न्यूक्लियर एनर्जी हासिल करने के लिए मंगाया गया था. बाद में यही मशीन दोनों देशों के बीच कड़वाहट की वजह बन गई.

अब सवाल ये उठता है कि परमाणु ऊर्जा हासिल करने के लिए मंगाई गई मशीन दो देशों के संबंध खराब करने की वजह कैसे बन गई. दरअसल, साल १९७४ में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की सरकार ने राजस्थान के पोखरण में परमाणु परीक्षण

Image tweeted by @ahmedpatel

किया. इस परीक्षण पर कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री पियरे ट्रूडो भारत से काफी नाराज हो गए थे. उन्होंने आरोप लगाया कि भारत ने परीक्षण के लिए कनाडा से कनाडा ड्यूटेरियम यूरेनियम रिएक्टर का इस्तेमाल किया. भारत ने ये रिएक्टर असैन्य इस्तेमाल के लिए मंगाया था, लेकिन इसका सैन्य इस्तेमाल किया. पियरे ट्रूडो ने इसे विश्वासघात करार दिया. साथ ही उन्होंने कहा कि परीक्षण में इस्तेमाल किया गया प्लूटोनियम कनाडाई सहायता प्राप्त परमाणु रिएक्टर CIRUS से उत्पादित था. इसके बाद से ही भारत और कनाडा के रिश्ते खराब होने शुरू हो गए.

पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद कनाडा ने भारत से किसी भी तरह के परमाणु संबंधों पर प्रतिबंध लगा दिया था. समय के साथ भारत के अमेरिका, फ्रांस और रूस समेत सात देशों के साथ परमाणु सहयोग समझौते हुए, लेकिन कनाडा इस मामले में अपने हाथ खींचे ही रहा. भारत के पहले परमाणु परीक्षण के ३६ साल बाद साल २०१० में कनाडा ने भारत के साथ परमाणु सहयोग समझौता फिर से बहाल किया. तब कनाडा भारत के साथ परमाणु सहयोग समझौते वाला आठवां देश बना. बता दें कि कनाडा दुनिया का सबसे बड़ा यूरेनियम उत्पादक देश भी है. इससे पहले सितंबर २००९ में न्यूक्लियर सप्लायर्स ग्रुप ने भारत पर ३४ साल से लगी पाबंदी हटा ली, जिसके बाद भारत को असैनिक (शेष पेजः २६ पर)

वेज कोल्हापुरी

सामग्रीः
गाजर - १
आलू - १
शिमला मिर्च - १
फूल गोभी - १ कप
टमाटर - ३ (१५० ग्राम)
अदरक - १ इंच टुकडा.
मटर - ¼ कप
क्रीम - ½ कप
सूखा नारियल - ¼ कप कद्दूकस किया हुआ
तेल - सब्जियां तलने और सब्जी बनाने के लिए
हरा धनिया - २-३ बडे चम्मच
हींग - १ पिंच
जीरा -½ छोटी चम्मच
हल्दी पाउडर - ¼ छोटी चम्मच
धनिया पाउडर - १ छोटी चम्मच
गरम मसाला - ¼ छोटी चम्मच
लाल मिर्च साबुत - २
तिल - १ टेबल स्पून
नमक - १ छोटी चम्मच या स्वादानुसार
लाल मिर्च पाउडर - ½ छोटी चम्मच

विधिः सब्जियों को धोकर, छोटा छोटा काट लीजिये. टमाटर, हरी मिर्च और अदरक को धोइये और मिक्सी में पीस कर पेस्ट लीजिये. कढ़ाई में तेल डाल कर गरम कीजिये. गरम तेल में कटे हुए आलू, गोभी, गाजर और शिमला मिर्च बारी-बारी से हल्की ब्राउन होने तक तल लीजिए और एक प्याले में निकाल ते जाइये. धीमी आंच पर, एक दूसरी कढाई में तिल और जीरा डालकर हल्का सा भूनें अब इसमें कद्दूकस हुआ नारियल भी डाल दीजिए और हल्का सा कलर चेंज होने तक भून लीजिए. मसाला भून जाने पर मसाले के ठंडा होने के बाद इसे पीस लीजिए.

कढाई में २ चम्मच तेल डालकर गरम कीजिए, गरम तेल में हींग, हल्दी पाउडर, धनियां पाउडर डाल कर मसाले को हल्का सा भून लीजिए. अब इसमें टमाटर और अदरक का पेस्ट डाल दीजिए. लाल मिर्च पाउडर और साबुत लाल मिर्च भी डाल कर तब तक भूनिये जब तक, मसाला तेल न छोड़ने लगे, मसाला भून जाने पर इसमें तिल, जीरा और नारियल का पाउडर डाल दीजिए. हल्का सा भूनिये, अब क्रीम डाल कर मसाले को लगातार चलाते हुये २-३ मिनिट और भूनिये.

पनीर पुलाव

सामग्री :
- १.५ कप चावल
- २५० ग्राम पनीर, चौकोर टुकड़ो में कटा
- एक प्याज, पतला कटा हुआ
- अदरक का आधा इंच बड़ा टुकड़ा
- लहसुन की ३ कलियां, छिली
- एक हरी मिर्च, कटी
- एक चम्मच पुलाव या बिरयानी मसाला
- २ तेज पत्ता
- १/४ कप हरी मटर
- एक चम्मच नींबू का रस
- एक बड़ी चम्मच धनिया पत्तियां, बारीक कटी
- घी या रिफाइन
- नमक आवश्यकता अनुसार

विधिः- सबसे पहले चावल को धोकर ३० मिनट के लीये पानी में भिगोकर रख दीजिये. अब अदरक, लहसुन और हरी मिर्च को पीस लीजिए. अब कड़ाही में घी या रिफाइंन डालकर गैस पर गर्म होने दीजिये . फिर घी में पनीर डालकर मध्यम आंच पर सुनहरा होने तक फ्राई कर लीजिए. इसके बाद एक अलग पैन में घी डालें और गैस पर गर्म करने रखें. अब घी में तेज पत्ते डालें. जैसे ही तेज पत्ते का रंग ब्राउन हो जाए तो इसमें प्याज डालकर हल्के ब्राउन होने तक मध्यम आंच पर फ्राई कर लीजिए . फिर प्याज में अदरक, लहसुन और हरी मिर्च का पेस्ट डालकर १० सेकंड पका लीजिए. इसके बाद पैन में धनिया पत्तियां और पुलाव या बिरयानी मसाला डालकर ५ सेकंड पकने दे. फिर चावल का पानी निकाल चावल को पैन में डालें और सारी सामग्री अच्छी तरह मिला लीजिए. अब चावल में पानी और नमक डाल कर पैन को ढककर चावल को धीमी आंच पर पकने दीजिये. जब चावल नर्म होकर पक जाएं तो इसमें नींबू का रस डालकर मिलाएं और इनका सारा पानी सुखा लीजिए. इसके बाद चावल में फ्राइड पनीर डाल कर मिलाएं और पुलाव को ढककर धीमी आंच पर ५ मिनट पकने दे . फिर गैस बंद कर दीजिये . पनीर पुलाव आपका तैयार हैं अब इसे रायते या किसी भी चटनी के साथ गर्मागर्म सर्व करें.

आलू कचोरी

सामग्रीः
मैदा - २ कप /२५० ग्राम
नमक - ½ छोटा चम्मच(स्वाद -अनुसार)
अजवायन - ½ छोटा चम्मच
तेल - ¼ कप (६०ग्राम) तलने के लिए
आलू - ३-४ उबले हुए (२५० ग्राम)
तेल - १ बड़ा चम्मच
अदरक - १ छोटा चम्मच, कद्दूकस किया हुआ
हरी मिर्च - २, बारीक कटी हुई
धनिया पाउडर - १ छोटा चम्मच
जीरा पाउडर - ½ छोटा चम्मच
हल्दी पाउडर - ¼ छोटा चम्मच
नमक - ½ छोटा चम्मच
लाल मिर्च पाउडर - ½ छोटा चम्मच
गरम मसाला - ½ छोटा चम्मच
अमचूर पाउडर - ½ छोटा चम्मच
हरा धनिया - २ बड़े चम्मच, बारीक कटा हुआ

विधिः- सबसे पहले कचौरी के लिए आटा गूंथ लें। एक बाउल में मैदा, नमक, अजवायन और तेल डाल कर अच्छी तरह मिला लें। फिर धीरे-धीरे पानी डालते हुए नरम आटा गूंथ लें। आटे को ढककर २० मिनट के लिए रख दीजिये। अब स्टफिंग के लिए, एक कढ़ाई में तेल गर्म करें। इसमें अदरक, हरी मिर्च, धनिया पाउडर, जीरा पाउडर, हल्दी पाउडर, नमक, लाल मिर्च पाउडर, गरम मसाला और अमचूर पाउडर डालकर अच्छी तरह मिला लें। फिर उबले हुए आलू डालकर अच्छे से भून लीजिए। आटा गूंथने के बाद, इसे थोड़ा सा तेल लगाकर मसल लें। फिर आटे को बराबर भागों में बांट लें। प्रत्येक भाग को गोल आकार में बेल लीजिए। अब एक बेली हुई कचौरी के बीच में २ बड़े चम्मच स्टफिंग रखें। फिर कचौरी को बन्द करके दोनों किनारों को अच्छे से चिपका दीजिये ।

अब एक कड़ाही में तेल गर्म करें। जब तेल गरम हो जाए, तो कचौरी डालकर सुनहरी भूरी होने तक तल लीजिए । अब हमारा आलू खस्ता कचोरी तैयार है। अब गरमागरम कचौरी को चाट मसाला और हरा धनिया से गार्निश करके परोसें।

पापड़ी चाट

सामग्रीः-
२५० ग्राम मैदा
१ छोटा चम्मच नमक
१/२ छोटा चम्मच अजवायन
१०० मिली तेल
पानी (मैदा गूंथने के लिए)
चाट बनाने की सामग्रीः-
४ आलू (उबले हुए)
५०० ग्राम दही
स्वाद अनुसार धनिया चटनी
स्वाद अनुसार इमली की चटनी
स्वाद अनुसार लाल मिर्च पाउडर
स्वाद अनुसार जीरा पाउडर
स्वाद अनुसार नमक
२ छोटे चम्मच बारीक सेव

विधिः- पापड़ी बनाने के लिये सबसे पहले एक प्याले में मैदा ले लीजिये. अब इसमें पापड़ी बनाने की सारी सामग्री डालकर आटा को सक्त गूंथ लीजिये. इसे १० मिनट के लिये किसी साफ कपड़े से ढक कर रख दीजिये. आटे की लोईयाँ बनाकर इसे बेल लीजिये.

अब इसे समोसे का आकार देते हुए तिकोना मोड़ लीजिये और फिर से एक बार बेल लीजिये ताकि यह मोटी न रहे. अब कड़ाही में तेल गर्म कर लीजिये और इन सभी पपड़ियों को मध्यम आँच पर सुनहरा होने तक तल लीजिये. हमारी पपड़ियाँ तलकर तैयार हो गई हैं. जब ये ठंडी हो जायेंगी तो हम चाट बनाना शुरू करेंगे. एक प्लेट में ४ पपड़ी थोड़ी तोड़कर डालिये और फिर इसमें स्वाद अनुसार चाट की सारी सामग्री डालकर परोसिये

सड़कों से कमाई के लिए सरकार ने बनाया २ लाख करोड़ का प्लान!

अगले तीन सालों में सालाना लगभग ४,००० से ४,५०० किलोमीटर (२,७९६.२ मील के बराबर) नई सड़कें बनाने की उम्मीद है. सरकार इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (इनविट) या टोल-ऑपरेट-ट्रांसफर (टीओटी) मॉडल का यूज कर इन असेट्स से रेवेन्यू जेनरेट कर सकती है.

सरकार लगातार कमाई बढ़ाने को लेकर फोकस कर रही है. कई योजनाएं भी हैं जिनमें सरकार सफल भी हुई है. अब केंद्र सरकार ने देश के खजाने को भरने के लिए नया तरीका अपनाने पर विचार कर रही है. सरकार ने ऐसा प्लान बनाने जा रही है कि जिससे सड़कों से कमाई हो सके. रेटिंग एजेंसी केयरएज के अनुसार भारत सरकार आने वाले सालों में हाईवेज को मॉनेटाइज कर लगभग दो ट्रिलियन रुपये (२४.१ बिलियन डॉलर के बराबर) का रेवेन्यू जेनरेट करने की प्लानिंग पर काम कर रही है.

एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया को अगले तीन सालों में सालाना लगभग ४,००० से ४,५०० किलोमीटर (२,७९६.२ मील के बराबर) नई सड़कें बनाने की उम्मीद है. सरकार इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (इनविट) या टोल-ऑपरेट-ट्रांसफर (टीओटी) मॉडल का यूज कर इन असेट्स से रेवेन्यू जेनरेट कर सकती है.

सरकार की मौजूदा योजना, जो पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल पर बेस्ड है, सफल रही है क्योंकि मार्च २०२० से पहले सौंपी गई ८८ फीसदी रोड प्रोजेक्ट्स अब चालू हैं और उनका मॉपनेटाइजेशन किया जा सकता है. रेटिंग एजेंसी ने कहा कि २०२० से पहले की अवधि में आवंटित परियोजनाओं में से केवल १२ फीसदी में उनके ऑपरेटरों की कमजोरियों के कारण देरी हुई है. मार्च २०२० से पहले सौंपी गई ८८ फीसदी सड़क परियोजनाओं ने सफलतापूर्वक ऑपरेशनल स्टेटस हासिल कर लिया है. ध्यान देने वाली बात ये है कि इनमें से १२ फीसदी प्रोजेक्ट्स देरी हुई है, और एक महत्वपूर्ण अनुपात, यानी ७५ फीसदी डिलेड प्रोजेक्ट्स कमजोर स्पांसर्स की वजह से हुए हैं.

केयरएज रेटिंग्स के निदेशक मौलेश देसाई ने कहा कि जबकि मजबूत स्पांसर्स को हेल्दी बैलेंस शीट इंडिकेटर्स से प्रॉफिट होने की उम्मीद है, जो उन्हें फाइनेंशियल फ्लेक्सिबिलिटी प्रदान करते हैं, पर्याप्त अंडर कंस्ट्रक्शन पोर्टफोलियो और सख्त मंजूरी शर्तों के साथ कमजोर से बेहतर मजबूत से थोड़े हल्के स्पांसर्स को बढ़े फाइनेंसिंग रिस्क का सामना करना पड़ता है.

नेशलन हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने नवंबर २०२१ में एक इनविट लॉन्च किया और दिसंबर २०२२ तक लगभग १०२ बिलियन रुपये जुटाए. स्थानीय मीडिया ने बताया कि भारत सरकार वित्तीय वर्ष की समाप्ति से पहले इनविट्स की एक और किश्त के माध्यम से अतिरिक्त १०० बिलियन रुपये जुटाने की योजना बना रही है.

बैंक ने कैब ड्राइवर के खाते में गलती से भेज दिए 9000 करोड़

नई दिल्लीः तमिलनाडु मर्केंटाइल बैंक (TMB) के प्रबंध निदेशक और सीईओ एस कृष्णन ने बैंक अपने पद से शुक्रवार को इस्तीफा दे दिया. उन्होंने अपना इस्तीफा बैंक द्वारा चेन्नई में एक कैब ड्राइवर को गल ती से ९,००० करोड़ रुपये क्रेडिट करने के कुछ दिनों बाद दिया है. एस कृष्णन ने अपने इस्तीफे के पीछे व्यक्तिगत कारण बताया है. कृष्णन ने अपने त्याग पत्र में लिखा, 'हालांकि मेरा अभी भी लगभग दो-तिहाई कार्यकाल बाकी है, व्यक्तिगत कारणों से मैंने बैंक के प्रबंध निदेशक और सीईओ के पद से इस्तीफा देने का फैसला किया है.' कृष्णन ने सितंबर २०२२ में बैंक के प्रमुख के रूप में कार्यभार संभाला था.

थूथुकुडी स्थित बैंक के निदेशक मंडल ने गुरुवार को एक बैठक की और उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया और इसे भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) को भेज दिया. बैंक ने एक बयान में कहा, 'आरबीआई से मार्गदर्शन/सलाह मिलने तक एस कृष्णन एमडी और सीईओ बने रहेंगे, जिसे उचित समय पर सूचित किया जाएगा.' यह घटनाक्रम तमिलनाडु मर्केंटाइल बैंक के खाताधारक एक कैब ड्राइवर के खाते में गलती से ९,००० करोड़ रुपये जमा होने के एक हफ्ते बाद आया है.

बीते ९ सितंबर को कैब ड्राइवर राजकुमार को एक मैसेज मिला कि तमिलनाडु मर्केंटाइल बैंक ने उसके अकाउंट में ९,००० करोड़ रुपये जमा किए हैं. पहले तो राजकुमार को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ. शुरुआत में उसे लगा कि यह एक फ्रॉड है. लेकिन इसकी सत्यता की जांच के लिए राजकुमार ने अपने दोस्त को २१,००० रुपये ट्रांसफर करने की कोशिश की, जो सफल हो गया. तब उसे लगा कि सही में उसके बैंक खाते में पैसे ट्रांसफर कर दिए गए हैं. हालांकि कुछ ही देर में शेष राशि बैंक द्वारा काट ली गई. इस साल जून में, आयकर विभाग ने बैंक पर एक सत्यापन प्रक्रिया को अंजाम दिया था और कथित तौर पर कुछ अनियमितताओं को चिह्नित किया था.

१०० करोड़ की मानहानि का नोटिस

बीजेपी सांसद मेनका गांधी द्वारा इस्कॉन की गौशाला से कसाइयों को गाय बेचे जाने का गंभीर आरोप लगाए जाने के बाद इस मामले में अब संस्था की तरफ से भी जवाबी एक्शन लिया गया है. इस्कॉन ने मेनका गांधी को १०० करोड़ की मानहानि का नोटिस (100 crore defamation notice) भेजा है. इस्कॉन की तरफ से कहा गया कि हमारे भक्तों, समर्थकों और शुभचिंतकों का विश्वव्यापी समुदाय इन अपमानजनक, निंदनीय और दुर्भावनापूर्ण आरोपों से बहुत दुखी है. हम इस्कॉन के खिलाफ भ्रामक प्रचार के खिलाफ न्याय की तलाश में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे.'

इससे पहले पूर्व केंद्रीय मंत्री और एनिमल राइट्स एक्टिविस्ट मेनका गांधी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें वह कह रही हैं कि इस्कॉन सबसे बड़ा धोखा है. ये लोग गौशाला की देखरेख करते हैं और सरकार इन्हें हर तरीके से मदद देती है, जिसमें जमीन भी शामिल है. इसके बावजूद जो गाय दूध नहीं देतीं, उन्हें कसाइयों के हवाले कर देते हैं.

मेनका आंध्र प्रदेश के अनंतपुर स्थित इस्कॉन की एक गौशाला का जिक्र करते हुए कहती हैं, 'एक बार मैं वहां गई थी. पूरी गौशाला में एक भी गाय ऐसी नहीं मिली जो दूध न देती हो. न ही कोई बछड़ा मिला. इसका मतलब साफ है कि वो लोग (इस्कॉन) दूध न देने वाली गायों और बछड़ों को बेच देते हैं'. मेनका गांधी ने आगे कहा, 'इस्कॉन अपनी सभी गायों को कसाइयों को बेचता है. जैसा सलूक ये लोग कर रहे हैं, ऐसा कोई नहीं करता है. यही लोग सड़क पर 'हरे राम हरे कृष्णा' गाते हुए फिरते हैं और कहते हैं कि हमारा पूरा जीवन दूध पर निर्भर है. संभवतः कसाइयों के हाथ जितनी गाय इन्होंने बेची है, उतनी किसी ने नहीं बेची.'

सैलानियों से परेशान हो गया है यूरोप

शहरों की मुसीबत बढ़ती जा रही है

पेरिस हो या वेनिस, रोम हो या एथेंस, फ्लोरेंस या फिर एम्सटरडम. यूरोप दुनिया भर के सैलानियों का मक्का है. लेकिन अब यूरोप इन्हीं सैलानियों से तंग आ गया है और उन्हें नियंत्रित करने के लिए कदम उठा रहा है. वेनिस जाकर गोंडोला में बैठना ऐसा अनुभव है जिसे शायद हर कोई लेना चाहता है. और पानी पर जिंदगी कैसे चलती है, यह देखने के लिए वेनिस से अच्छी जगह दुनिया में कोई नहीं है. इसीलिए तो इस शहर में हमेशा सैलानी उमड़े रहते हैं. इस शहर की आबादी लगभग ५० हजार है. २०१९ में यहां आने वाले सैलानियों की संख्या ५५ लाख से ज्यादा रही है. ऐसे में शहर के लोगों की शिकायत है कि उनका शहर तो उनका है ही नहीं. यह तो बस सैलानियों का ठिकाना है. इस भीड़ को कम करने के लिए वेनिस अगले साल से सिर्फ एक दिन के लिए शहर में आने वाले सैलानियों पर अलग से फीस लगाने की तैयारी कर रहा है.

वेनिस की तरह यूरोप के कई शहर आज ओवरटूरिज्म यानी जरूरत से ज्यादा टूरिज्म के शिकार हैं. फ्रांस भी अपने यहां सैलानियों की संख्या को नियंत्रित करने के लिए कदम उठाएगा. फ्रांस दुनिया भर में सैलानियों का सबसे पसंदीदा ठिकाना है. उसके ऐतिहासिक और प्राकृतिक स्थलों को देखने के लिए पूरी दुनिया से लोग पहुंचते हैं. पीक सीजन में सैलानियों के रेले से पर्यावरण, स्थानीय लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी और खुद सैलानियों के अनुभव भी प्रभावित होते हैं.

दुब्रोवनिक के सागर में फैला प्लास्टिक का कचरा

आड्रियान सागर के तट पर क्रोएशिया का दुब्रोवनिक बसा है. यहां की आबादी की बात करें तो ४१ हजार के आसपास है लेकिन २०१९ में यहां आने वाले पर्यटकों की तादाद १४ लाख रही. २०११ में जब से यहां मशहूर टीवी सीरीज गेम ऑफ थ्रोन्स के कुछ हिस्से फिल्माए गए हैं तब से यहां आने वाले लोग यकायक बढ़ गए हैं. हद से ज्यादा सैलानियों की समस्या से आज यूरोप के सभी बड़े पर्यटन स्थल जूझ रहे हैं. रोम हो या बार्सिलोना, एथेंस या फिर फ्लोरेंस, यूरोप के बहुत सारे शहर आज ओवरटूरिज्म से परेशान हैं. कोरोना महामारी के दौरान जब पूरी दुनिया थम गई थी तो जिन सेक्टरों पर सबसे ज्यादा

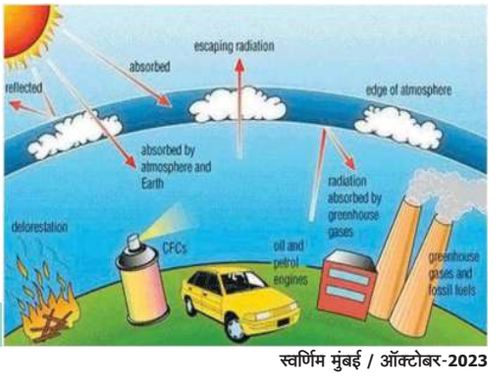

असर हुआ, टूरिज्म उनमें से एक था. लेकिन अब बहुत कुछ वापस पटरी पर लौट चुका है और घुमक्कड़ लोग नए नए रिकॉर्ड बना रहे हैं. अकेले ग्रीस में पिछले साल गर्मियों के दौरान दस लाख सैलानी आए. यह हाल तब है जब दुनिया भर में महंगाई बढ़ती जा रही है, यूक्रेन में जारी युद्ध की वजह से एक तरह की अस्थिरता है और जलवायु परिवर्तन की वजह से ग्रीस में गर्मियों के दौरान जंगलों की आग भड़कती है. वर्ल्ड टूरिज्म ऑर्गेनाइजेशन का कहना है कि बीते साल ९६ करोड़ लोग विदेश घूमने गए. सोचिए इसमें अपने देश के भीतर घूमने वालों को भी मिला दें तो आंकड़ा कहां जाकर पहुंचेगा.

यह बात सही है कि सैलानियों के आने से पैसा आता है और अर्थव्यवस्था मजबूत होती है. लेकिन इसकी कीमत स्थानीय लोग चुकाते हैं, उन्हें रहने के लिए किफायती दामों पर मकान नहीं मिलते, क्योंकि मकान मालिक उन मकानों को होटल या गेस्ट हाउस बनाकर ज्यादा कमाना चाहते हैं. पर्यटकों की भीड़ से सड़कें जाम हो जाती हैं, शहर में आना जाना मुश्किल होता है. कई बार स्थानीय ईको सिस्टम और पर्यावरण को भी सैलानियों की वजह से नुकसान होता है. और जब भीड़ बहुत ज्यादा हो तो खुद पर्यटक भी किसी जगह को ना ठीक से देख पाते हैं और ना उसका आनंद ले पाते हैं. जब भीड़ ज्यादा होती है तो हर जगह सैलानियों की लंबी लाइन से होकर गुजरना पड़ता है. इसमें समय और ऊर्जा, दोनों की बर्बादी होती है.

और आखिर में इस सबकी कीमत हमार पर्यावरण और हमारी पृथ्वी को चुकानी पड़ती है. दुनिया में जितना भी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है, उसमें से आठ प्रतिशत के लिए टूरिज्म सेक्टर जिम्मेदार है. इसमें सबसे ज्यादा योगदान विमानों का है. इसके अलावा बड़े बड़े क्रूज शिप भी खासा उत्सर्जन करते हैं. फिर सैलानियों के ठहरने के लिए होटल, खाने और सुवेनियर बनाने में भी उत्सर्जन होता है. कुल मिलाकर ओवरटूरिज्म अपने आप में कई समस्याओं को साथ लेकर आता है. इसीलिए इसके खिलाफ आवाजें लगातार तेज हो रही हैं.

दुनिया को जानने और समझने का सबसे अच्छा तरीका है, दुनिया घूमना. लेकिन घूमने के लिहाज से यह जानना जरूरी है कि कहां जाया जाए और कब जाया जाए. ऐसा ना हो आप किसी ऐसे टापू पर जाने का प्लान बना रहे हो जहां की आबादी एक हजार है और वहां आपके जैसे पांच हजार लोग पहुंच जाएं... ऐसा करेंगे तो, आप उस जगह का आनंद नहीं ले सकेंगे और स्थानीय लोगों को जो परेशानी होगी, वो अलग. तो कोशिश करिए कि पीक सीजन में कहीं जाने के बजाय ऑफ सीजन में जाइए, और उन जगहों पर क्यों जाना जहां सब जा रहे हों. थोड़ा रिसर्च करके कुछ नए ठिकाने तलाशिए. और नए अनुभव लीजिए.

... (पृष्ठ १९ का)

परमाणु समझौते के लिए हरी झंडी मिली थी.

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने जब १९९८ में फिर परमाणु परीक्षण किए तो कनाडा ने अपने पुराने रवैये को बरकरार रखते हुए भारत पर कई तरह की पाबंदियां लगा दीं. बाद में आई कुछ रिपोर्ट्स में कहा गया है कि कनाडा के तत्कालीन विदेश मंत्री लॉयड एक्सवर्थी ने भारत के खिलाफ पाबंदियों का अभियान शुरू किया था. तब कहा गया था कि ये प्रतिबंध २००१ में ही हटाए जाएंगे और २०१० में ही दोनों देश नागरिक परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर करेंगे. पाबंदियों के तहत भारत के लिए मानवीय सहायता को छोड़कर सभी मदद बंद कर दी गईं. भारत से कनाडा की वरिष्ठ मंत्रिस्तरीय यात्राओं के निमंत्रण वापस ले लिए गए. हालांकि, कनाडा ने अप्रैल २००१ में भारत से सभी प्रतिबंध हटा दिए.

आजादी के बाद १९४७ में भारत ने कनाडा के साथ संबंध स्थापित किए. दोनों देशों ने १९५० के दशक में अंतराष्ट्रीय संबंधों के कुछ क्षेत्रों में मिलकर काम भी किया. दोनों देशों ने कोरिया युद्ध के बाद युद्धबंदियों के आदान-प्रदान की व्यवस्था करने के लिए साल १९५३ में तटस्थ राष्ट्र प्रत्यावर्तन आयोग में साथ काम किया. हालांकि, कुछ समय बाद शीत युद्ध के समय भारत और कनाडा अलग-अलग खेमों में बंट गए. नाटो के संस्थापक सदस्यों में शामिल कनाडा ने सोवियत संघ के साथ भारत के संबंधों को सही नहीं माना था. हालांकि, इस दौरान दोनों देश अलग खेमों में जरूर बंटे, लेकिन द्विपक्षीय संबंधों में खटास नहीं आई थी.

भारतीय कंपनियों ने दिया झटका तो कनाडा में जाएंगी हजारों नौकरी...

कितनी भारतीय कंपनियों ने कनाडा में किया है निवेश
भारतीय कंपनियों की आगे के लिए क्या थी योजना
कनाडा की अर्थव्यवस्था में छात्रों का ३०% योगदान
कनाडा को क्या-क्या निर्यात करता है भारत

भारत और कनाडा के आपसी संबंध अब तक के सबसे खराब दौर से गुजर रहे हैं. दोनों देशों की ओर से राजनयिक निष्कासन की घटना और कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के गंभीर आरोपों के बाद भारत लगातार सख्त रुख अपनाए हुए है. पहले दोनों देशों के बीच होने वाली द्विपक्षीय व्यापार बैठक रद्द कर दी गई. इसके बाद भारत ने कनाडाई नागरिकों के लिए वीजा जारी करने पर भी रोक लगा दी. वहीं, ट्रूडो को पाकिस्तान को छोड़कर भारत के खिलाफ दुनिया के किसी दूसरे देश का साथ नहीं मिल पा रहा है. इससे छटपटाए पीएम जस्टिन ट्रूडो बैकफुट पर आ गए हैं.

भारतीय उद्योग परिसंघ यानी सीआईआई की इसी साल मई में जारी की गई एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय कंपनियों ने कनाडा में ६.६ अरब कनाडाई डॉलर यानी ४०,५०० करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश किया हुआ है. इस निवेश से कनाडा में हजारों लोगों को नौकरियां मिली हुई हैं. सीआईआई की 'भारत से कनाडा तकः आर्थिक प्रभाव और जुड़ाव' शीर्षक वाली ये रिपोर्ट कनाडा में भारतीय कंपनियों की बढ़ती मौजूदगी व प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, रोजगार सृजन, वित्त पोषण, अनुसंधान व विकास और कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी पहल के मामले में कनाडाई अर्थव्यवस्था में भारतीय कंपनियों के योगदान पर रोशनी डालती है.

सीआईआई की इस रिपोर्ट में बताया गया था कि कनाडा के पास भी बड़े पैमाने पर निवेश करने योग्य पूंजी अधिशेष है. कनाडा भारत में अच्छे और बड़े निवेश के मौकों की तलाश कर रहा है. वहीं, बड़ी संख्या में भारतीय प्रतिभाएं कनाडा की अर्थव्यवस्था में मजबूत योगदान दे रही हैं. यहां तक कि भारत लगातार कनाडा में निवेश बढ़ा रहा है. तब कहा गया था कि भारतीय कंपनियां कनाडा में ज्यादा से ज्यादा निवेश करना चाहती हैं. बता दें कि ३० भारतीय कंपनियों ने कनाडा में ६.६ अरब कनाडाई डॉलर का निवेश किया हुआ है. इससे कनाडा के ८ प्रांतों में १७,००० लोगों को रोजगार मिला हुआ है.

भारतीय कंपनियों ने कनाडा में अनुसंधान व विकास कार्यों पर ७० करोड़ कनाडाई डॉलर से ज्यादा का निवेश किया है. सीआईआई की रिपोर्ट के मुताबिक, सर्वेक्षण में शामिल ८५ फीसदी कंपनियों ने भविष्य के इनोवेशंस के लिए फंडिंग बढ़ाने की उम्मीद जताई थी. तब रिपोर्ट में कहा गया था कि भारतीय कंपनियां अगले पांच साल के दौरान कनाडा में ज्यादा निवेश करने की योजना बना रही हैं. साथ ही ९६ फीसदी ज्यादा कर्मचारियों को नियुक्त करने की योजना बना रही हैं. तब कनाडा ने सीआईआई की इस रिपोर्ट का स्वागत करते हुए कहा था कि दोनों देशों के बीच आर्थिक साझेदारी को मजबूत करना प्रशांत क्षेत्र के दोनों किनारों के व्यवसायों के लिए फायदेमंद है.

भारत का कनाडा की अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान है. आंकड़े बताते हैं कि अमेरिका, ब्रिटेन के बाद सबसे ज्यादा भारतीय छात्र उच्च शिक्षा के लिए कनाडा ही जाते हैं. एमीग्रेशन रेफूजी एंड सिटिजनशिप कनाडा के आंकड़ों के मुताबिक, साल २००२ में २,२६,४५० भारतीय छात्र उनके अलग-अलग संस्थानों में पढ़ने के लिए पहुंचे थे. इस साल में कुल ५,५१,४०५ छात्र दुनियाभर से वहां पढने गए. आंकड़ों से साफ है कि उच्च शिक्षा के लिए दुनियाभर से कनाडा पहुंचे छात्रों में भारत का योगदान ४० फीसदी है. कनाडा में सबसे ज्यादा छात्र भारतीय हैं. वहीं, दूसरे नंबर पर चीन और तीसरे पायदान पर फिलिपींस से गए स्टूडेंट्स आते हैं. बता दें कि पढ़ने जाने वाले छात्र कनाडा की अर्थव्यवस्था में ३० फीसदी योगदान करते हैं.

कनाडाई सरकार के अपने आंकड़े बताते हैं कि २०२२ में कनाडा-भारत के बीच द्विपक्षीय व्यापार करीब ९ अरब अमेरिकी डॉलर रहा था. ये २०२१ के मुकाबले ५७ फीसदी ज्यादा रहा था. भारत कनाडा को कोयला, कोक, उर्वरक और ऊर्जा उत्पाद निर्यात करता है. वहीं, कनाडा से उपभोक्ता वस्तुएं, परिधान, ऑटो पार्ट्स, विमान उपकरण जैसे इंजीनियरिंग प्रोडक्ट्स और इलेक्ट्रॉनिक प्रोडक्ट्स आयात करता है. इसके अलावा दोनों देशों ने २०२२ में समझौता किया था कि भारत-कनाडा के बीच उड़ानों की संख्या बढ़ाई जाएगी. अगर दोनों देशों के संबंध ज्यादा बिगड़े तो इस पर भी असर पड़ सकता है.

दिल्ली आबकारी नीति में अब आप सांसद संजय सिंह गिरफ्तार

ईडी ने दिनभर परिसरों पर की छापेमारी

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दिल्ली आबकारी नीति मामले में अब आम आदमी पार्टी (आप) के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह को गिरफ्तार कर लिया। इससे पहले बुधवार दिनभर ईडी ने सांसद संजय सिंह के परिसरों पर छापे मारे। अधिकारियों ने बताया कि मामले के संबंध में कुछ अन्य लोगों के परिसरों पर भी तलाशी ली गई। ईडी ने इससे पहले सिंह (५१) के स्टाफ सदस्यों और उनसे जुड़े अन्य लोगों से पूछताछ की थी। आरोप है कि शराब व्यापारियों को लाइसेंस देने के लिए दिल्ली सरकार की २०२१-२२ के लिए लायी गयी आबकारी नीति ने कुछ डीलर्स को फायदा पहुंचाया जिन्होंने इसके लिए कथित तौर पर रिश्वत दी थी। 'आप' ने इस आरोप का खंडन किया है। दिल्ली के उपराज्यपाल द्वारा सीबीआई जांच की सिफारिश के बाद इस नीति को रद्द कर दिया गया था। सीबीआई जांच की सिफारिश के बाद ईडी ने धन शोधन रोकथाम कानून (पीएमएलए) के तहत एक मामला दर्ज किया था।

ईडी के आरोपपत्र में कहा गया कि एक बिचौलिये दिनेश अरोड़ा ने बताया था कि उसकी मुलाकात संजय सिंह से उसके रेस्तरां 'अनप्लग्ड कोर्टयार्ड' में एक पार्टी के दौरान हुई थी। आरोपपत्र में कहा गया है कि २०२० में सिंह ने अरोड़ा से रेस्तरां मालिकों से दिल्ली विधानसभा चुनाव के वास्ते आम आदमी पार्टी के लिए पैसा एकत्र करने के लिए कहा था। दिनेश अरोड़ा ने बताया कि उसने पार्टी के लिए ८२ लाख रुपये का चेक दिया था। आरोपपत्र के अनुसार, दिनेश अरोड़ा ने अपने बयान में कहा कि एक अन्य आरोपी अमित अरोड़ा अपनी शराब की दुकान ओखला से पीतमपुरा स्थानांतरित करने में मदद चाहता था। उसने दिनेश अरोड़ा के जरिये यह कराया, जिसने उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को इस बारे में बताया और आबकारी विभाग ने मामले में मदद की। आरोपपत्र में कहा गया है कि दिनेश अरोड़ा ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया से भी बात की थी।

अडाणी पर सवाल पूछने के कारण यह कार्रवाई : आप

इस छापेमारी पर 'आप' प्रवक्ता रीना गुप्ता ने कहा, 'संजय सिंह अडाणी के मुद्दे पर सवाल पूछते रहे हैं, इसलिए उनके आवास पर छापे मारे जा रहे हैं। केंद्रीय एजेंसियों को पहले भी कुछ नहीं मिला था। अब भी कुछ नहीं मिलेगा। उन्होंने पहले कुछ पत्रकारों के आवास पर छापे मारे थे और आज वे संजय सिंह के आवास पर तलाशी ले रही हैं।' इस बीच, संजय सिंह के पिता दिनेश सिंह ने कहा कि उनका परिवार ईडी के साथ सहयोग कर रहा है।

केजरीवाल हैं सरगना, हथकड़ी दूर नहीं : भाजपा

भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने आरोप लगाया कि दिल्ली के सीएम केजरीवाल शराब घोटाले के 'सरगना' हैं। उन्होंने कहा, 'हथकड़ियां केजरीवाल के करीब आ रही हैं...।' इसी बीच, दिल्ली भाजपा के कार्यकर्ताओं ने केजरीवाल के इस्तीफे की मांग करते हुए बुधवार को आप के कार्यालय के पास प्रदर्शन किया। भाजपा की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा, 'शराब घोटाले में शामिल सभी लोग जल्द ही सलाखों के पीछे होंगे।'

केंद्रीय जांच एजेंसी के इस एक्शन पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल समेत कई बड़े नेताओं ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए इस गिरफ्तारी को गैरकानूनी बताते हुए केंद्र की सरकार और पीएम मोदी पर हमला बोला है. ED की टीम संजय सिंह को लेकर अपने दफ्तर में है, दूसरी ओर ईडी के दफ्तर के बाहर धारा १४४ लगा दी गई है. गिरफ्तारी के बाद संजय सिंह ने कहा, 'मरना मंजूर है लेकिन डरना मंजूर नहीं है. ये कार्यवाई बीजेपी की हार का संकेत है. आज ईडी ने मेरे घर और दफ्तर पर छापेमारी की उसके बाद मुझे गिफ्तार किया. ये सब केंद्र सरकार की निराशा को दिखाता है. मेरे घर से ईडी के अफसरों को कुछ नहीं मिला.'

AAP नेताओं का BJP पर हमला

दिल्ली शराब घोटाला मामले में ये १३वीं गिरफ्तारी है. इस गिरफ्तारी को लेकर आम आदमी पार्टी के

कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया है. वहीं आप के नेताओं ने प्रेस कांफ्रेंस करते हुए कहा कि इस मामले में एक रुपये का भी भ्रष्टाचार नहीं हुआ है. दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल, राघव चड्ढा, सौरभ भारद्वाज, गोपाल राय, आतिशी मार्लेना, प्रवक्ता प्रियंका कक्कर समेत अन्य कई नेताओं ने संजय सिंह की गिरफ्तार को लेकर बीजेपी नेताओं पर निशाना साधा है. इन नेताओं ने केंद्र सरकार के कामकाज पर सवाल उठाते हुए पीएम मोदी को घेरने की कोशिश की है. AAP नेताओं ने कहा कि बीजेपी २०२४ का चुनाव हार रही है, इसलिए बौखलाहट में ऐसे फैसले ले रही है.

अरविंद केजरीवाल ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा, 'संजय सिंह की गिरफ़्तारी बिलकुल ग़ैर क़ानूनी है. ये मोदी जी की बौखलाहट दर्शाता है. चुनाव तक ये कई और विपक्षी नेताओं को गिरफ़्तार करेंगे.' आप नेताओं ने कहा कि शराब घोटाला एक काल्पनिक घोटाला है. ये जनता की आवाज दबाने की कोशिश हैं, लेकिन आम आदमी पार्टी ऐसी कार्यवाई से डरने वाली नहीं है.

संजय सिंह के घर पहुंचे इंडी गठबंधन के नेता

संजय सिंह की गिरफ्तारी के बाद आम आदमी पार्टी के कई बड़े नेता संजय सिंह के घर पहुंचे हैं. वहीं इंडिया अलायंस के कई नेता उनके घर पर बैठक कर रहे हैं. इन नेताओं में मनोज झा समेत कई विपक्षी दल के नेता शामिल हैं.

कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि ये कार्यवाई विरोधी नेताओं को दबाने की कोशिश है. ये केंद्र सरकार की दमनकारी कार्यवाही है. वहीं उद्धव ठाकरे के गुट वाली शिवसेना के नेता संजय राऊत ने कहा कि विपक्ष शाषित राज्यों के नेताओं को परेशान किया जा रहा है, बीजेपी शाषित राज्यों में ईडी, सीबीआई जैसी एजेंसिया एक्शन क्यों नहीं लेती हैं?

संजय सिंह की गिरफ्तारी पर बिहार के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने कहा कि केंद्र सरकार विपक्ष के नेताओं को परेशान कर रही है. तेजस्वी यादव ने कहा कि विपक्ष मजबूत है. केंद्र की नीयत ठीक नहीं है. ऐसे ही एक मामले में झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन को समन भेजा गया है.

जेडीयू नेता केसी त्यागी ने कहा, बीते कई दिनों से संजय सिंह केंद्र सरकार को घेर रहे थे इसलिए उनको अरेस्ट किया गया है. मैं उनकी गिरफ्तारी की निंदा करता हूं. सरकार विपक्ष की आवाज दबाने का प्रयास कर रही है.'

आप नेताओं ने कहा कि इस गिरफ्तारी के जरिए विपक्ष की आवाज दबाने की कोशिश हो रही है. केंद्र सरकार और पीएम मोदी के खिलाफ आवाज उठाने वालों को जेल हो रही है. आप नेता राघव चड्ढा ने कहा कि ये गिरफ्तारी राजनीति से प्रेरित कार्रवाई है.

बीजेपी नेताओं का रिएक्शन

इसे लेकर बीजेपी नेता मनोज तिवारी ने कहा कि इस घोटले की आंच अभी अरविंद केजरीवाल तक पहुंचेगी. वहीं बीजेपी नेता मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि इस मामले को लेकर संजय सिंह को पैसा दिया गया था. सिरसा ने कहा कि मामले के आरोपी दिनेश अरोड़ा के साथ उनकी नजदीकी और सबूतों के तहत ये कार्यवाई हुई है. बीजेपी नेता राजेंद्र सिंह राठौड़ ने भी कहा कि करप्शन हुआ है तो कार्यवाही जरूर होगी. दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा, 'पैसे खाए हैं तो सच्चाई सामने आएगी ही. संजय सिंह, अरविंद केजरीवाल जितना भी शोर मचा लें, आज संजय सिंह की गिरफ़्तारी से पता चल गया कि सच्चाई छुप नहीं सकती. संजय सिंह ने पहले दिन से शराब घोटाले में पैसे खाए थे. संजय सिंह के बाद अरविंद केजरीवाल अब देखिए क्या होता है.'

वहीं संजय सिंह की गिरफ्तारी पर उनकी मां, पत्नी और पिता ने बयान देते हुए कहा कि जब दिनभर की जांच में अफसरों को कुछ नहीं मिला तो उन्हें लगा कि ईडी की टीम लौट जाएगी, लेकिन इस तरह से उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा ये नहीं सोचा था. पिता ने कहा, 'केंद्र सरकार का ये प्रयास गलत है.' संजय सिंह की मां ने कहा, 'मेरा बेटा निर्दोष है, इतना ईमानदार लड़का मैंने और कहीं नहीं देखा, मैं उसे आशीर्वाद देती हूं कि वो जल्द से घर आ जाए. क्योंकि किसी को झूठा आरोप लगाकर नहीं फंसाना चाहिए.

भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि यह गिरफ़्तारी हुई क्योंकि जिन्होंने पैसे दिए उन्होंने खुद बताया कि पैसे दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि संजय सिंह की गिरफ़्तारी यह दर्शाती है कि सिर्फ संजय सिंह ही नहीं बल्कि इसकी आंच अरविंद केजरीवाल तक भी जाएगी। भाजपा नेता मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि ईडी ने संजय सिंह को गिरफ्तार कर लिया है, आम आदमी पार्टी कह रही है कि यह राजनीतिक प्रतिशोध है। जब आपने करोड़ों रूपए रिश्वत ली, दिनेश अरोड़ा ने पैसे इकट्ठा करके संजय सिंह को दिया... जब आप करोड़ों रुपए ले रहे थे तब जेल तो जाना पड़ेगा, हिसाब तो देना पड़ेगा।

वीरेंद्र सचदेवा ने कांग्रेस को लेकर भी बात रखी। उन्होंने कहा कि दिल्ली शराब घोटाले में आज जांच एजेंसी के छापे के बाद दिल्ली कांग्रेस के नेता दुविधा में हैं कि वो प्रदर्शन करें या समर्थन करें। दिल्ली कांग्रेस जहाँ अरविंद केजरीवाल और उनके साथियों को शराब घोटाले का दोषी मानती है वहीं कांग्रेस के बड़े नेता संजय सिंह का समर्थन करने पहुंचे हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली की जनता जानती है कि केजरीवाल और उनके नेताओं ने शराब घोटाला किया है, अब सच सामने आ रहा है। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अरविंदर सिंह लवली ने कहा कि कांग्रेस किसी भी अनियमितता का समर्थन नहीं करती है, जो शराब घोटाले में दोषी हैं उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए लेकिन एजेंसी का दुरुपयोग भी नहीं होना चाहिए।

क्या अक्षय और शाहरुख की आपस में नहीं बनती?

एक तरफ जहां अक्षय ने साल १९९१ में आई फिल्म 'सौगंध' से बॉलीवुड में कदम रखा था, तो वहीं शाहरुख खान साल १९९२ में आई फिल्म 'दीवाना' से बॉलीवुड में एंट्री मारी थी. ये दोनों ही एक्टर अपनी कड़ी मेहनत और दमदार अभिनय से दर्शकों के दिलों पर छाते चले गए और देखते ही देखते दोनों सुपरस्टार बनकर उभरे. अब सवाल यह उठता है कि ये दोनों सुपरस्टार एक साथ क्यों काम नहीं करते हैं? क्या दोनों सुपरस्टार के बीच कुछ ईगो है? इंडियन एक्सप्रेस में प्रकाशित एक खबर के अनुसार, कुछ साल पहले शाहरुख से पूछा गया था कि उन्होंने और अक्षय ने साथ में फिल्में क्यों नहीं कीं, तो शाहरुख के पास इस सवाल का प्रैक्टिकल जवाब था. उन्होंने कहा था, 'इस पर मैं क्या कहूं? मैं उनकी तरह जल्दी नहीं उठता. जब अक्षय जाग रहे होते हैं तो मैं सो जाता हूं. उनका दिन जल्दी शुरू होता है. जब तक मैं काम करना शुरू करती हूं, वह सामान पैक करके घर जा रहे होते हैं. इसलिए, वह अधिक घंटे काम कर सकते हैं. मैं रात्रिचर व्यक्ति हूं. बहुत शौकीन नहीं हैं.' मैं अक्षय की तरह और उनके साथ काम करना चाहूंगा, लेकिन हमारी टाइमिंग मेल नहीं खाएगी.

रणबीर कपूर ने ED से मांगा दो हफ्ते का समय, ६ अक्टूबर को होना था पेश

महादेव बेटिंग ऐप मामले में रणबीर कपूर की ईडी की तरफ से समन जारी किया गया था. उन्हें ६ अक्टूबर को ईडी के सामने हाजिर होने के लिए कहा गया था. हालांकि सूत्र के हवाले से खबर है कि रणबीर ने ईडी से दो हफ्ते का समय मांगा है. उन्हें रायपुर में ईडी ब्रांच के सामने पेश होना है. दरअसल, ४ अक्टूबर को खबर आई कि सौरभ चंद्राकर से जुड़े महादेव बेटिंग ऐप मामले को लेकर रणबीर को समन जारी हुआ है. उन्हें ईडी के सामने पेश होना होगा और उनसे पूछताछ की जाएगी. लेकिन अब हाजिरी की डेट से ठीक एक दिन पहले खबर है कि रणबीर ने ईडी से समय मांगा है कि उन्हें दो हफ्ते की और मोहलत दी जाए उसके बाद वो हाजिर होंगे.

ऑनलाइन सट्टेबाजी का ऐप चलाने वाला सौरभ चंद्राकर ने इसी साल फरवरी के महीने में शादी रचाई थी. अपनी शादी में उसने रणबीर समेत कई सितारों को बुलाया था. सितारों ने उसकी शादी में परफॉर्म भी किया था. सौरभ पर स्टार्स को हवाला के जरिए पैसे देने का आरोप है. वहीं जो पेमेंट मिली उसी को लेकर ईडी पूछताछ करना चाहती है. बताया जाता है कि सौरभ ने दुबई में शादी की थी, जिसमें उसने तकरीबन २०० करोड़ रुपये खर्च किया था. जानकारी दे दें, महादेव बेटिंग मामले की जांच में ईडी को ५ हजार करोड़ के भ्रष्टाचार की बात पता चली थी. बीते महीने ईडी ने छापेमारी में ४१७ करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त भी की थी. इस मामले में रणबीर के अलावा और भी सितारे ईडी के रडार पर हैं, जिनके नाम- विशाल डडलानी, टाइगर श्रॉफ, नेहा कक्कड़, एली अवराम, भारती सिंह, सनी लियोनी, भाग्यश्री, पुलकित सम्राट, कीर्ति खरबंदा, नुसरत भरुचा और कृष्णा अभिषेक है. इनके अलावा सौरभ चंद्राकर की शादी में पाकिस्तानी सिंगर राहत फतेह अली खान और आतिफ असलम भी शामिल हुए थे.

२०१२ से ही व्यावहारिक रुप से ओडिशा में नारी सशक्तिकरण तथा विज्ञान जन-जन के लिए के सच्चे प्रचारक महान् शिक्षाविद् प्रो.अच्युत सामंत, संस्थापकःकीट-कीस-कीम्स तथा कंधमाल लोकसभा सांसद माने जा सकते हैं। प्रो.सामंत की सभी शैक्षिक संस्थाओं (कीट-कीस-कीम्स आदि) में आरंभ से ही महिलाओं के लिए आरक्षण लगभग ५० प्रतिशत है। नारी का वास्तविक सम्मान अगर कोई शैक्षिक संस्था देती है तो भारत की एकमात्र शैक्षिक संस्था समूह है जिसके जन्मदाता प्रो सामंत हैं और वह है-कीट-कीस-कीम्स शैक्षिक संस्थान-समूह। कीस में तो महिलाओं के लिए आरक्षण लगभग ६० प्रतिशत है। महिलाओं के सम्मान तथा आरक्षण आदि की प्रेरणा तो प्रो.सामंत को यथार्थ रुप में २०१२ से मिली जब लगभग तीन दशक पूर्व यूनेस्को-कलिंग प्राइज हीरक जयंती के उपलक्ष्य में विज्ञान को जन-जन तक पहुंचाकर लोकप्रिय बनाने की दिशा में ३५ वर्षों के अंतराल में ओडिशा में प्रो अच्युत सामंत ने सार्थक प्रयास किया।

कीट-कीस-कीम्स में तो ५० प्रतिशत महिला आरक्षण अभिनंदन कानून २००० से ही लागू है

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर स्थित कीट-कीस-कीम्स में तो ५० प्रतिशत महिला आरक्षण अभिनंदन कानून २००० से ही अनौपचारिक रुप से लागू है जिसके संस्थापक महान् शिक्षाविद् विदेह संत प्रो अच्युत सामंत हैं। वे वर्तमान में ओडिशा के आदिवासी बाहुल्य कंधमाल लोकसभा संसदीय क्षेत्र के मान्यवर सांसद भी हैं। नारी अभिनंदन तथा सम्मान अगर कोई सीखे तो प्रो अच्युत सामंत से सीखे। २१सितंबर, २०२३ को भारतीय संसद के दोनों सदनों (लोकसभा तथा राज्यसभा में) ३३ प्रतिशत नारी आरक्षण अभिनंदन विधेयक जब ध्वनिमत से पारित हुआ तो पूरे भारत ने देश के यशस्वी तथा तेजस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को उनके जन्मदिन पर उस ऐतिहासिक विधेयक के पारित होने पर बधाई दी। उसी ऐतिहासिक दिन ओडिशा के माननीय मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक ने भी ओडिशा विधानसभा के नये अध्यक्ष पद के लिए अपनी पार्टी बीजू जनता दल की ओर से पहली बार महिला उम्मीदवार प्रमिला मल्लिक के नाम की घोषणा की जो बीजेडी की ओर से ओडिशा विधानसभा के अध्यक्ष पद के लिए २१ सितंबर,२०२३ को ही अपना नामांकनपत्र भरा।

मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने नारी आरक्षण अभिनंदन विधेयक के संसद के दोनों सदनों से पारित होने का स्वागत किया तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी को उनके जन्मदिन पर उनको इसके लिए उनको बधाई दी। गौरतलब है कि प्रो.अच्युत सामंत भी बीजू जनता दल के कंधमाल लोकसभा सांसद हैं जो हमेशा माननीय मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के ओडिशा के विकास के लिए तथा ओडिशा के लोगों के विकास के लिए उनके द्वारा किये गये सभी कार्यों की सराहना करते हैं और ओडिशा की राजनीति में उन्हें ही वे अपना सच्चा पथप्रदर्शक मानते हैं। गौरतल ब है कि मई,२०१९ के ओडिशा विधानसभा चुनाव में बीजेडी ने अपने दल की ओर से ओडिशा विधानसभा आम चुनाव के लिए ३३ प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित कर दी थी। यही नहीं, ओडिशा के

सभी स्थानीय निकायों के चुनावों में भी यह महिला आरक्षण लागू रहा है।

२०१२ से ही व्यावहारिक रुप से ओडिशा में नारी सशक्तिकरण तथा विज्ञान जन-जन के लिए के सच्चे प्रचारक महान् शिक्षाविद् प्रो.अच्युत सामंत, संस्थापकःकीट-कीस-कीम्स तथा कंधमाल लोकसभा सांसद माने जा सकते हैं। प्रो.सामंत की सभी शैक्षिक संस्थाओं (कीट-कीस-कीम्स आदि) में आरंभ से ही महिलाओं के लिए आरक्षण लगभग ५० प्रतिशत है। नारी का वास्तविक सम्मान अगर कोई शैक्षिक संस्था देती है तो भारत की एकमात्र शैक्षिक संस्था समूह है जिसके जन्मदाता प्रो सामंत हैं और वह है-कीट-कीस-कीम्स शैक्षिक संस्थान-समूह। कीस में तो महिलाओं के लिए आरक्षण लगभग ६० प्रतिशत है। महिलाओं के सम्मान तथा आरक्षण आदि की प्रेरणा तो प्रो.सामंत को यथार्थ रुप में २०१२ से मिली जब लगभग तीन दशक पूर्व यूनेस्को-कलिंग प्राइज हीरक जयंती के उपलक्ष्य में विज्ञान को जन-जन तक पहुंचाकर लोकप्रिय बनाने की दिशा में ३५ वर्षों के अंतराल में ओडिशा में प्रो अच्युत सामंत ने सार्थक प्रयास किया। उनके भगीरथ प्रयासों से दिनांक : ३ जनवरी,२०१२ से लेकर ७ जनवरी,२०१२ तक कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में अखिल भारतीय ९९वीं विज्ञान कॉंग्रेस का भव्य और यादगार आयोजन हुआ।

आयोजन में दी इण्डियन साइंस कॉंग्रेस संघ, कोलकाता तथा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एडुकेशन एण्ड रिसर्च, भुवनेश्वर आदि ने भी कीट को सहयोग दिया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि के रुप में भारत के तात्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अपने संबोधन में २०१२ वर्ष को भारत के लिए विज्ञान का वर्ष बताते हुए विज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने की बात कही। जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए उसे कृषि तथा तकनीकी आदि में लागू करने की अपील की थी। नारी सशक्तिकरण के लिए विज्ञान के उपयोग की बात कही थी। ९९वीं विज्ञान कॉंग्रेस की अध्यक्षा कर रहीं प्रोफेसर गीता बाली ने भी अपने अध्यक्षीय भाषण में महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करते हुए उनके लिए विज्ञान तथा तकनीकी में नवाचार को अपनाने की सिफारिश की थी।

महान् शिक्षाविद् प्रो.अच्युत सामंत ने उन संदेशों को चुपचाप सुना और उन्हें ओडिशा में सबसे पहले अपनी शैक्षिक संस्थान-समूहों में लागू कर दिया। उन्होंने ओडिशा में विज्ञान को जन-जन तक लोकप्रिय बनाने के लिए एक अभियान चलाया जो पूरे ओडिशा के सभी स्कूलों और कॉलेजों में पूरे सालभर तक चला। अभियान का मुख्य रुप से तथा विशेषकर संदेश था -विज्ञान की उपयोगिता महिलाओं के लिए, नवाचार महिलाओं के लिए, विभिन्न कौशल विकास प्रशिक्षण महिलाओं के लिए। इसके लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की समान भागीदारी को भी सुनिश्चित करने का संदेश दिया गया। ९९वीं विज्ञान कॉंग्रेस के सफल आयोजन के उपरांत प्रो अच्युत सामंत ने ठान लिया कि वे सबसे पहले आत्मनिर्भर बनेंगे।

अपनी सत्यनिष्ठा तथा आत्मविश्वास से अपने कीट-कीस और कीम्स को आत्मनिर्भर बनाएंगे और उन्होंने कीट-कीस-कीम्स को आत्मनिर्भर बनाकर यह सिद्ध कर दिया कि जब एक अनाथ बालक असंभव को संभव कर सकता है तो पूरा भारत आत्मनिर्भर क्यों नहीं बन सकता है। उन्होंने कन्याकिरन योजना को लागू किया। भारत समेत विश्व की सभी महिलाओं से यह सविनय अपील है कि अगर यथार्थ रुप में नारी वंदन आरक्षण, महिला सशक्तिकरण अगर देखना हो, आदिवासी सशक्तिकरण अगर देखना हो, शैक्षणिक सफल प्रबंधन अगर देखना हो, खेलो इण्डिया अगर देखना हो, आधुनिक तीर्थस्थल अगर देखना हो, सच्चरित्र और जिम्मेवार भारतीय नागरिक तैयार करने का एकमात्र शैक्षिक संस्थान अगर देखना हो तथा उसके मेंटर प्रो.अच्युत सामंत के साक्षात दर्शन करना हो तो ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर अवश्य आइए। उनकी विश्वविख्यात कीर्ति कीट-कीस-कीम्स को पहले देखिए और उसके उपरांत उनके निर्माता विदेह संत प्रो अच्युत सामंत से मिलिए। यकीन मानिए,आपका मानव-जीवन सार्थक हो जाएगा।

प्रस्तुति : अशोक पाण्डेय,राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय की ख्वाहिशें हिन्दी संस्था द्वारा अभिव्यक्ति हिन्दी दिवस कार्यक्रम आयोजित

१४ सितंबर,हिन्दी दिवस के अवसर पर कीट डीम्ड विश्वविद्यालय,भुवनेश्वर की ख्वाहिशें सोसायटी की ओर से अभिव्यक्ति नामक हिन्दी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें युवा तथा उत्साही बच्चों ने हिन्दी में भाषण,स्वरचित कवितावाचन तथा राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद जैसे मोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।समारोह के मुख्य अतिथि के रुप में श्री सरत चन्द्र आचार्य तथा सम्मानित अतिथि के रुप में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो ज्ञानरंजन महंती तथा अशोक पाण्डेय ने योगदान दिया। कार्यक्रम की आरंभिक जानकारी डॉ श्याम सुंदर बेहुरा,उप निदेशक,कीट डीम्ड विश्वविद्यालय छात्र सेवा ने दी।स्वागतभाषण दिया विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो ज्ञानरंजन महंती ने। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि आचार्य ने बताया कि वैसे तो वे ओडिया के एक मशहूर कवि तथा लेखक हैं फिर भी उनका लगाव हिन्दी से प्रगाढ है।वे चाहेंगे कि कीट के बच्चे अपनी मातृभाषा ओडिया के साथ-साथ हिन्दी को भी अपने जनसम्पर्क भाषा के रुप में अपनाएं तथा प्रो अच्युत सामंत जैसा सभी भाषाओं का सम्मान करनेवाला बनें।अशोक पाण्डेय ने बताया कि ओडिशा का एकमात्र

विश्वविद्यालय कीट डीम्ड विश्वविद्यालय है जहां पर प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस,हिन्दी कार्यशाला तथा हिन्दी पखवाडा मनाया जाता है। गौरतलब है कि इस वर्ष भी ख्वाहिशें के सौजन्य से ११ सितंबर से १३ सितंबर तक स्थानीय स्कूलों में जा-जाकर हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित कराईं गईं जिनके विजेताओं को आज हिन्दी दिवस पर पुरस्कृत किया गया।अशोक पाण्डेय ने यह भी बताया कि कीट-कीस के संस्थापक प्रो अच्युत सामंत अपनी मातृभाषा ओडिया के साथ-साथ सभी भाषाओं का सम्मान करते हैं इसीलिए कीट में यह हिन्दी दिवस हर वर्ष बडे आकार में मनाया जाता है।प्रो काजल परासर,उपनिदेशिका,सामुदायिक सेवा,कीट ने भी अवसर पर अपना मनतव्य कार्यक्रम के विषय में व्यक्त किया।आभार प्रदर्शन डॉ भव्या भूषण,संयोजिका ख्वाहिशें ने किया। कार्यक्रम को आरंभ से अंत तक सफल बनाने में ख्वाहिशें के समीर और रीतिका आदि का सहयोग सराहनीय रहा।

कीट- कीस में मनाई गई गांधी और शास्त्री जयंती

भुवनेश्वर, २.१०: २ अक्टूबर को पूरे विश्व में राष्ट्र के पिता महात्मा गांधी और भारत के पूर्व प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती मनाई जाती है। इस मौके पर सोमवार को कीट और कीस में भी राष्ट्रपिता महात्मागांधी और भारत के पूर्व प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती मनाई गई। महात्मा गांधी जी की १५४वीं जयंती के अवसर पर कीट और कीस के संस्थापक प्रो अच्युत सामंत ने कीस परिसर में गांधीजी की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर प्रो सामंत ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि समाज के हाशिये पर पड़े और उपेक्षित लोगों को समाज की मुख्य धारा में शामिल करने का महात्मा गांधी जी का सपना कीस के माध्यम से पूरा हुआ है। इस अवसर पर कीस के विद्यार्थियों द्वारा रामधुन प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अंत में प्रो अच्युत सामंत ने छात्रों को मिठाई वितरित की।

गौरतलब है कि गांधी जयंती के अवसर पर पहली अक्टूबर और आज दो अक्टूबर दो दिनों तक कीट शिक्षण संस्थानों और कीस में स्वच्छता अभियान में कीट और कीस के संस्थापक अच्युत सामंत, संस्थान के छात्र, कुलाधिपति, उप-कुलपति सहित , रजिस्ट्रार, कीम्स के डॉक्टरों के समेत अन्य कर्मचारी आदि शामिल मिल हुए। इस मौके पर श्री सामंत जी ने छात्रों को स्वच्छता के बारे में निर्देश दिया और साथ ही कीट और इसके आसपास के क्षेत्र में सफाई अभियान चलाया गया।

टाइम्स वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग २०२४ प्रकाशित

कीट राष्ट्रीय स्तर पर छठे और ओडिशा में नंबर एक स्थान पर

टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी के प्रकाशित रैंकिंग में कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर राष्ट्रीय स्तर पर छठे स्थान पर आंका गया। हर साल की तरह इस साल भी टाईम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग प्रकाशित हुई है। गुरुवार को प्रकाशित हुए टाईम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग - २०२४ में कीट ने असाधारण और और अधिक बेहतर प्रदर्शन किया । पिछले साल की तुलना में इस साल कीट विश्वविद्यालय के स्कोर में काफी बढ़ोतरी देखी गई है। इस वर्ष कीट विश्वविद्यालय ६०१ रैंको के साथ राष्ट्रीय स्तर पर ९१ संस्थानों में से ६ठे स्थान पर आंका गया है और ओडिशा में प्रथम होने का सम्मान भी कीट ने एकसाथ अर्जित किया है। इस रैंक को टाइउम्स हायर एजुकेशन ने दुनिया के कई विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक माहौल, अनुसंधान, नवाचार, अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण और उद्योग आय के आधार पर तैयार किया है। टाइम्स हायर एजुकेशन इस रैंक को दुनिया के सभी विश्वविद्यालयों के लिए तैयार करता है।

पिछले साल से बेहतर प्रदर्शन कर कीट को इस साल देश के पूर्वी और ओडिशा विश्वविद्यालयों में पहला स्थान मिला है जबकि अन्य विश्वविद्यालयों की तुलना में कीट एक अपेक्षाकृत युवा विश्वविद्यालय है। कई शिक्षाविदों ने दुनिया के अबतक के स्थापित और पुराने विश्वविद्यालयों के बराबर अच्छा प्रदर्शन करने के लिए कीट और कीस के संस्थापक प्रो अच्युत सामंत की प्रशंसा की है। सच तो यह है कि प्रो अच्युत सामंत की दूरदर्शिता के परिणाम स्वरूप ही आज कीट विश्वविद्यालय दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों के बराबर बन पाया है और स्थापित और रैंकिंग प्रतियोगिता की दौड़ में पुराने विश्वविद्यालयों से आगे निकल गया है। इस अवसर पर प्रो अच्युत सामंत ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि यह कीट विश्वविद्यालय के सभी संकाय सदस्यों, छात्रों और कर्मचारियों के संयुक्त प्रयासों से ही संभव हुआ है। कीट विश्वविद्यालय के सभी संकाय सदस्यों, छात्रों और कर्मचारियों ने संस्थापक प्रो सामंत के निरंतर प्रयासों और दूरदर्शिता के प्रति आभार व्यक्त किया है।

राचेल रुटो को मिला १२वां 'कीस मानवतावादी सम्मान'

कीस मानवतावादी सम्मान मानवतावाद की सर्वोच्च मान्यता : राज्यपाल

भुवनेश्वर, ३०.९: प्रमुख केन्याई समाजसेवी और प्रथम महिला राचेल रुटो को १२वें कीस मानवतावादी अवार्ड-२०२२ से सम्मानित किया गया । शनिवार को ओडिशा के राज्यपाल प्रोफेसर गणेश लाल ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की और रेचेल को यह सम्मान प्रदान किया। रेचेल को कीस द्वारा सामाजिक सेवा, विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और उत्थान, पर्यावरण और जलवायु पर उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए यह सम्मान दिया गया है। इस सम्मान को प्राप्त करते हुए राचेल ने कहा कि 'मैं कीस के सर्वोच्च सम्मान कीस मानवतावादी अवॉर्ड' को प्राप्त करने के लिए बहुत दूर से ओडिशा आई हूं।' मेरे द्वारा किए गए काम को मान्यता देने के लिए मैं यहां की चयन समिति, कीस और इसके संस्थापक प्रो अच्युत सामंत और सभी कर्मचारियों को अपना हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करना चाहती हूं। यह सम्मान सिर्फ मेरे प्रयासों की मान्यता नहीं है, यह केन्यावासियों, विशेषकर केन्याई महिलाओं की सहनशीलता और साहस की मान्यता है। मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए ओडिशा के राज्यपाल प्रोफेसर गणेश लाल ने कहा कि यह सम्मान सभी के लिए प्रेरणादायी है। यह सम्मान उन लोगों को समर्पित है जो मानवकेंद्रित दुनिया को मानवता का स्थान बनाने के लिए काम कर रहे हैं। इस मौके पर राज्यपाल ने कहा कि यह सम्मान मानवतावाद की सर्वोच्च पहचान है। इस अवसर पर कीट और कीस के संस्थापक प्रो अच्युत सामंत ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि 'हालांकि हम दो अलग-अलग देशों से हैं, लेकिन हमारा काम हम दोनों को एक साथ लाया है।'

इस अवसर पर कीस और कीट की अध्यक्षा शाश्वती बल, कीस यूनिवर्सिटी के चांसलर सत्य एस.त्रिपाठी, भारत स्थित केन्याई महामहिम विली के बेट, कीस और कीट के उपाध्यक्ष उमापद बोस, सचिव आर एन दास और कीस और कीट के वरिष्ठ अधिकारी सहित २५ सदस्यीय केन्याई प्रतिनिधिमंडल उपस्थित थे। गौरतलब है कि कीस मानवतावादी अवॉर्ड को विश्व-प्रसिद्ध पुरस्कार के रूप में स्वीकार किया गया है। २००८ से यह सम्मान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को दिया जाता रहा है। २०१८ में प्रतिष्ठित नोबेल शांति पुरस्कार विजेता प्रोफेसर मुहम्मद यूनुस को कीस मानवतावादी अवार्ड से सम्मानित किया गया था।

एशियाई खेल २०२३ में कीट-कीस के १४ खिलाड़ी शामिल

भुवनेश्वर, १५ सितंबरः २३ सितंबर से ८ अक्टूबर,२०२३ तक चीन के हांगझू में आयोजित होने जा रहे एशियाई खेल २०२३ में कीट-कीस के १४ एथलेट भारत का प्रतिनिधित्व करने जा रहे हैं। भारत में यह पहली बार है कि देश के एक ही शैक्षणिक संस्थान से इतने सारे खिलाड़ियों ने एशियाई खेलों में भाग लिया है। आज कीट में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में कीट स्पोर्ट्स के महानिदेशक डॉ. गगनेंदु दाश ने इस संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि कीट की छात्रा सीए भवानी देवी तलवारबाजी (महिला) वर्ग में व्यक्तिगत और टीम दोनों स्पर्धाओं में भाग लेने जा रही हैं, जबकि भारतीय हॉकी टीम में अमित रोहिदास भाग ले रहे हैं। इसी तरह तैराकी में कीट-कीस के छात्र सज्जन प्रकाश, रोइंग (महिला) वर्ग में

अंसिका भारती भारत का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। इसी तरह प्रियंका ने एथलेटिक २० किमी रेस वॉक (महिला) स्पर्धा में और संदीप कुमार ने २० किमी रेस वॉक (पुरुष) वर्ग में भारत का प्रतिनिधित्व करने का गौरव हांसिल किया है। किशोर कुमार जेना और तेजिंदरपाल सिंह तूर भाला फेंक और गोला फेंक में प्रतिनिधित्व करेंगे।

यह गौरव की बात है कि भारतीय महिला रग्बी टीम में कीस की ४ छात्रा डुमुनी मरांडी, तरुलता नाइक, मामा नाइक और हूपी माझी शामिल हैं। डिकैथलॉन के २०० मीटर दौड़ के लिए तेजस्वी शंकर और अमलान बोरगाऊ को चुना गया है। इस मौके पर डॉ दास ने कहा कि खेल के विकास के लिए कीट-कीस की ओर से संस्थापक डॉ अच्युत सामंत खिलाड़ियों को वर्ष के दौरान सभी प्रकार सुविधाएं प्रदान करने के साथ आर्थिक रूप से भी प्रोत्साहित कर रहे हैं। एशियाई खेलों के लिए चयनित खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कीट-कीस के संस्थापक डॉ सामंत ने कहा कि ये एथलीट न केवल कीट और कीस की शान हैं बल्कि पूरे ओडिशा की शान हैं। उन्होंने कहा कि कीट और कीस ओडिशा को स्पोर्ट्स हब बनाने में भी शामिल हैं। उन्होंने ओडिशा में खेल और खिलाड़ियों को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार के काम की सराहना की और इसके लिए मुख्यमंत्री नवीन पटनायक को धन्यवाद दिया।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिला विप्र फाउण्डेशन का एक प्रतिनिधि मण्डल

हाल ही में अखिल भारतीय विप्र फाउण्डेशन का एक प्रतिनिधि मण्डल नई दिल्ली राष्ट्रपति भवन जाकर भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से शिष्टाचार मुलाकात की और उन्हें अपने विप्र फाउण्डेशन के अनेकानेक सेवा प्रकल्पों आदि की जानकारी दी। गौरतलब है कि विप्र फाउण्डेशन की ओर से भगवान परशुराम की भारत की सबसे बडी और दिव्य मूर्ति के निर्माण का कार्य अरुणाचल प्रदेश में युद्धस्तर पर चल रहा है।वहीं राजस्थान,जयपुर में सेंटर फॉर एक्सलेंस एण्ड रिसर्च श्री परशुराम ज्ञानपीठ का भी निर्माण कार्य भी तेजी से चल रहा है।इसीप्रकार विप्र फाउण्डेशन पूरे भारत में अनेकानेक सेवा प्रकल्प चला रहा है। प्रतिनिधि मण्डल के विप्र फाउण्डेशन के संरक्षक ओडिशा के जगदीश मिश्र ने यह जानकारी दी कि विप्र फाउण्डेशन महामहिम राष्ट्रपति दौपदी मुर्मू के पैतृक गांव ऊपरबेडा तथा उनकी ससुराल पहाडपुर के सर्वांगीण विकास आदि की जिम्मेदारी भी अपने ऊपर ली है जिसमें उनकी ससुराल में तैयार चावल आदि की खरीदारी तथा विक्री आदि का काम भी विप्र फाउण्डेशन संभाल रहा है।

उन्होंने यह भी जानकारी दी कि ओडिशा का महेन्द्र गिरि पर्वत एक ऐसा पर्वत है जहां पर भगवान परशुराम ने कभी तपस्या की थी उस तपोस्थली को विप्र फाउण्डेशन विकसित कर रहा है। महेन्द्र गिरि के भगवान परशुराम की छोटी मूर्ति को हटाकर वहां पर बडी मूर्ति लगाने तथा उस सुरम्य प्राकृतिक परिवेश में एक परशुराम विश्रामालय निर्माण का कार्य आदि भी फाउण्डेशन कर रहा है। महामहिम द्रौपदी मुर्मू ने प्रतिनिधिमण्डल को हरसंभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। प्रतिनिधिमण्डल में डॉ सुनिल शर्मा,महेश शर्मा,गजानंद शर्मा,कमल शर्मा आदि शामिल थे।

महादेव गृहनिर्माण के सौजन्य से त्रिसूलिया, कटक में लांच हुआ अत्याधुनिक महादेव ग्रीनएपार्टमेंट

१८ सितंबर को स्थानीय होटल प्रीमियम में आयोजित पत्रकार सम्मेलन मेंसुनिल कुमार सारलिया, कण्स्ट्रक्शन कंपनी के निदेशक ने यह जानकारी दी कि उनकी कंपनी महादेव गृहनिर्माण के सौजन्य सेत्रिसूलिया, कटक कटक-भुवनेश्वर के बीच लांच होगा महादेव ग्रीनएपार्टमेंट। उन्होंने बताया कि कुल लगभग २.८ एकड भूभाग पर निर्मित होनेवाला यह अत्याधुनिक महादेव ग्रीनएपार्टमेंट२०२७,जून तक बनकर तैयार हो जाएगा जिसमें कुल २५७ एपार्टमेंट होंगे जिनमें २बीएचके,३ बीएचके,३.५ बीएचके तथा ४.५ बीएचके की कीमत आरंभ होगी ६०.७५ लाख रुपये से। महादेव ग्रीनएपार्टमेंटमें २४ घण्टे और सप्ताह के सातों दिन सीसीटीवी कैमरा काम करेगा।यह एपार्टमेंट ईकोफ्रैंडली के साथ-साथ प्रदूषण मुक्त होगा। एपार्टमेंट में इनडोर स्वीमिंग पूल तथा मल्टी पर्पस हॉल,जीम तथा इनडोर गेम आदि की सुविधा होगी।

उत्कल-अनुज हिन्दी वाचनालय ने भी मनाया हिन्दी दिवस

भुवनेश्वर स्थित उत्कल-अनुज हिन्दी वाचनालय में १७ सितंबर की शाम में हिन्दी दिवस मनाया गया।आयोजन की आरंभिक जानकारी अशोक पाण्डेय ने दी।समारोह की अध्यक्षता रामकिशोर शर्मा ने की। अवसर पर वाचनालय के संबंद्ध हिन्दी विद्वान स्वर्गीय डॉ सुधीर कुमार की हिन्दी पुस्तकःचित्र और चरित्र का लोकार्पण उनके मरणोपरांत बतौर समारोह के मुख्य अतिथि लॉयला एडुकेशन सोसायटी के रेक्टर सह सचिव फादर ऑगस्टीन जाकुनेल तथा सम्मानित अतिथि के रुप में पधारीं नंदिता पटनायक,लॉयला स्कूल,भुवनेश्वर की ऐक्टिंग प्रिंसिपल ने की।अपना संवेदनात्मक उद्गार स्व. डॉ सुधीर कुमार की पत्नी

राखी सिंह ने व्यक्त की।पुस्तक-समीक्षा रामकिशोर शर्मा ने की। गौरतलब है कि स्वर्गीय डॉ सुधीर कुमार अपने जीवनकाल में लॉयला स्कूल,भुवनेश्वर के हिन्दी के एक वरिष्ठ शिक्षक थे जो अपने स्कूल के बच्चों को हिन्दी पठन-पाठन के साथ-साथ हिन्दी से प्रेम करना सिखाये।सरल हिन्दी बोलने की ओर उन्मुख किया। यहां उल्लेखनीय बात यह भी है कि कुछ माह पूर्व ही एक सुबह जब वे पूजा के लिए फूल चुनने जा रहे थे तो अचानक एक तेज वाहन से उनका असामयिक निधन हो गया ।वे बडे ही संवेदनशील हिन्दी विद्वान थे।वाचनालय द्वारा आयोजित आज हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में स्थानीय हिन्दी कवियों में अनूप कुमार अग्रवाल,सीए,रामकिशोर शर्मा,किशन खण्डेलवाल,नारायण मुदुली,मुरारील ाल लढानिया,विक्रादित्य सिंह,विनोद कुमार, आशीष साह,कुलदीप गुप्ता,नारायण मावतवाल तथा प्रतिभा कानुनगो ने अपनी-अपनी कविताओं का वाचन किया।आभार प्रदर्शन तथा मंचसंचालन किशन खण्डेलवाल ने किया। अवसर पर श्रोता के रुप में डॉ एस के तमोतिया,रानी तमोतिया,शेषनाथ राय,शालि न,पूजा ,मुनी अग्रवाल,राजपाल सिंह,स्तुति सिंह तथा रणेश कुमार आदि उपस्थित थे।

भारतीय संस्कृति को ओडिशा की देन...

ओडिशा वास्तव में महाप्रभु जगन्नाथ जी का देश है जहां के श्री जगन्नाथ धाम के श्रीमंदिर के रत्नवेदी पर विराजमान हैं जगत के नाथ महाप्रभु जगन्नाथ और उन्हीं की संस्कृति ही वास्तव में ओडिया संस्कृति है जो भारतीय संस्कृति की पर्याय है।अतिथिदेवोभव, विश्ववंधुत्व, शांति, एकता, मैत्री तथा सर्वधर्म समन्वय आदि का पावन संदेश जगन्नाथ संस्कृति अर्थात् ओडिशा की संस्कृति ही भारतीय संस्कृति को देती है।यहां पर जगन्नाथ भगवान भारत ही नहीं परन्तु विश्व के सभी देवों के समाहार हैं, मात्र विग्रह स्वरुप हैं। भारतवर्ष में शाश्वत पारिवारिक मधुर संबंधों की परम्परा की नींव जगन्नाथ भगवान ने डाली है क्योंकि वे अपने बडे भाई जो बलशाली होते हुए भी भद्रता के आदर्श हैं-बलभद्र जी,अपनी लाडली बहन जो भद्रता की आदर्श हैं-सुभद्रा जी तथा भगवान सुदर्शन जी के साथ स्वयं भगवान जगन्नाथ जी चतुर्धा देवविग्रह रुप में पुरी के श्रीमंदिर के रत्नसिंहासन पर विराजमान हैं।

यहां पर उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के देव-देवियों का कोई भेद-भाव नहीं है क्योंकि यहां के चतुर्धादेव विग्रह समस्त देवों के समाहार हैं। श्रीमंदिर के रत्नसिंहासन पर श्रीदेवी तथा भूदेवी की कास्य मूर्तियां भी अवश्य हैं।भगवान जगन्नाथ भारतीय संस्कृति को तथा भारतीयता को बचाने हेतु भारतीय संयुक्त परिवार की शाश्वत अवधारणा को अपने दिव्य दरबार रत्नवेदी से प्रतिदिन संदेश देते हैं। घर-परिवार के बडे भाई और छोटी बहन की वास्तविक महत्ता का वे पावन संदेश देते हैं। स्वयं तो भगवान जगन्नाथ वैष्णव, शैव, सौर, शाक्त, जैन, बौद्ध, गाणपत्य हैं तो दूसरी तरफ विश्व की सभी संस्कृतियां, सभ्याताएं, धर्म, सम्प्रदाय और मान्यताएं अपने सभी भेद-भाव को भुलाकर आकर मिल जातीं हैं भगवान जगन्नाथ में। इसीलिए ओडिशा के श्रीमंदिर के रत्नवेदी पर भगवान जगन्नाथ के लिए किसी भी प्रकार का भेद-भाव नहीं है चाहें जाति का हो या लिंग का,चाहे किसी भाषा का हो अथवा किसी बोली आदि का।

भगवान जगन्नाथ के महाप्रसाद सेवन की ऐसी अनोखी परम्परा है कि सभी बिना किसी भेद-भाव के भगवान जगन्नाथ के महाप्रसाद का सेवन करते हैं। यहां पर जूठा प्रसाद कुछ भी नहीं है। महाप्रसाद का अन्नभोग स्वयं देवी अन्नपूर्णा तैयार करतीं हैं जो वास्तव में आयुर्वेदसम्मत महाप्रसाद है जिसके सेवन मात्र से ही सभी प्रकार के दुखों का निवारण हो जाता है।ओडिशा की पखाल संस्कृति को बडी तेजी के साथ आज भारत समेत विश्व के अनेक देश भी अपना रहे हैं। ओडिशा का कोणार्क सूर्यमंदिर विश्व विख्यात सूर्यमंदिर है जहां पर प्रकृति के प्रत्यक्ष देवता भगवान सूर्यदेव अपने २४ पहियोंवाले रथ पर आरुढ हैं। ये २४ पहिये प्रत्यक्ष रुप में कालचक्र के प्रतीक हैं। इसका निर्माण १३वीं शताब्दी में गंगवंश के प्रतापी राजा नरसिंह देव ने किया था जिसे १९८४ में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रुप में मान्यता प्रदान की गई। मंदिर के निर्माण में प्रयुक्त लाल पत्थर भी अपने आकर्षण केन्द्र के लिए प्रसिद्ध हैं जो प्रतिपल अवलोकन में मानव की भाषा जैसे मुखर हैं। कोणार्क सूर्यदेव मंदिर प्रांगण में उनकी पत्नी देवी छाया देवी की सुंदर मूर्ति है। पौराणिक काल से ओडिशा नदियों का प्रदेश माना गया है जहां की नदियां जीवनदायिनी, सभी मनोकामनादायिनी हैं तथा मोक्षदायिनी हैं। ओडिशा में कार्तिक महोदधिस्नान का विशेष महत्त्व है। ओडिशा वह प्रदेश है जिसने चण्डाशोक को धर्माशोक बना दिया। ओडिशा में जो भी आया वह यहीं पर बस गया क्योंकि उसे जगन्नाथ संस्कृति (ओडिशा की संस्कृति) सबसे अच्छी लगी।

पुरी का महोदधि समुद्र तट तो स्वर्ण बेलाभूमि है। सैलानियों का स्वर्ग है। पुरी का स्वर्गद्वार तो मोक्ष का एकमात्र केन्द्र है जो प्रलयकाल में भी कभी नष्ट नहीं होता है तथा जिस सनातनी का अंतिम संस्कार वहां पर होता है वह भवबंधन से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है।जगतगुरु आदि शंकराचार्य द्वारा निर्मित गोवर्द्धन पीठ पुरी धाम में ही है जहां के १४५वें पीठाधीश्वर पुरी जगतगुरु शंकराचार्य परमपाद स्वामी निश्चलानंद जी सरस्वती महाभाग हैं जिनके दर्शन के लिए विश्व के सभी धर्मगुरु पुरी आते हैं। भगवान जगन्नाथ का नवकलेवर (एक साधारण मानव की तरह जन्म लेने तथा मृत्यु को प्राप्त होने की सनातनी ईश्वरीय प्रक्रिया) जो उस वर्ष विश्व स्तर पर पुरी धाम में आयोजित होता है जिस वर्ष दो आषाढ मास पडता है। ओडिशा की स्थापत्य कला,मूर्ति कला,वास्तुकला तथा चित्रकला भी तो बेजोड है। हाल ही में (५सितंबर,२०२३ को) नई दिल्ली में आयोजित जी-२० शिखर सम्मेलन,२०२३ के भारत मण्डपम के मुख्य आकर्षण का केन्द्र भी कोणार्क के सूर्यमंदिर का पहिया रहा जो विश्व में कालचक्र का प्रतीक है। १८सितंबर,२०२३ को भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी सबसे बडी महात्वाकांक्षी योजनाः विश्वकर्मा योजना को लागू कर तथा ओडिशा के विश्वकर्माओं को सम्मानित यह सिद्ध कर दिया कि ओडिशा की देन भारतीय संस्कृति को अभूतपूर्व देन है। वास्तव में ओडिशा की देन (जगन्नाथ संस्कृति) की देन भारतीय संस्कृति को अतुलनीय है। -अशोक पाण्डेय

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-७६

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

१. कौन-सा तत्व सबसे कम सक्रिय होता है?
२. संविधान सभा के प्रारूप समिति में कुल कितने सदस्य थे?
३. सबसे छोटा कोशिकीय अंग कौन-सा है?
४. अलाउद्दीन खिलजी ने किसे दीवान-ए-रियासत नियुक्त किया था?
५. बेगम अख्तर गायन की किस विधा से संबद्ध हैं?
६. एक प्रकाश वर्ष कितनी दूरी के बराबर होता है?
७. ओलम्पिक मशाल किस पदार्थ से प्रज्वलित की जाती है?
८. भारत में जिलों की कुल संख्या कितनी है?
९. सल्तनतकालीन सुल्तानों के शासन काल में किसके शासन काल में सर्वाधिक दास थे?
१०. माईक पाण्डेय किस क्षेत्र से संबद्ध हैं?
११. पदार्थ के संवेग और वेग के अनुपात से कौन-सी भौतिक राशि प्राप्त होती है?
१२. संविधान सभा के झंडा समिति के कौन अध्यक्ष थे?
१३. लोहा एवं गंधक का मिश्रण कौन-सा मिश्रण है?
१४. औरंगजेब ने शिवाजी के विरुद्ध किसे दक्कन का सूबेदार बनाकर भेजा था?
१५. यहूदी मेनुहीन किस वाद्य यंत्र के प्रमुख वादक थे?
१६. सूर्य के अपेक्षाकृत ठंडे भाग, जिसका तापमान १५०० अु ण होता है, क्या कहलाता है?
१७. विश्व में सर्वप्रथम किस अंग का प्रत्यारोपण संभव हुआ?
१८. जनगणना की तर्ज पर मृत्यु गणना वाला पहला राज्य कौन-सा है?
१९. किस मुगल बादशाह ने वसीयत लिखकर अपने पुत्रों को यह निर्देश दिया था कि वे असद खाँ को बजीर बनाए?
२०. ह्विटनी ह्यूस्टन किस क्षेत्र से संबद्ध थे?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः.....

पूरा पताः .....

.....

.....

.....

फोन नं.ः .....

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY ₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY ₹499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY ₹499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS
MRP ₹ 699
MEGABUY ₹599

बेटी पढ़ाओ

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

मूल से ब्याज मीठा

एक प्रिंटिंग प्रेस में साधारण से कंपोजर। वेतन बस इतना कि दो वक्त की रोटी आराम से निकल जाय। पुश्तैनी मकान, अपने पिता के इकलौते बेटे होने के नाते वो मकान ही उनकी जायजाद है। बाकी जीवन की गाड़ी बड़ी मुश्किलों से खींचते चले आ रहें है। फिर भी उनका चेहरा कभी मुरझाया नहीं। हमेशा खिला खिला।

गोलछा जी आज भी उसी प्रसन्न मुद्रा में सायकल चलाये जा रहे थे। जो सदा से उनकी पहचान रही है। जी हां, प्रसन्नता उनके स्वभाव में शामिल है। चेहरे पर कभी शिकन दिखी हो ऐसा मुझे याद नहीं आता। दाहिने -बांये झूमने वाले अंदाज में पैडल मारे जा रहे थे। पीछे कैरियर पर लगभग ३ साल का बड़ा ही प्यारा सा बच्चा उनके कंधों का सहारा लिये खड़ा था। दाहिने- बांये झूमने का आनंद शायद वह भी महसूस कर रहा था। और इस लिए हंसे जा रहा था। यह दृश्य देखकर मुझे २७ साल पहले वाले गोलछा जी याद आ गए। उस समय भी वे ठीक इसी तरह अपने बड़े बेटे बबलू को सायकल के पीछे कैरियर पर खड़ा करके घुमाने ले जाया करते थे। हां, फर्क यह जरूर था, उस समय वे सायकल जरा तनके चलाया करते थे। आज वे झूम - झूम के चला रहे थे। शायद उम्र का यही तकाजा था।

वो जब मेरे घर के सामने से निकलते तो एक हांक जरूर लगाया करते थे - ''चलते हो क्या भाई घूमने?'', और फिर एक पांव के सहारे जमीन पर खड़े हो जाया करते थे। उनकी आवाज सुनकर मैं भी अपनी सायकल उठाकर अपने एक साल के लड़के को सीट पर बैठाकर, खुद पीछे कैरियर पर बैठकर, दाहिने हाथ से उसे थामता था और बांये हाथ से हैंडल थामकर सायकल चलाता था। हम लोग लगभग ४ किलो मी. का चक्कर लगाकर वापस आते थे। हम दोनों लगभग उन्हीं दिनों ही पड़ोसी बने थे। २७ साल की इस लंबी अवधि में उनके हर दुख -सुख का गवाह मैं हूं और मेरे हर दुख - सुख के गवाह वे। किसी से कुछ छुपा नहीं है।

एक प्रिंटिंग प्रेस में साधारण से कंपोजर। वेतन बस इतना कि दो वक्त की रोटी आराम से निकल जाय। पुश्तैनी मकान, अपने पिता के इकलौते बेटे होने के नाते वो मकान ही उनकी जायजाद है। बाकी जीवन की गाड़ी बड़ी मुश्किलों से खींचते चले आ रहें है। फिर भी उनका चेहरा कभी मुरझाया नहीं। हमेशा खिला खिला।

उनका लड़का बबलू जब ४ साल का हुआ तो उसे किसी अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाने का मन बना लिया, ताकि वो उनकी तरह जीवन की गाड़ी 'किसी तरह ' खींच के नहीं बल्कि शान से चला सके। मॉडल स्कूल में प्रवेश दिलाने में उनका लगभग पूरा वेतन स्वाहा हो रहा था। वे मेरे पास आये और अपनी मजबूरी मेरे सामने रखी। मुझे खुशी हुई कि उन्होंने

अपने बच्चे के उज्जवल भविष्य की सोची और प्रयास शुरू किया। पूरी एडमीशन फीस मैनें उन्हें देकर खुले दिल से कहा- 'वापस करने की जल्दी नहीं, जब हो जाये आराम से देना, घबराना नहीं'। बच्चे को स्कूल में दाखिला दिलाकर उस दिन वे बड़े खुश हुए थे। और बड़े ही गर्वीले अंदाज में बोल पड़े थे और बोले अब यह बड़ा अफसर बन कर मेरी हर तकलीफ दूर कर देगा। फिर जिन्दगी आराम से कटेगी।''

अपना पेट काट-काट, इधर-उधर से उधारी करके बबलू को उच्च शिक्षा दिला दीं संयोग कुछ इतने अच्छे हुये कि फाइनल पास करते ही उन्हीं दिनों बैक की ओर से अफसरों की सीधी भर्ती का विज्ञापन निकला। बबलू पढ़ाई - लिखाई में तेज था ही। उसने भी फार्म भर दिया और सलैक्ट हो गया।

उस दिन गोलछा जी मेरे घर रसगुल्ले लेकर आये। उनके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे, वे पूरे मोहल्ले में जैसे उड़े-उड़े से चल रहे थे। ऐसा होना मानव मात्र के लिए स्वाभाविक ही था।

खुशी से झूमते हुए उन्होंने एक रसगुल्ला मेरे मुंह में ठूंस दिया। और बोल पड़े ''देखा सोहन लाल! मेरा बबलू बैंक आफिसर बन गया। आखिर बेटा किसका है। मेरी तो शान ही बढ़ा दी उस लड़के ने। अब तो यार सब दुख दूर ही समझो। आखिर मैं अब एक बैंक आफिसर का बाप हूं। '' मैंने भी उन्हीं की प्लेट से एक रसगुल्ला निकाला और उनको खिलाते हुए बधाई दी। वे तुरंत यह कहते हुए बाहर निकल गए '' चलता हूं भाई , सारे मोहल्ले को यह खुशखबरी देनी है।''

लगभग एक साल बाद उनकी श्रीमती जी अचानक घबरायी हुई मेरे घर आई और उखड़ी हुई सांसों से रूआंसे स्वर में बोली कि'' भाई साहब थोड़ा जल्दी चलिये ना देखिये तो इनको क्या हो गया है। ''मैं तुरंत उनके साथ उनके घर भागा। आकर देखा तो गोलछा जी एक टक छत को घूरे जा रहे थे। और लंबी-लंबी सांसें से ले रहे थे। मैंने उनके सीने पर हाथ रखकर देखा , धड़कन बहुत तेज थी। पलंग पर बैठ कर मैनें उनके माथे पर हाथ रखकर कहा ''क्या हुआ गोलछा भाई अच्छे भले तो प्रेस गए थे, यह अचानक क्या हो गया है आपको बताइये तो जरा क्या बात है ?'' मेरी आवाज सुनकर उन्होंने बिना सर को हिलाये, सिर्फ आंखें मेरी ओर फेरी और रोते हुए बोल पड़े - सोहन लाल! सब खत्म हो गया। सारी आशायें, सारे सपने बिखर गए, कुछ नहीं बचा मेरे भाई, कुछ बाकी नहीं रहा, सब खत्म, सब खत्म'' और फिर वे फफक - फफक कर रो पड़े। '' अरे भाई बताओगे भी आखिर हुआ क्या?'' मैं उनका हाथ अपने हाथों में लेते हुए बोला। इतने में उनकी श्रीमती जी पानी का गिलास लेकर आई थी, मैंने वो लेकर उनको पीने के लिए कहा - और उनके होठों से लगा दिया। आधे अधूरे उठकर पानी पिया और गहरी सांस लेकर तकिये के सहारे उठकर बैठ गए। और धीमी सी आवाज में उन्होंने कहना शुरू किया - '' दोपहर को बबलू प्रेस में आया था, हमारी तो उसने नाक ही कटवा दी, कहीं का ना छोड़ा हमें, क्या-क्या सपने देखे थे उसकी अफसरी को लेके सब टूट गए। सब आशायें धूल में मिला दी उसने। उसको कुछ दिन पहले बैंक की ओर से एक बंगला अलाट हुआ है, जिसकी खबर भी उसने हमें लगने नहीं दी। कल आफिस की एक मैडम से उसने लव मैरिज कर ली है। और जाकर उस बंगले में रहने लग गया है, क्योंकि मैडम नहीं चाहती एक साधारण सा प्रेस कंपोजर उस बंगले में उसके साथ रहे, या इतने बड़े आफिसर की बीबी होकर वह हमारे साथ इस पुराने से मकान में रहे।'' कहते कहते उनकी आंखों से आंसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा।

पास में खड़ी उनकी श्रीमति जी भी सिसकने लगी थी। और हिचकियां लेते हुए लगभग विलाप करते हुए कहने लगी- ''देख रहे हो आज की औलाद के रंग भैया! अपने जिगर का खून जलाकर-जलाकर इस लायक बनाया था। उस नामुराद को कि बुढ़ापे का सहारा बनेगा। लेकिन हमारे भाग में यही बदा है तो कोई क्या करे। उसकी शादी को लेकर क्या क्या सपने संजो रखे थे उसे घोड़ी पर दूल्हे के रूप में देखने आंखे तो जिन्दगी भर तरसती ही रह गई ना? घर की लक्ष्मी को घर में प्रवेश वाली सारी रस्में जैसे दिमाग में घूम - घूम कर मुंह चिढ़ा रही है। आशाओं के जो अंकुर हृदय में फूटे थे। उन सबको एक ही झटके में जैसे रौंद दिया मुरदार ने।'' मैं उस समय दोनों को सात्वंना भरे दो शब्द कहने के अलावा कुछ भी करने में असमर्थ था। दोनों को समझा बुझाकर मैं घर वापस आ गया। मेरी नींद पूरी तरह उचट चुकी थी। जो कुछ हुआ अच्छा नहीं हुआ। मन खट्टा हो गया था। औलाद मां बाप के लिए कुछ भी नहीं सोचती। क्या इसी दिन के लिए भगवान से बेटे मांगे जाते है ? इससे तो बै औलाद होना अच्छा, एक ही दर्द रहता है।

कम से कम बाकी तरह के दुखों से तो बच जाता है इंसान।

इस घटना के पांच साल बाद फिर गोलछा जी की सायकल पर ठीक २७ साल पहले वाले बबलू की तरह दूसरा बच्चा देखकर मैं स्वयं को उनके पास जाने से रोक नहीं पाया। करीब से उस बच्चे का चेहरा देखा तो बबलू का ही प्रतिरूप लगा। मैंने गोलछा जी की तरफ प्रश्न वाचक दृष्टि उछालते हुए हाथों के इशारे से पूछने की कोशिश की। कि कौन है यह। समझ तो गया था मैं कि बबलू का ही लड़का होगा। गोलछा जी हंसते हुए बोल पड़े - '' अरे भाई पोता है, मेरा पोता देखो हूबहू बबलू की कार्बन कापी है कि नहीं?''

'' वो तो मैं भी देख रहा हूं पर ये सब है क्या ? फिर इतिहास को दोहराने का इरादा है? मैं कंझाते हुए बोला- ''अरे यार तुम किस मिट्टी के बने हो आखिर, मेरी समझ से तो बाहर है ये सब''

''क्या करूं भाई ! खून तो आखिर अपना ही है ना। अपने खून को शरीर से अलग कैसे किया जा सकता है। घाव से खून बह गया था। तो शरीर कमजोर हो गया था जैसे। जब शरीर को पराया खून चढ़ाने से भी फुर्ती आ जाती है तब ये तो अपना ही खून सिमट कर फिर हमारे पास वापस आया है, फिर इसे कैसे दूर बह जाने दूं ?'' कहते हुए गोलछा जी ने ठंडी आह भरी और बात को जारी रखते हुए कहा - '' जल्दी से जल्दी शॉर्टकट से ऊंचाईयों पर पहुंचने की ललक ने बबलू को इतना नीचे गिरा दिया कि वह भ्रष्ट रास्तों पर भटक गया। वह गलत तरीकों से पैसे कमाने के लालच के भंवर में फंसता चला गया। और कुछ गलत काम कर बैठा। बैंक वालों ने जांच बैठा दी और सभी गड़बड़ियां साबित हो गई। बैंक ने उसे बर्खास्त कर दिया और तीन दिनों के अंदर बंगला खाली करने की नोटिस दी है। वह लव मैरिज वाली मैडम, भ्रष्ट तरीकों से कमाई हुई सारी नगदी और जेवर लेकर फरार हो गई। कल रात को आकर अपने किये की माफी मांगने लगा।

और पैरों पर गिर गया। दिल तो किया के ना कर दूं। और धक्के देकर बाहर निकाल दूं, परन्तु नजर इस बिट्टू पर पड़ी तो सारा गुस्से का लावा ठंडी बर्फ हो गया। एक अजीब सी कशिश इसकी तरफ खींचने लगी। मैं खुद को रोक नहीं पाया। और इसे गोदी में उठाकर चूमने लगा, एक निराले सुख का अनुभव हुआ। जो शब्दों में बयान करने से परे है।

वैसे भी सोहन लाल! यह कहावत तो सच ही है ना

'' मूल से ब्याज मीठा'' ऐसा कह के वे पैडल मार कर आगे बढ़ गए। ■

– किशन माधवानी 'बेकस'

SAVE WATER

पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ

पेड़-पौधे मत करो नष्ट,
साँस लेने में होगा कष्ट

अपना घर

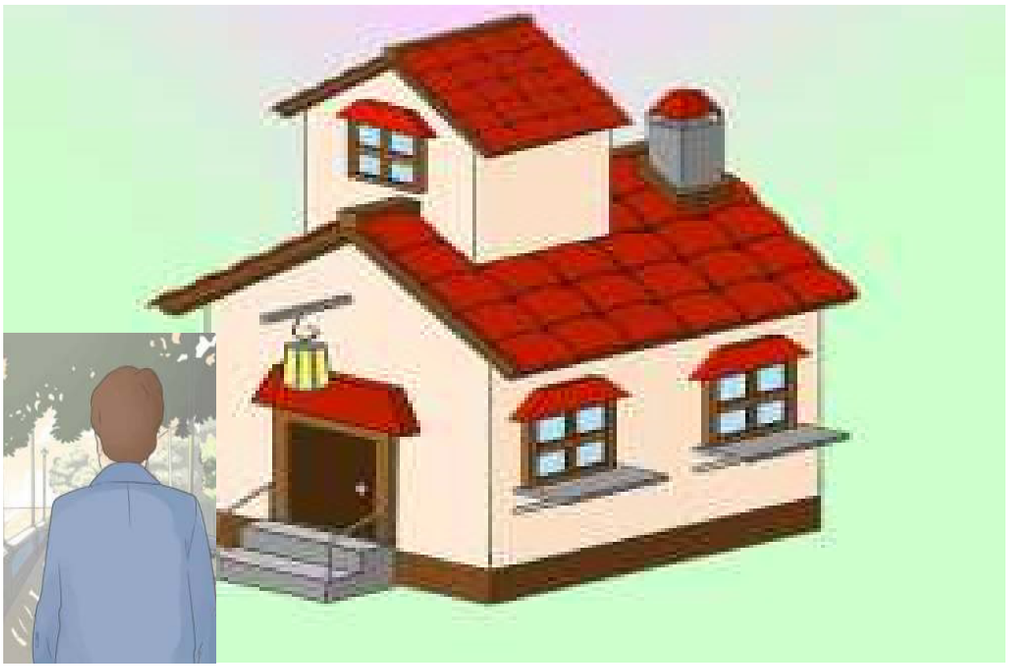

फकीर झा बेटे के साथ रिक्शे से उतरे। उन्होंने चारों तरफ आँखें फैलाकर देखा-पश्चिम में खेत, उत्तर में खेत, दक्षिण और पूर्व में शहर।

'वाह, क्या दिव्य है! तुम्हारा मकान बहुत अच्छी जगह पर है ।'

बूढ़े फकीर झा के मँड से आहलाद भरा स्वर फूंटा।

'हाँ पर बाजार दूर हो जाता है।' बेटा बोला ।

'वही तो अच्छा है। बाजार के शोर-शरांबे से दूर है। शहर का शहर और गाँव का गाँव। एक चीज, दो स्वाद-कुछ ऐसा ही।' मजाकिया लहजे में बोलते हुए फकीर झा खिलखिलाकर हँस पड़े ।

पिता की यह बात बेटे को अच्छी लगी। पिता की खुशी से वह भी खुश हुआ और बोला-

'जी, शहर के शोर-शराबे का असर यहाँ नहीं पड़ता ।'

'बाबा आ गए...बाबा आ गए!' घर से बाहर निकल रहे पोता-पोती चहचहा उठे। सभी ने आकर बाबा का चरण स्पर्श किया। उन दोनों के चेहरों पर अद्भुत आनंद था। बच्चों का यह स्नेह पाकर फकीर झा विभोर हो गए।

सच पूछिए तो उनके आने से पूरा घर महकने लगा था ।

फकीर झा खूब आराम से रहने लगे। उन्हें वहाँ बहुत आदर, मान-सम्मान, बहुत खुशी मिल रही थी। परंतु जो बात उन्हें गाँव में उदास कर देती थी, उसने यहाँ भी पीछा नहीं छोड़ा। उदासी की वजह उनकी पत्नी थीं, जो बेटी के पास दार्जिलिंग में रहती थीं । उनके दामाद डॉक्टर थे। वहाँ काफी संपन्नता थी। वे वहीं बेटी के पास रहते हुए वहाँ के ठाट-बाट, सुख, ऐश्वर्य भोग रही थी। फकीर झा को यह बात अच्छी नहीं लग रही थी। उन्हें यह बात भले ही अच्छी न लगती हो पर बेटी-दामाद की बहुत इच्छा थी कि वे भी वहीं रहते। फकीर झा तो रहेंगे नहीं। बेटी के घर कैसे रहें ? 'पत्नी वहाँ कैसे रह लेती है' यही सोच-सोचकर वे घुलते रहते थे।

उदास मनःस्थिति में फकीर झा को अपने जीवन के खट्टे-मीठे प्रसंग याद आते रहते हैं। बेटी आरती के बचपन के दिन याद आ रहे हैं। इससे पहले पत्नी का अनुराग याद आता है। दोनों बेटों का बचपन याद आता है ।

यादों की इस भीड़ में फकीर झा कहीं गुम हो जाते हैं। फकीर झा की तीन संतानें थीं। दो बेटे और एक बेटी। दोनों बेटों में रंजन सबसे बड़ा, उससे छोटा राकेश और संतानों में सबसे छोटी बेटी आरती थी ।

रंजन के जन्म से एक साल पहले उनकी बहेड़ा हाई स्कूल में विज्ञान शिक्षक के पद पर नौकरी लगी। वह बी.एस-सी. थे । वह नौकरी करने लगे। घर का मोह त्यागकर वहीं मकान किराए पर ले लिया। करते भी

यादों की इस भीड़ में फकीर झा कहीं गुम हो जाते हैं। फकीर झा की तीन संतानें थीं। दो बेटे और एक बेटी। दोनों बेटों में रंजन सबसे बड़ा, उससे छोटा राकेश और संतानों में सबसे छोटी बेटी आरती थी। रंजन के जन्म से एक साल पहले उनकी बहेड़ा हाई स्कूल में विज्ञान शिक्षक के पद पर नौकरी लगी। वह बी.एस-सी. थे। वह नौकरी करने लगे। घर का मोह त्यागकर वहीं मकान किराए पर ले लिया। करते भी क्या? गाँव से रोज आना-जाना संभव नहीं था। वह हर शनिवार गाँव आते थे। सोमवार को प्रातःकाल ड्यूटी पर लौटते थे। पत्नी से अलग रहते हुए पहाड़ जैसा दिन काटकर घर लौटते तो पत्नी की दशा की कल्पना कर वह सिहर उठते। फकीर झा को लगता कि उनकी अनुपस्थिति में पत्नी ठीक से खाना भी नहीं खाती होगी, न सोती होगी। यह सोचकर वह दुःखी हो जाते और वे उनका मन बहलाने में लग जाते। जितने दिन वे घर होते, पत्नी इन्हीं के आस-पास चक्कर काटती। वह हर बार पूछती-'क्या बहेड़े में अकेले आपको अच्छा लगता है?' उन्हें युवा पत्नी के इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं सूझता, पर कुछ कहना जरूर पड़ता था।

क्या? गाँव से रोज आना-जाना संभव नहीं था। वह हर शनिवार गाँव आते थे।

सोमवार को प्रातःकाल ड्यूटी पर लौटते थे। पत्नी से अलग रहते हुए पहाड़ जैसा दिन काटकर घर लौटते तो पत्नी की दशा की कल्पना कर वह सिहर उठते । फकीर झा को लगता कि उनकी अनुपस्थिति में पत्नी ठीक से खाना भी नहीं खाती होगी, न सोती होगी। यह सोचकर वह दुःखी हो जाते और वे उनका मन बहलाने में लग जाते।

जितने दिन वे घर होते, पत्नी इन्हीं के आस-पास चक्कर काटती। वह हर बार पूछती-'क्या बहेड़े में अकेले आपको अच्छा लगता है?' उन्हें युवा पत्नी के इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं सूझता, पर कुछ कहना जरूर पड़ता था ।

एक बार पत्नी ने वही सवाल किया तो उन्होंने पत्नी से प्रतिप्रश्न किया-'बिना तेल दीपक का क्या हाल होगा, कहो तो ?'

पत्नी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया-'यही दशा तो मेरी है।'

'नहीं, मेरी है।' फकीर झा तुरंत बोले थे ।

दोनों में इसी तरह हास-परिहास चलता रहा। फकीर झा का कहना था कि पत्नी की अनुपस्थिति में उनका मन दुःखी रहता है। यही बात उनकी पत्नी बोल ती थी। वह कहती थी कि पति की अनुपस्थिति में उन्हें दिन पहाड़ जैसे लगते हैं । उसी बार तो पत्नी ने थोड़ी ढिठाई से कहा था-

'मुझे अपने साथ क्यों नहीं रखते हैं? अब आपको रखना ही पड़ेगा।'

'माँ ओर चाची यहाँ अकेली कैसे रहेंगी? उन लोगों का गुजर कैसे होगा? क्या कोई अन्य बहू है जो उनकी देखभाल करे? तुम अकेली हो तो कष्ट तो उठाना ही पड़ेगा।' वह उपदेशक की भाषा में यह बात कह गए ।

'क्यों? उन लोगों को भी रखेंगे।' पत्नी ने कहा ।

'बहेड़ा जैसे गाँव में इतना बड़ा मकान कहाँ मिलेगा?' वे पत्नी को समझाने का प्रयास करने लगे।

'हाँ...हाँ.... समझ गई। सारा समय अकेलेपन का दुःख काटना...।' यह कहकर पत्नी एकदम गंभीर हो गई। उनकी आँखों में आँसू आ गए पर वह कुछ बोली नहीं थी ।

उन्होंने मौन तो साध लिया था, पर उस मौन से निकल रही पीड़ा का अनुभव कर फकीर झा व्यग्र हो गए थे। उस व्यग्रता से मुक्ति का अन्य कोई राह मिला तो पत्नी को फुसलाने-मनाने में लग गए थे ।

समय बीतता गया। रंजन और राकेश के बाद आरती का जन्म हुआ। आरती के जन्म के बाद पत्नी ने अकेले रहने के दुःख की चर्चा फिर कभी की हो, उन्हें याद नहीं। इतना ही नहीं, उसके बाद से फकीर झा को ऐसा अनुभव होने लगा जैसे पति-पत्नी के बीच दूरी आ गई हो। उन्हें ऐसा लगा जैसे किसी पेड़ की छाल एकदम से अलग हो जाती है, वैसे ही पत्नी उनसे अलग हो गई है ।

यह अनुभव होते ही उन्होंने इस दूरी को पाटने का प्रयास किया था, पर स्थिति और खराब ही होती गई। दरअसल, उनकी पत्नी अपनी बेटी आरती में इतना रम गई थीं कि उन्हें अब पति की भी वैसी सुध नहीं रही। एक जुड़ाव ने दूसरे जुड़ाव को कमजोर कर दिया ।

दिन-पर-दिन दोनों के बीच का भावनात्मक लगाव कम होता गया। पर उन्होंने संतोष करने के लिए उत्कंठा का एक बीज संजोकर रखा था कि रिटायरमेंट के बाद पति-पत्नी दोनों साथ-साथ रहेंगे। वह उसी संग-साथ की कल्पना कर खुद को बहलाते रहे ।

वे दिन बीत गए। युवा शरीर बूढ़ा हो गया। अब वसंत और शिशिर का उल्लास एक ही पायदान पर खड़ा मिलता। बस, साथ रहने की अभिलाषा। कोई दूसरा साथ न होने की चिंता। दोनों बेटे, रंजन और राकेश अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ बाहर ही रहते थे ।

बेटी आरती. डॉक्टर पति के साथ दार्जिलिंग रहती थी। दोनों बेटे इंजीनियर बने और दामाद डॉक्टर थे। लोग कहते थे-मास्टर साहब बहुत भाग्यवान हैं। यह तो वह भी मानते थे, पर वह किसी बेटे-बेटी के घर नहीं रहना चाहते थे। तिस पर बेटी के घर तो बिल कुल नहीं। रिटायर होने से एक महीने पहले ही फकीर झा ने पत्नी को दार्जिलिंग पत्र लिखा था-

में रिटायर हो रहा हूँ। तुम गाँव आ जाओ !

झा जी रिटायर भी हो गए, पर उनकी पत्नी गाँव नहीं आईं ।

जिस दिन वह रिटायर होकर गाँव आए थे, उस दिन घर पर कहीं कोई नहीं था। चारों तरफ सुनसान-साँय-साँय करता अकेलापन। वह अकेलेपन से डर गए थे ।

पत्नी नहीं आई...' सोचते-सोचते उनका मन खंड-खंड हो गया। एक महीने के बाद फकीर झा को बेटी-दामाद का पत्र आया- आप यहीं चले आइए। हमें भी आप अपनी सेवा का अवसर दें। उन्हें पत्र के अक्षर अच्छे नहीं लगे। पत्नी पर उनका क्रोध बढ़ता गया। वे बड़बड़ा उठे थे-'मैं स्वयं अभी सक्षम हूँ ।'

फकीर झा ने दोनों बेटों को साथ रखकर मैट्रिक तक पढ़ाया था। बेटी हमेशा माँ के पास ही रही और गाँव के स्कूल में पढ़ी। माँ को बेटी के प्रति अजीब-सा अनुराग था। जिस दिन आरती का गौना हुआ और वह ससुराल गई थी, उस दिन उसकी माँ की हाल त ऐसी हो गई थी जैसे फूस की छत पर से उतारी गई कोई लता-सूखी, मुरअझाई-सी। उनकी वह विकल दशा देखकर पति ने प्रस्ताव दिया था-'अब बहेड़ा ही चलो, अब यहाँ अकेली क्यों रहोगी ?'

बूढ़ी पत्नी के मुँह पर अनायास हँसी आ गई-'अच्छा, अब बुढ़ापे में जाएँगे ?'

पत्नी की हँसी ने पति को स्तब्ध कर दिया था। उन्हें उस हँसी में छिपी दारुण व्यथा दिखाई दी। उसने उन्हें विचलित कर दिया। उसके कुछ दिन बाद आरती पति के साथ दार्जिलिंग जाने लगी तो वह अपनी माँ को भी अपने साथ ले गई। पति महोदय चाहकर भी पत्नी से कुछ नहीं कह पाए। बेटी के साथ जाने की उनकी तीव्र इच्छा देखकर वह भी उन्हें रोक नहीं पाए ।

वृद्ध फकीर झा को अब कभी-कभी कांग्रेसी काका याद आते हैं, उनकी बातें याद आती हैं। कांग्रेसी काका अपने उदास क्षणों में बार-बार एक बात कहते थे। वह कहते थे-'मनुष्य का मन पानी की धार है। जहाँ ढलान मिली, उधर ही बहने लगता है, और एक बार तालाब में आ जाने के बाद वापस पैड़े की तरफ नहीं बहता ।'

वह उनके बचपन का दौर था। वे बच्चे थे, मगर बहुत ढीठ थे। काका की बात सुनकर वह कह उठे थे-'क्यों? उलीचकर।' काका बोले थे- 'कितना भी उलीचो, पानी लौटकर तालाब में ही आएगा। कांग्रेसिया काका उँगली उठाकर जवाब दिया करते थे ।

आज उन्हें कांग्रेसिया काका की वे बातें अधिक याद आ रही हैं। उन दिनों वह काका की बातों का मतलब नहीं समझते थे। पर ज्यों-ज्यों उनकी समझ बढ़ने लगी, उन बातों का सही मतलब समझने लगे। अब वे बातें वास्तविक लगती हैं। अब वह उन बातों का अपने जीवन से तुलना करते हैं। उस दिन पत्नी की वह विरक्त हँसी उनके मर्म को छू गई थी। फिर तो उन्हें लगा कि पत्नी का मन सचमुच बेटी की तरफ बह गया है। हालात के यहाँ तक पहुँच जाने के लिए कई बार वे कहीं-न-कहीं खुद को भी जिम्मेदार मानने लगते हैं। वे खुद को अपराधी मानते हैं।

उन्हें अपनी युवावस्था की याद आती है । साथ रहने के लिए पत्नी की जिद और अपनी स्थिति, अपना व्यवहार याद आता है। आज फकीर झा यह सब सोचते हुए उदास हो जाते हैं। रिटायर होने के बाद तीन साल उसी उदासी में बिताए, पर कहीं गए नहीं। इस बार बड़ा बेटा जिद कर पटना ले आया। पटना में भी वे जबसे हैं, उदासी उनका पीछा नहीं छोड़ रही है।

फकीर झा को बड़े बेटे से दो पोते और एक पोती

है। एक पोता दरभंगा मेडिकल कॉलेज में डॉक्टरी पढ़ता है और दूसरा पटना कॉलेज में फर्स्ट इयर में। पोती नवीं कक्षा में है। वह स्वयं सिद्धहस्त विज्ञान-शिक्षक रहे हैं। सेवा-निवृत्ति के तीन साल बाद पढ़ाने का यही मौका मिला। वह खूब उत्साह से पोती को पढ़ाने लगे ।

पोती का नाम सरिता था। जैसा उसका नाम, वैसी उसकी तीव्र बुद्धि। उसकी मेधा बाबा को और उत्साहित करती थी । पढ़ाने के इसी सिलसिले में बाबा का दुलार पोती के नेह में रम गया था। यही बात बाबा की उदासी के बादलों को जैसे चीर रही थी ।

पाँच दिन के बाद फकीर झा के समधी अर्थात रंजन के ससुर आए। समधी के आने से फकीर झा बहुत खुश हुए। उनकी बातचीत से उन्हें पता चला कि समधी जी किसी काम के सिलसिले में पटना आए हैं और अभी तकरीबन पंद्रह दिनों रहेंगे। खैर, बहुत अच्छा ।

उस दिन फकीर झा को गाँव से आए दस दिन हो गए थे और उनके समधी को भी पाँच दिन हो गए थे । फकीर झा बरामदे में बैठे हुए बहू और समधी अर्थात बाप-बेटी दोनों की बातें सुन रहे थे ।

समधी थोड़े ऊँचे स्वर में बोल रहे थे-'मेरी आज्ञा है, समधी को अब कभी यहाँ से मत जाने देना। उनकी जितनी ज्यादा सेवा करोगी उतनी ही प्रसन्नता होगी ।'

'हाँ, वह तो होगी ही। जबसे वे आए हैं तबसे सरिता में पढ़ने की चेतना, प्रेरणा और रुचि बहुत ज्यादा जग गई है।' बेटी बाप से कह रही थी ।

अरे, यह बात तो है। हैं तो वे अद्भुत शिक्षक। बहुत तेजस्वी हैं। अगर गरीबी न होती तो अब तक न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचे होते! बड़े आदमी होते और वे तो हैं भी बड़े आदमी। भाग्यवान भी हैं।' समधी बोले थे।

फकीर झा को वे बातें अच्छी नहीं लगीं। उन्हें ऐसा लगा जैसे समधी जी उनकी प्रशंसा नहीं कर रहे हैं, बल्कि उन पर रहम कर रहे हैं। साथ ही जिस दिन से समधी आए हैं, उसी दिन से उन्हें लग रहा है जैसे अपने बेटे के घर नहीं, बल्कि अपनी बहू के घर आए हैं।

इस घर में उनकी इज्जत होती है फिर भी उन्हें महसूस होता है जैसे वे अपने ही घर में मेहमान हों। पर समधी ? उनकी तो बेटी का घर है। वह अपनी बेटी के घर निस्संकोच आते-जाते हैं। बेटी को अपनी पसंद का खाना बनाने के लिए कहते हैं। साथ ही इनका सम्मान भी कराते हैं। फकीर झा यह महसूस करते हैं कि उनका घर उनका न होकर समधी का घर है।

ऐसे समय में आज उन्हें आरती बेटी याद आती है। वे मन-ही-मन सोचते हैं-'वहाँ वे अपने समधी की तरह रह सकते हैं, उनके मन में यह खयाल आया कि बेटी के घर में वे ज्यादा आराम से रहते। ऐसे किसी की सहानुभूति के पात्र तो न बनते । यह विचार उनके मन में कई बार आता । यह सब सोचते हुए जब वे अपने बारे में सोचते हैं तो उन्हें ऐसे लगता है कि पत्नी पर उनका गुस्सा कम तो हो रहा है, पर खत्म नहीं हो रहा है। वे सोचते हैं उनकी पत्नी भी कैसी है ?

बेटी-दामाद के घर रह रही है। मेरे पास किस चीज की कमी है ?

गाँव में खुद चूल्हा जलाना पड़ेगा। बेटी के घर मेहमान बनी है ।

रिटायर होने के बाद तीन साल तक फकीर झा गाँव में ही रहे । उस दौरान बेटी और दामाद कई बार उन्हें देखने दार्जिलिंग से गाँव आए। उनकी पत्नी भी आती थीं। वे कभी थोड़ी देर उनके पास आकर बैठतीं पर उस बैठने में परायापन था। फकीर झा मन-ही-मन गुस्से से लाल हो जाते थे।

एक बार स्वयं पर नियंत्रण रखते हुए उन्होंने कहा था-'तुम दामाद के घर पर क्यों पड़ी हो ?

हम दोनों एक साथ यहाँ रहकर कितनी शांति से बुढ़ापा काटते !'

पति की बात पर पत्नी ने उत्तर दिया- 'पड़ी क्यों रहूँगी?

अपनी कोख से जन्मी बेटी है । हाँ, आपको कष्ट होता है...। और मेरे मन में भी यह बात आती है कि हम दोनों यहीं साथ रहते। पर कुछ दिन और वहाँ रहने दीजिए ।'

फकीर झा को पत्नी की इस बात से दुःख पहुँचा। वे चुप हो गए। एक वह समय था जब उनकी पत्नी जवान थीं और पति से याचना करती थीं- 'मुझे अपने साथ रखो।' वे असमर्थता व्यक्त करते और पत्नी दुःखी हो जातीं।

पत्नी के दुःख की आँच उन तक पहुँचती, पर उनके पास समस्या का हल नहीं था। आज उन्हें लगता है कि वैसी ही पीड़ा उन्हें जला रही है और उन्हें लगता कि वे उस पीड़ा की गर्मी में और भी रम जाएँ। वे तप्त होने लगते ।

उनकी इच्छा होती थी कि स्वयं को और कष्ट दें। उनकी जिंदगी की गाड़ी पलट गई थी। अपनी गलती पर वे खुद को धिक्कारते, प्रताड़ित करते और यहाँ आकर वे पोती के स्नेह में बँध जाते हैं। उनका व्याकुल मन धीरे-धीरे शांत हो रहा था। उन्हें भी इसका भान हो रहा था।

यही कारण था कि पत्नी के प्रति आक्रोश कम होता जा रहा था।

आज फकीर झा सवेरे ही सरिता को पढ़ाने के बाद बैठे हैं। रविवार है। स्कूल में छुट्टी है। सरकारी दफ्तर बंद हैं। बच्चे घर पर ही हैं। वे दीवार से तकिया लगाकर पीठ टिकाकर सुखद जीवन की कल्पना में भ्रमण कर रहे हैं। बेटा किसी काम से पटना से बाहर है। उनका मन ज्यों-ज्यों पोती के स्नेह में घुलने लगा है, त्यों-त्यों वे सोच रहे हैं-सरिता किस तरह खूब अच्छा पढ़े और अच्छा रिजल्ट लाकर उन्हें दिखाए और वे उस उत्कृष्ट रिजल्ट की खुशी में झूम उठें।

वे कल्पना लोक में तल्लीन थे पर कमरे से आ रहे समधी के स्वर ने उनके कान खड़े कर दिए। समधी अपनी बेटी अर्थात उनकी बहू से कह रहे थे-

'समधी जी को माँगुर मछली बहुत पसंद है। आज उन्हें वही खिलाओ। अभी समय भी क्या हुआ है। मैं ही ला देता हूँ। आज इसका खर्च भी मैं ही करूँगा ।'

उन्होंने समधी की बात सुनी। कई दिन से ऐसी बातें सुनते आ रहे थे। लेकिन आज की इस बात ने पानी में आग लगा दी। वे मन-ही-मन बड़बड़ा उठे-'घर मेरा और हुकुम चलाएँ ये? ये अपने पैसे से मछली लाएँगे। मैं मेहमान और घर के ये आदमी मुझ पर रहम कर रहे हैं। ऐसे व्यवहार कर रहे हैं जैसे मैं इन पर आश्रित हूँ ।

उनके मन में उथल-पुथल मची है। कई विचार आज-जा रहे हैं। चारों तरफ निगाह दौड़ाते हैं। पास में पोता बैठा है। वे उससे कुछ नहीं कहते। पोती सरिता को आवाज देते हैं।

'कुछ कह रहे हैं बाबा?' पोती खुशी से उछलते हुए आकर खड़ी हो जाती है।

'हाँ, अपनी माँ से कहो कि समय देखकर खाना बनाएँ। अभी बहुत गरमी है। अभी पटुआ का साग पेट के लिए एक अच्छी दवा की तरह है ।

माँ से कहो कि आज पटुआ का साग, भात और आलू का भुर्ता बनाएँ, और ये रुपये लो और चौक पर से पटुआ का साग ले आओ।

सरिता बाबा के हाथ से रुपया लेकर खुशी-खुशी घर के भीतर चली गई ।

-शिवशंकर श्रीनिवास

कारीगरी

अपनी भरी जवानी के दिनों से ही मैं उसे जानता था, क्योंकि वह मेरे पापा के जूते बनाया करता था।

अपने बड़े भाई के साथ ही लन्दन के वैस्ट एण्ड की एक गली में उसकी दूकान थी, जो दो दुकानों को मित्रा कर एक कर दी गई थी। आज वह दुकान वहां नहीं है, लेकिन उस जमाने में वह वैस्ट एण्ड की सबसे ज़्यादा फैशनेबुल दुकानों में से एक थी।

उस दूकान की एक खास बात यह थी कि उसमें तड़क भड़क नहीं थी। उसके साइनबोर्ड पर यह नहीं लिखा था कि इंगलैण्ड के राजवंश के लिए जूते यहीं बनते हैं। उसपर सिर्फ लि खा था उसका जर्मन नाम 'गैसलर ब्रदर्स', और सामने खिड़कियों में शो के लिए दस पांच जोड़ी जूते रखे थे।

मुझे याद है कि इन जोड़ियों को देखकर मेरे मन में एक सवाल उठा करता था-आखिर ये इस तरह क्यों रखी हैं, क्या बेकार हैं?

क्योंकि वह हमेशा आर्डर पाने पर ही जूते बनाता था; न कम न ज़्यादा; जितनी जोड़ियों का आर्डर मिलता था, उतनी ही बनाता था और उनमें से कोई भी बच भी सकती थी, यह कल्पना से परे की बात थी, क्योंकि उसका बनाया हुआ जूता पैर में फिट न उतरे, यह असंभव था। तो फिर ये बेकार जूते अलमारी में क्यों रक्खे रहते थे।

और यह भी नहीं हो सकता कि वे किसी दूसरे कारीगर के बनाए हुए हों, क्योंकि वह अपनी दुकान में चमड़े की एक पट्टी भी ऐसी देखना नहीं सहन कर सकता था, जो उसने खुद न बनाई हो।

उसके अतिरिक्त वे जूते निहायत खूबसूरत थे-एक जनाने पंप शू की जोड़ी-उफ कैसी ल ोच थी उसमें!

और वह पेटेन्ट लैदर की बनी हुई जोड़ी ऐसी चमचम करती थी कि देखकर मुंह में पानी भर आता था और भी । एक जोड़ी थी लंबे ब्राउन रायडिंग बूट की जिसकी चमक में कुछ काली सी झलक दिखाई देती थी, जिससे यह मालूम होता था कि यह जूते हालांकि नए थे, पर जैसे सौ बरस से पहने जा रहे हों।

ऐसे जूते वही बना सकता था, जिसके सम्मुख जैसे जूते की आत्मा ही मूर्तिमती होकर खड़ी हो जाती हो-उन जूतों का सौंदर्य और कारीगरी ऐसी संपूर्ण थी कि मानो संसार के समस्त जूतों मात्र की आदर्श कल्पना ही उनमें सजीव सी साकार हो उठी हो।

इस प्रकार की भावनाएं तो सचमुच मेरे मन में बाद को ही उठी थीं, लेकिन शायद १४ वर्ष की उम्र में जब पहले पहल मैं उसकी दूकान पर गया था, तभी से उसकी और उसके भाई की वह शान कुछ कुछ मेरे मन में समा गई थी और तबसे हमेशा आज तक याद रही है; क्योंकि जूते बनाना-ऐसे जूते बनाना जैसे कि वह बनाता था-जैसा तब मुझे बड़ा रहस्यमय और अद्भुत-सा लगता था-वैसा ही आज भी लगता है।

कुछ वर्ष बाद एक दिन की बात है-मेरा जवानी का जिस्म था और भरा हुआ पैर, जिसे दिखाते हुए मैंने उससे कुछ हिचकिचा कर कहा था-'मिस्टर गैसलर, ऐसे सख्त पैर का जूता बनाना बहुत मुश्किल होगा न?'

उसने उत्तर दिया, 'यह सख्त तो नहीं है बाबू?' और यह कहने के साथ ही उसकी खिज़ाब से रंगी हुई दाढ़ी के लाल रंग में से एकाएक मुसकान फूट पड़ी।

उसकी दूकान में कोई ऐसे नहीं घुसता था जैसे कि मामूली तौर से और दूकानों में, 'कि मेहरबानी करके जल्दी दीजिए, मुझे जाना है ' किन्तु वह कुछ ऐसी ही भावना से जैसे कि

आदमी गिरजे में पैर रखता है।

उसकी दूकान में काठ की एक ही कुर्सी पड़ी रहती थी-जिस पर ग्राहक आकर बैठ जाता था और इंतजार करता था, क्योंकि दूकान पर बैठता कोई नहीं था। किंतु शीघ्र ही खंदक-सी अंधेरी, और चमड़े की भीनी भीनी गंध से भरी हुई उस दूकान के ऊपर मचान से वह या उसका बड़ा भाई झांकता हुआ दिखाई पड़ जाता था।

एक भराई हुई-सी आवाज़, लकड़ी के तंग जीने पर सिलीपरों की खर और बस वह आपके सामने बिता कोट पहने, छुछ कमर शुकाए-सा, चपडेः का एपरन बदन पर डाले हुए, जिसको बाहें ऊपर को मुट्ठी हुई हैं, आख मिचमिचाता हुआ मौजूद है। जैसे बह जूतों का ही कोई सपना देखकर उद्य हो, या जैसे उल्लू की तरह दिन का उजाला देखकर चौक उठा हो और विध्न पड़ने से झुंझला गया हो।

और मैं पूछता हूं 'क्या हालचाल है भिस्टर गैसलर? कया मेरे लिए रूसी चमड़े का जूता बना सकोगे?''

बिना एक शब्द बोले वह दूकान के अंदर, जहां से बह आया था, वहीं फिर चला जाता है और मैं वहीं काठ की कुर्सी पर बैठा-बैठा उसके व्यापार की खुशबू सूंघता रहता हूं। कुछ मिनट बाद ही बह लौट आता है अपने हाथों में, जो पतले हैं और जिनमें नीली-नीली नसे उभरी हुई हैं, सुनहरे भूरे रंग के चमड़े का एक दुकड़ा लिए हुए।

इसी टुकड़े पर नजर - गड़ाए गड़ाए वह कहता है-'किटना खूबसूरट है।' उत्तर में मैं कहता हूं-'बेशक !!'

वह फिर बोलता है-'कब चाहटा है दुम ?'

मैं कहता हूं-'ओह, जब तुम असानी से दे सको।'

और वह जवाब देता है-'अगले पखबारे में ।' कितु अगर वह न होकर उसका बड़ा भाई हुआ, तो कहता-'हम भाई से पूछ कर बटाएगा ।' तब मैं उठकर चल दूता हूं-'अच्छा, धन्यवाद! गुड मार्निंग।' 'गुड मार्निंग'' वह उत्तर देता है, किंतु अपने हाथ में लिए चमड़े को बराबर एकटक देखता ही रहता है।

और जैसे ही मैं दरवाज़े की तरफ चल देता हूं कि वह फिर अपने सिलीपरों की खटपट-खटपट करता हुआ लकड़ी के तंग जीने से चढ़कर ऊपर अपने जूतों के स्वर्ग में पहुंच जाता है।

लेकिन अगर कोई नए फैशन का जूता हुआ, जैसा कि उसने अभी तक नही बनाया है, तब वह जरूर कुछ तकुल्लुफ और कायदा बर्तता था-मेरे . पैर से जूता खुलवा कर, जो उसके ही हाथ का बनाया हुआ होता, वह अपने ही हाथों में ले लेता और उसे वह एक साथ ही स्नेह और समालोचना भरी बड़ी ममता की दृष्टि से निहारने लगता था, जैसे वह उसके उस सौन्दर्य की कल्पना कर रहा हो, जो इसे बनाते वक़्त उसने इसमें भर दिया था, और साथ ही इस पर भी रोष और दुःख प्रकट कर रहा हो कि इसके पहनने वाले को जूता पहनने की तमीज नहीं है, और उसने उसकी कारीगरी की बिलकुल रेड़ मार दी है।'

फिर पतले काग़ज़ के एक टुकड़े पर वह मेरा पैर रखवाता और तीन या चार बार अपनी घिसी-घिसाई पेन्सिल से उसे उतारता । जब उसकी कांपती हुई उंगलियां मेरे पंजे को छूकर निकलती, तो मुझे ऐसा लगता था जैसे वह मेरी ठीक-ठीक आवश्यकता के अंतर तक को टटटोल लेना चाहती है।

मैं वह दिन कभी नहीं भूलूंगा जब मैंने उससे यह कहने का अवसर पाया था-'जानते हो मि. गैसलर, वह जूता जो तुमने टहलने के लि ए पिछली बार बना कर दिया था, सो चटख गया।

यह सुनकर वह मेरी तरफ कुछ देर तक अवाक देखता रह गया और कोई उत्तर नहीं दिया। जैसे वह मुझसे कह रहा हो, 'यह हो ही नहीं सकता, अपनी शिकायत वापस लो-या फिर बात ठीक-ठीक बतलाओ।'

कुछ देर बाद उसने उत्तर दिया था-'चटखना टो नहीं चाहिए था।' 'लेकिन फिर भी चटख गया।'

'बिना अच्छी टरह पहने टुमने उसको पानी में भिगो डिया होगा।' 'नहीं तो, यह बात तो नहीं हुई।'

यह सुनकर उसने अपनी पलकें नीची कर लीं, जैसे वह सोच रहा हो 'कौन से जूटे थे वे?'

किंतु मुझे फिर बड़ा अफ़सोस हुआ कि मैंने व्यर्थ ही यह सब कह कर इस बेचारे का दिल दुखा दिया।

'टो उनको वापस कर डो', वह बोला, 'हम फिर डेखेगा।'

जब अपने जूतों के चटख जाने से मेरा ही दिल पसीज उठा, तब मैं यह अच्छी तरह अनुमान कर सका कि मि. गैसलर को जिसने कि, उसे इतने अरमानों से बनाया है, कितना दुःख हुआ होगा और वह उसके विषय में जानने के लिये कितना व्यग्र होगा।

'कुछ जूटें'' उसने कहा,-'पैंडा ही खराब होटे हैं। अगर दुम्हारा जूटा हमारे से ठीक नहीं हो सकेगा, टो हम उसका सब डाम वापस कर डेगा।'

एक बार की बात है कि मुझे एक नया जूता जल्दी ही चाहिए था, इसलिए मैंने एक बड़ी दूकान में जाकर खरीद लिया ।

एक दिन यों ही अनजाने में उसे पहन कर मि. गैसलर की दूकान में चला गया। उसने मेरे जूतों का आर्डर तो ले लिया, लेकिन कोई चमड़ा नहीं दिखाया। उसकी आंखें मेरे फैक्टरी के बने हुए नए जूते पर गड़ी हुई थी। आखिर उससे रहा न गया; कहने लगा-'यह जूटा टो हमने नहीं बनाया है।'

उसके स्वर में क्रोध नहीं था, दुःख नहीं था, घृणा नहीं था, रोष भी नहीं था, फिर भी उसमें कोई ऐसी तीव्र मूक प्रतारणा अवश्य थी, जिससे मैं सन्न हो उठा!

इसके बाद उसने मेरे बाएं पैर के जूते की एक जगह, जो फैशन की खा़तिर कुछ खूबसूरत बनी हुई थी, अपनी उंगली से दबा दी और कहा- 'टुमको यहां काटता है।.....यह बड़ा-बड़ा डूकान अपने इज्जट का भी ख्याल नहीं करटा। बिल्कुल रही।'

इसके बाद और भी बहुत सी कड़वी-कड़वी बातें वह कह गया। जैसे उसके अंदर की कोई घुटन बांध तोड़कर निकल चली हो। आज पहली बार मैंने उसके मुंह से जूतों के व्यापारी की खऱाब हालत और मुसीबतों के बारे में कुछ सुना था।

'वह बड़ा-बड़ा कंपनी विज्ञापन से पैंडा करता है, अपने माल का अच्छाई से नहीं-

Jai Santoshi Maa

Construction Electricians

- employed by electrical contractors or construction companies.
- maintenance departments of commercial buildings and other establishments.
- may be self-employed

Industrial Electricians

- heavy industry
- maintenance departments of factories, mines, mills, oil and gas plants, shipyards, and other industrial establishments Power System Electricians
- employed by electric power generation and transmission companiesa

Electrician

Om Shanti Apartment, Shop No. 7 , Ulhasnagar-4
Phone: 8862090310, 9096892562

उसे देखकर मनको बड़ी वेदना होती थी, इसलिए मैं जल्दी से वहां से चल दिया। एक दिन शाम को जब नए जूतों की पार्सल आ गई, तो मैंने रूसी चमड़े वाले जूते उतार दिए। मैंने पारसल खोला और चार जोड़े निकाल कर एक पंक्ति में रख दिए। फिर एक-एक करके मैंने उन्हें पहनना शुरू किया। इसमें कोई शक नहीं था कि इतने अच्छे चमड़े के इतने बढ़िया जूते उसने कभी नहीं बनाए थे। एक जोड़े में मैंने उसका बिल रखा हुआ पाया। जूतों की कुल कीमत उतनी ही थी, जितनी वह मामूली तौर से हमेशा लिया करता था, परन्तु उसने कुल कीमत फौरन ही मांगी थी। यह जानकर मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ, क्योंकि पहले तो वह तीसरे महीने से पहले कभी बिल नहीं भेजता था। मैं तत्काल नीचे उतर कर गया और एक चेक काटकर तुरन्त ही अपने हाथ से ही उसे लेटरबाक्स में डाल आया। एक सप्ताह बाद, जब मैं उसकी दुकानवाली गली में होकर जा रहा था, तो मैंने सोचा कि चलो मिस्टर गैसलर से कह दूं कि इस बार तुम्हारे जूते सबसे बढ़िया रहे। लेकिन जब मैं उसकी दूकान के सामने पहुंचा, तो मैंने देखा कि वहां से उसके नाम का साइनबोर्ड ग़ायब था, अपनी मेहनत से नहीं! इसी का नटीजा है कि अब हमारे पास काम बिल्कुल नहीं है और दिन-दिन कम होटा जाटा है...।'

और आज उसके झुर्रियोंदार चेहरे पर मैंने ऐसी-ऐसी भावनाएं देखीं जिन पर पहले कभी ध्यान नहीं दिया था-विकट संघर्ष और उसकी कडुवाहट, जिनमें वह वर्षों से पिस-पिस कर मर-पिच कर काम कर रहा था और आज ही मुझे उसकी लाल दाढ़ी में सफेद बालों के गुच्छे दिखाई पड़े, जिनमें उसकी सारी व्यथा क्रंदन कर उठी।

जैसे भी हो सका मैंने उसे यह समझाने की कोशिश की कि किन- किन मजबूरियों की वजह से मैंने वे जूते खरीद लिए थे; पर उसकी मुद्रा और स्वर मेरे दिल पर अपना ऐसा असर कर गए कि थोड़ी ही देर में मैंने उसे कई जूतों का आर्डर दे दिया।

वे जोड़े तैयार हो गए। और निमिसिस' भी हार गई उनसे । घिसाई ने भी उनसे हार मान ली। उफ, पहले जूतों से भी ज़्यादा वे चले और दो बरस तक, सच ही, फिर जूते बनवाने के लिए उसके पास जाना नहीं पड़ा।

लेकिन एक दिन जब गया भी, तो देखा कि उसकी दो दूकानों में एक पर किसी दूसरे नाम का साइनबोर्ड लगा था-हां, वह भी जूतेवाला था और राज-कूटुंब के लिए जूते बनाता था-और वहां बाहरखाली खिड़की में अपनी शान की निराली जूतों की वे तीन चार जोड़ियां भी नहीं थी। दूकान अकेली रह गई थी, इसलिए और भी अन्धेरी, छोटी और खाई की तरह मालूम पड़ रही थी।

चमड़े की गन्ध भी घनीभूत हो गई थी।

पर वह काठ की कुर्सी अब भी वैसे ही पड़ी थी। मैं जाकर उस पर बैठ गया, लेकिन जितनी देर लगा नहीं करती थी, आज उतनी देर बाद ऊपर से एक शक्ल ने झांका और फिर अपने उन्हीं सिलीपरों से काठ के तंग जीने पर 'खटपट-खटपट' करता हुआ आखरि मेरे सामने वह आ ही खड़ा हुआ और जंग लगी कमानी में से मुझे घूरते हुए पूछा-''मिस्टर.... हैं न?'

'हां हां, मैं ही हूं.' मैंने हिचकिचा कर कहा, 'पर मिस्टर गैसलर, आपके जूते तो तोड़े नहीं टूटते! देखो न इसकी अभी सूरत भी नहीं बिगड़ी है.' कहकर मैंने अपना पैर आगे बढ़ा दिया। उसने मेरे जूतों पर एक नजर डाली ।

'हां! उसने कहा-'पर लोग टो अच्छा जूटा नहीं चाहटा है।'

उसकी कड़ी नजर और शिकायतों से बचने के लिए मैंने जल्दी से पूछा-'लेकिन तुमने अपनी दूकान का यह क्या हाल कर डाला है?'

उसने शांति से उत्तर दिया--'बहुट खर्च होटा था। क्यों टुमको जूटा चाहिए?'

मैंने तत्काल ही तीन जोड़ी का आर्डर दे दिया, हालांकि मुझे जरूरत सिर्फ दो ही जोड़ी की थी और बस जल्दी से वहां से चल दिया। लेकिन मैं ठीक नहीं कह सकता कि उसके मन में यह कैसे धारणा पैदा हो गई कि मेरे हृदय में उसके प्रति, या स्वयं उसके प्रति इतनी नहीं जितनी कि उसके जूतों के आदर्श के प्रति कोई विरोध भावना है। लेकिन मैं समझता हूं कि कोई भी इस प्रकार सोचना नहीं चाहता होगा, क्योंकि जब मैं कुछ दिनों पहले एक बार गया था, तब मुझे याद है कि मैंने सोचा था, ''उंह! होगा भी; पर मैं उस बेचारे को कभी नहीं छोड़ सकता-ऐसे तो सब चलता ही है। हो सकता है कि वह उसका बड़ा भाई रहा हो।'

पर, मैं जानता था कि उसके बड़े भाई में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह मेरी तरफ चुप रहकर भी आंखें निकाल सकता।

इसलिए यह देखकर मुझे कुछ सन्तोष-सा हुआ था कि दूकान में उसका बड़ा भाई ही था, जो फिर एक चमड़े का टुकड़ा हाथ में हिलाता हुआ आया।

'कहो मिस्टर गैसलर अच्छे तो हो?' मैंने पूछा।

'हां, अच्छा टो हूं' उसने उत्तर दिया 'पर हमारा बड़ा भाई मर गया।!

और तब मैंने समझा कि अरे! यह तो वह नहीं है, किंतु अब कितना। बूढ़ा और ढला हुआ लगता है यह भी! पर इससे पहले मैंने कभी उसे अपने भाई के बारे में कुछ कहते नहीं सुना था।

यह सुनकर मुझे बड़ा अचंभा हुआ और धक्का-सा लगा। मैंने धीरे... से कहा 'उफ! बड़े दुख की बात है।'

'हां' उसने उत्तर दिया 'वह बहुट अच्छा आडमी ठा, बहुट बढ़िया जूटा बनाटा ठा। पर मर गया ।'

और उसने अपनी बीच खोपड़ी पर हाथ

रख लिया, जहां से उसके बाल बहुत कुछ उड़ चुके थे, ठीक वैसे ही जैसे उसके भाई के उड़ गए थे। उसके इस संकेत से मुझे ऐसा लगा जैसे वह अपने बड़े भाई की मृत्यु का कारण बता रहा हो।

'वह दुसरी दुकान के खोने का सडमा नहीं सह सका। टुमको जूटा चाहिए', कहकर उसेन अपने हाथ वाला चमड़े का टुकड़ा मेरी तरफ बढ़ाकर कहा 'किटना खूबशूरट है।'

बिना कुछ कहे सुने मैंने कई जूतों का आर्डर दे दिया। बहुत दिनों बाद वे बनकर आए, लेकिन मेरे इतने अच्छे जूते उसने कभी नहीं बनाए थे। वे फाड़े नहीं फट सकते थे, तोड़े नहीं टूट सकते थे। कुछ दिनों बाद मैं बाहर चला गया।

एक वर्ष से अधिक बाद मैं लन्दन लौटकर आया। और सबसे पहली दुकान जिसपर मैं गया था, वह मेरे पुराने दोस्त गैसलर की ही थी। मैं एक साठ वर्ष के बूढ़े को छोड़कर गया था, किंतु लौटकर ७५ वर्ष के बूढ़े को देखा : विदीर्ण, क्लांत और प्रकंपित। इस बार तो उसने मुझे सचमुच नहीं पहचाना ।

मैंने दुखित होकर कहा 'मिस्टर गैसलर, ओह! तुम्हारे वे जूते तो बहुत ही बढ़िया निकले! देखो न, मैं लगातार यही जूता बाहर सफ़र में पहने रहा और अभी तो देखो यह आधे भी नहीं घिसे हैं, है न?'

काफी देर तक वह मेरे जूते की तरफ टकटकी लगाए देखता रहा-वही जूते तो थे जो रूसी चमड़े के बने हुए थे-और उसकी मुद्रा स्थिर और गंभीर हो गई।

उसने मेरे टखने के पास जूते पर हाथ रखकर कहा-

'क्या यहां पर यह फिट है? मुझे याद है कि इन्हें बनाने पर हमको बहुट मुसीबट पड़ा ठा।'

मैंने विश्वास दिलाया 'नहीं नहीं, बिलकुल फिट है।'

'तुम्हें जूटण चाहिए? हम बहुट जलडी बना डेगा, खाली हाथ बैठा है-कुछ काम नहीं है।'

मैंने कहा-'हां हां, मुझे सब तरह के जोड़े चाहिएं।'

'हम नई टरह का जूटा बना डेगा। टुम्हारा पैर बड़ा है न', कहकर उसने बड़े धीरे-धीरे मेरे पैर का नाप काग़ज़ पर पेन्सिल से खींचा, और इस बीच में सिर्फ एक बार मेरी तरफ मुंह उठाकर कहा-

'क्या हमने टुमको बटलाया कि हमारा भाई मर गया?' उसका शरीर हड्डियों का कंकाल मात्र रह गया था। उसे देखकर मनको बड़ी वेदना होती थी, इसलिए मैं जल्दी से वहां से चल दिया।

एक दिन शाम को जब नए जूतों की पार्सल आ गई, तो मैंने रूसी चमड़े वाले जूते उतार दिए। मैंने पारसल खोला और चार जोड़े निकाल कर एक पंक्ति में रख दिए।

फिर एक-एक करके मैंने उन्हें पहनना शुरू किया। इसमें कोई शक नहीं था कि इतने अच्छे चमड़े के इतने बढ़िया जूते उसने कभी नहीं बनाए थे।

एक जोड़े में मैंने उसका बिल रखा हुआ पाया। जूतों की कुल कीमत उतनी ही थी, जितनी वह मामूली तौर से हमेशा लिया करता था, परन्तु उसने कुल कीमत फौरन ही मांगी थी। यह जानकर मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ, क्योंकि पहले तो वह तीसरे महीने से पहले कभी बिल नहीं भेजता था। मैं तत्काल नीचे उतर कर गया और एक चेक काटकर तुरन्त ही अपने हाथ से ही उसे लेटरबाक्स में डाल आया।

एक सप्ताह बाद, जब मैं उसकी दुकानवाली गली में होकर जा रहा था, तो मैंने सोचा कि चलो मिस्टर गैसलर से कह दूं कि इस बार तुम्हारे जूते सबसे बढ़िया रहे। लेकिन जब मैं उसकी दूकान के सामने पहुंचा, तो मैंने देखा कि वहां से उसके नाम का साइनबोर्ड ग़ायब था, लेकिन खिड़की में अब भी वही जनानी जोड़ी, पेटेन्ट लैदर के पम्पशू और काले राइडिंग बूट जैसे के तैसे रखे थे। मैं एकदम चिन्तित हो उठा और अन्दर पहुंचा। वे दो छोटी दुकानें मिलकर फिर एक बड़ी दुकान हो गई थी; उसमें एक नवयुवक अंग्रेज मौजूद था।

'मिस्टर गैसलर हैं?' मैंने पूछा। उसने मेरी ओर देखा। उसकी दृष्टि में कुछ विचित्र-सी विनय और शीलता थी।

'नहीं जनाब' उसने जवाब दिया, 'लेकिन मैं आपकी खिदमत में हाजिर हूं, जो हुकुम हो करें। यह दुकान अब हमने पूरी ले ली है। आपने हमारा नाम पहले बराबरवाली दुकान पर देखा ही होगा। हम कुछ बहुत बड़े-बड़े रईस आदमियों के लिए जूते बनाते हैं।'

'हां हां ठीक है' मैंने कहा 'पर मिस्टर गैसलर कहां हैं?'

ओह' उसने जवाब दिया 'वह तो मर गए।'

'मर गए! लेकिन अभी पिछले बुध को ही तो उन्होंने मेरे पास ये नए जूते बनाकर भेजे हैं।'

'हाय!' उसने कहा 'बडी दर्दनाक कहानी है! बेचारे भूखों मर गए !?

'हे भगवान!'

'डॉक्टर कहते थे कि वे घुल-घुल कर मरे। और आप देखिये वे तब भी काम करते थे।

और दुकान चलाया करते थे! और काम का यह हाल - था कि सारा काम अकेले ही करते थे-किसी को जूते में हाथ नहीं लगाने देते थे। एक आर्डर पर ही इतना वक़्त लगा देते थे कि बेचारा ग्राहक ऊब जाता था। इसी तरह उनके सब ग्राहक टूट गए और फिर बैठे-बैठे वह दिन-रात काम करते रहते थे-मैं कह सकता हूं कि सारे लन्दन शहर में उनसे अच्छा जूता कोई नहीं बनाता था और न कभी बना सकता है। लेकिन कंपटीशन को तो देखो कितना जबरदस्त है। पर वह अपना माल कभी एडवर्टाइज नहीं करते थे; सबसे बढ़िया चमड़ा लगाते थे और सारा काम अपने ही हाथ से करते थे और उसी का यह नतीजा है। इससे और ज़्यादा कया उम्मीद की जा सकती है?'

'लेकिन भूखों मर-'

'यह बात कुछ शायरी हो सकती है-जैसी कि कहावत है, लेकिन मैं खुद भी जानता हूं कि वह आखिर दम तक अपने जूतों से ही चिपटे रहे। मैं उन्हें दिन रात काम करते देखा करता था। मैंने उन्हें कभी वक़्त से खाना खाते नहीं देखा; सोते नहीं देखा, कभी एक छदाम उनके घर में नहीं रही। रात में तापने के लिए आग भी नहीं नसीब होती थी उन्हें! इतने वर्षों तक वे कैसे जिंदा रहे, मुझे तो यही ताज्जुब है। पर जनाब वह आदमी एक ही था।

उसकी सानी का जूता बनानेवाला दूसरा कारीगर लन्दन में नहीं है!'

'हां,' मैंने भारी मन से कहा 'वह बहुत बढ़िया जूते बनाते थे।'

इतना ही कहकर मैं फौरन मुड़ा और दुकान से बाहर चला गया, क्योंकि मैं उस नौजवान को अपनी आंखों के आंसू दिखाना नहीं चाहता था। - जॉन गॉल्जवर्दी

आशापुरा ज्वैलर्स

सोने-चांदी के गहनों के व्यापारी

शिवाजी रोड, शहाड़ फाटक, उल्हासनहर-४
फोनः ०२५१-२७०९९६२

स्पेशल ऑफर के साथ

क़ाजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

Adviteeyamina
Akshayadritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall
Kukatpally • Patny Centre
Gachibowli • Kothapet

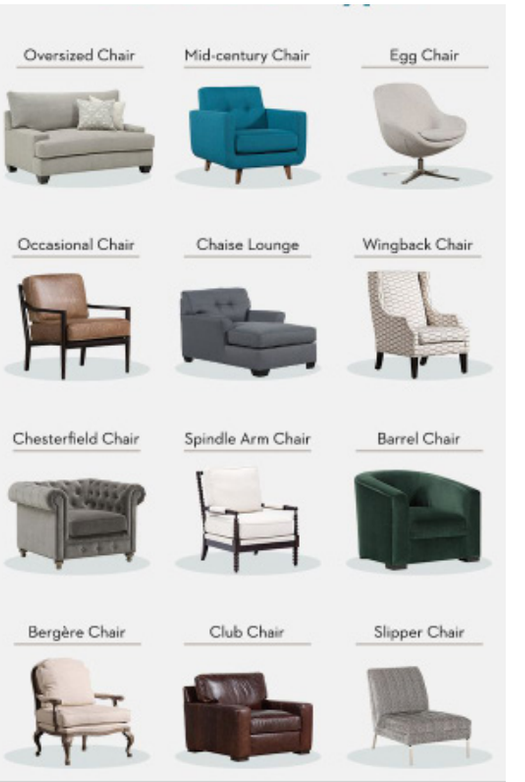

New lifestyle Furniture

KIRTI NAGAR: Timber Market-9717005829; **FARIDABAD:** Crown Interiorz Mall-9910869944; **GHAZIABAD:** Shipra Mall-9717198235;

फ्रेंचबीन की खेती...

फ्रेंचबीन या हरी बीन्स में कई पोषक तत्व पाए जाते हैं जो सेहत के लिए लाभकारी होते हैं। इसमें मुख्य रूप से पानी, प्रोटीन, कुछ मात्रा में वसा तथा कैल्सियम, फास्फोरस, आयरन, कैरोटीन, थायमीन, राइबोफ्लेविन, नियासीन, विटामिन-सी आदि तरह के मिनरल और विटामिन मौजूद होते हैं। बीन्स विटामिन बी२ का मुख्य स्रोत हैं। बीन्स सोल्युबल फाइबर का अच्छा स्रोत होते हैं। इसका सेवन हृदय रोगियों के लिए बहुत ही लाभकारी बताया गया हैं। ये शरीर में बढ़े कोलेस्टेरोल की मात्रा को कम करता है जिससे हृदय रोग का खतरा कम होता है। इसके अलावा इसके सेवन से रक्चाप नहीं बढ़ता है। इसलिए ये हृदय रोगियों के लिए काफी फायदेमंद माना गया है। यदि सही तरीके से फ्रेंचबीन खेती की जाए तो किसान इसकी खेती से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। फ्रेंचबीन की खेती करते समय यदि कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा जाए तो इसकी बेहतर पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

फ्रेंचबीन की खेती सर्दी व गर्मी दोनों मौसम में की जा सकती है। इसकी खेती के लिए हल्की गर्म जलवायु अच्छी रहती है। इसके लिए खेती के लिए अधिक ठंडी और अधिक गर्म जलवायु अच्छी नहीं

बीन्स विटामिन बी२ का मुख्य स्रोत हैं। बीन्स सोल्युबल फाइबर का अच्छा स्रोत होते हैं। इसका सेवन हृदय रोगियों के लिए बहुत ही लाभकारी बताया गया हैं। ये शरीर में बढ़े कोलेस्टेरोल की मात्रा को कम करता है जिससे हृदय रोग का खतरा कम होता है। इसके अलावा इसके सेवन से रक्चाप नहीं बढ़ता है। इसलिए ये हृदय रोगियों के लिए काफी फायदेमंद माना गया है। यदि सही तरीके से फ्रेंचबीन खेती की जाए तो किसान इसकी खेती से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। फ्रेंचबीन की खेती करते समय यदि कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा जाए तो इसकी बेहतर पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

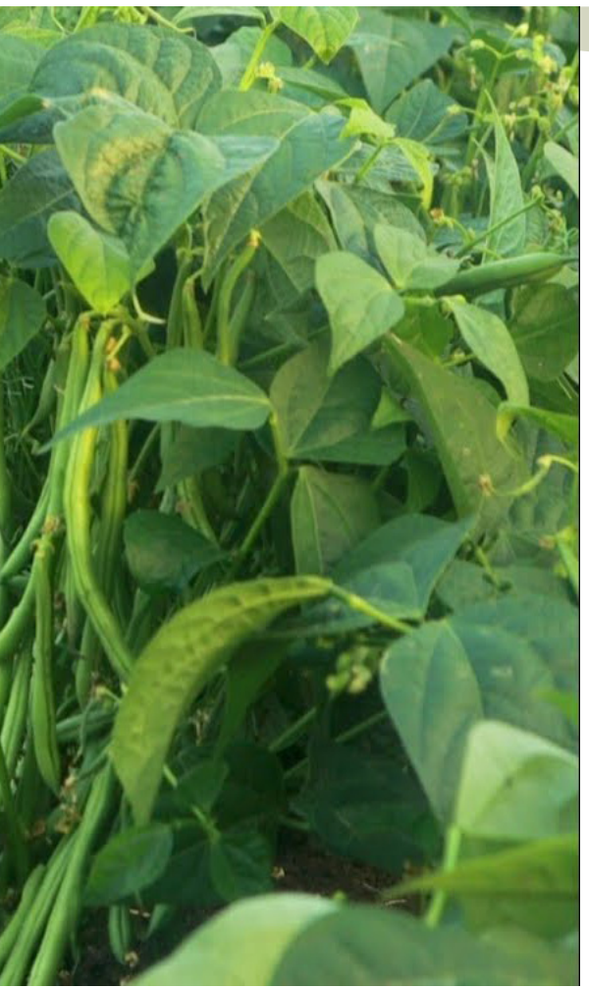

रहती है। इसकी खेती हमेशा अनुकूल मौसम में की जानी चाहिए। यदि मिट्टी की बात की जाए तो इसकी खेती के लिए बलुई बुमट व बुमट मिट्टी अच्छी रहती है। जबकि भारी व अम्लीय भूमि वाली मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं रहती है।

फ्रेंचबीन की खेती के लिए कई किस्में आती है जो अच्छी हैं। इसमें दो तरह की किस्में आती है जिसमें पहली झाड़ीदार किस्में होती हैं जिनमें जाइंट स्ट्रींगलेस, कंटेंडर, पेसा पार्वती, अक्र कोमल, पंत अनुपमा तथा प्रीमियर, वी.एल. बोनी-१ आदि प्रमुख किस्में है। वहीं दूसरी बेलदार किस्में होती है जिनमें केंटुकी वंडर, पूसा हिमलता व एक.वी.एन.-१ अच्छी किस्में हैं।

उत्तर भारत में इसकी खेती अक्टूबर व फरवरी में की जाती है। वहीं हल्की ठंड वाले स्थानों पर इसकी खेती नवंबर में की जाती है। इसके अलावा पहाड़ी क्षेत्र में इसकी खेती फरवरी, मार्च व जून माह में की जा सकती है। बुवाई करते इस बात का ध्यान रखें की बुवाई हमेशा कतार में करें ताकि निराई-गुडाई के काम में आसानी रहे। बुवाई के समय पंक्ति से पंक्ति की दूरी ४५-६० सेमी. और बीज से बीज की दूरी १० सेमी. रखनी चाहिए। वहीं बेलदार किस्में लगा रहे हैं तो पंक्ति से पंक्ति की दूरी १०० सेमी रखना अच्छा रहता है। इसके लिए पौधों को सहारा देने का प्रबंध भी करना जरूरी है। इसके लिए लकड़ी, बांस या लोहे की छड़ को सहारे के लिए प्रयोग किया जा सकता है। बीज के अंकुरण के लिए भूमि में पर्याप्त मात्रा में नमी होनी चाहिए।

फ्रेंचबीन के बीजों की बुवाई से पहले बीज का राइजोबियम नामक जीवाणु से उपचार कर लें ताकि जमीन जनित रोग से फसल सुरक्षित रहे। इसके अलावा इसकी खेती के लिए २० कि.ग्रा. नत्रजन, ८० कि.ग्रा. फास्फोरस और ५० कि.ग्रा. पोटाश की मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की तैयारी के दौरान खेत की अंतिम जुताई समय पर मिला दें। इसके अलावा २०-२५ टन गोबर या कम्पोस्ट खाद को खेत की तैयारी के समय मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए। वहीं २० कि.ग्रा. नत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से फसल में फूल आने के समय प्रयोग करें।

फ्रेंचबीन की खेती कब करें सिंचाई

फ्रेंचबीन की बुवाई के समय खेत में पर्याप्त मात्रा में नमी होनी जरूरी है। इससे बीजों का अंकुरण अच्छा होता है। इसके बाद इसकी हर सात से दस दिन के अंतराल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए।

फ्रेंचबीन की खेती में कैसे करें खरपतवार पर नियंत्रण

फ्रेंचबीन की खेती में भी खरपतवारों का प्रकोप बना रहता है। खरपतवार वे अवांछिनीय पौधे होते हैं जो इसके आसपास उग जाते हैं और इसके विकास में बाधा पहुंचाकर फसल को हानि पहुंचाते हैं। ऐसे अवांछिनीय पौधों को हटाने के लिए दो से तीन बार निराई व गुडाई करके खरपवार को हटा देना चाहिए। यहां बता दें कि एक बार पौधे को सहारा देने के लिए मिट्टी चढ़ाना जरूरी होता है। यदि खरतवार का प्रकोप ज्यादा हो तो इसके लिए रासायनिक उपाय भी किए जा सकते हैं। इसके लिए ३ लीटर स्टाम्प का प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के बाद दो दिन के अंदर घोल बनाकर छिड़काव करने से खरपवारों पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

फ्रेंचबीन की कटाई फूल आने के दो से तीन सप्ताह के बाद शुरू कर दी जाती है। इसकी फलियों की तुड़ाई नियमित रूप से जब फलियां नर्म व कच्ची अवस्था में हो तब उसकी तुड़ाई करनी चाहिए।

फ्रेंचबीन की पैदावार की बात करें तो उचित वैज्ञानिक तकनीक का इस्तेमाल करके इसकी हरी

फली की उपज ७५-१०० क्विंटल/ हेक्टेयर तक प्राप्त की जा सकती है। फ्रेंचबीन यानि राजमा का भाव बाजार में सामान्यतः १२० से लेकर १५० रुपए प्रति किलोग्राम रहता है। मंडियों में इसके भावों में अंतर हो सकता है। क्योंकि अलग-अलग मंडियों और बाजार में इसके भावों में उतार-चढ़ाव होता रहता है।

फ्रेंच बीन्स की खेती के संबंध में खास बातें

फ्रेंचबीन की जातियों में अर्का कोमल, पंत अनुपमा, पंतबीन २ आदि किस्में रबी मौसम के लिए उपयुक्त हैं।

वास्तव में यह फलीदार फसल है फिर भी इसको नत्रजन की आवश्यकता होती है। इसकी खेती में २६० किलो यूरिया, ३७५ किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा ३३ किलो पोटाश/ हेक्टेयर का उपयोग करना चाहिए।

पंक्ति से पंक्ति की दूरी ३५ से ४० से.मी. तथा पौध से पौध १० से.मी. की दूरी रखनी चाहिए। इसके बीजों को ५-७ से .मी. गहराई पर बोना चाहिए। इसकी फली ५० से ६० दिनों में उपलब्ध हो जाती है।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।

रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।

ज्यादा लंबी रचना न भेजें।

सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।

प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें ; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।

आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।

रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।

किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।

रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532